ISSN 0976-528X

सामाजिक एवं मानविकी विषय के अन्तर्गत प्रकाशित

त्रैमासिक राष्ट्रीय शोध जर्नल मार्च 2011

महामहिम (कुलाधिपति) राज्यपाल श्री वी. एल. जोशी जी द्वारा विमोचित

सिद्धांत

DOCTRINE

संपादक

डॉ. विनोद मोहन मिश्रा
डॉ. राम तिवारी

Published by :

Academic Research Society (U.P.)
एकेडेमिक रिसर्च सोसाइटी (उ० प्र०)

एकेडेमिक रिसर्च सोसाइटी परिवार

की ओर से

प्रिय सुधीजन पाठकों

को

भारतीय नववर्ष

विक्रमी संवत् २०६८ की

हार्दिक शुभकामनाएँ

फिलर

संपादकीय ....

आधुनिकता का आधार आयुधों के विकास पर निर्भर है। मानव सभ्यता ने अपने विकास क्रम को जब शुरू किया तो कठिनाइयों से होकर गुजरना पड़ा। इन्हीं कठिनाइयों को आसान करने के लिए निरन्तर वह आयुधों के विकास पर केन्द्रित हो गया। पत्थर की रगड़ से अग्नि एवं चाक से पहिया बनाकर अपने विकासक्रम को शुरू करने वाले मानव ने एक ऐसी व्यवस्था को जन्म दिया जिसने मानव के विकास एवं विनाश दोनों को साथ–साथ विकसित किया है। मानव जितना आयुधों पर निर्भर होकर आधुनिकता की ओर बढ़ा, विकास क्रम मानव की जीवन शैली को कठिनता से दूर मृत्यु के अधिक निकट ले आया है। नाभिकीय ऊर्जा का विकास इसी क्रम का हिस्सा है। नाभिकीय ऊर्जा (परमाणु ऊर्जा) ने मानव को अधिक प्रभावशाली बनाया है। नाभिकीय ऊर्जा का विकास मानव के आधुनिकता के विकास का अन्तिम चरण है, क्योंकि प्रकृति के रहस्यों में अणु–परमाणु का अध्ययन करते–करते मानव ने विकास के साथ विनाश के साधन अत्यन्त तेजी से बना लिए हैं, क्योंकि प्रकृति में मानव ही एक मात्र ऐसा प्राणी है, जो अपनी भूख से अधिक इकट्ठा करने एवं अपनी क्षमता से अधिक एकत्र करने में विश्वास करता है। भय उसकी दुर्बलता है एवं भय ही उसकी शक्ति भी है। इसी धारणा के अनुरूप मानव ने परमाणु ऊर्जा को विकास में कम विनाश का साधन बनाने में अधिक उपयोग किया। जिस कारण सत्ता के महत्त्वाकांक्षी लोगों में इसका प्रभाव बढ़ गया है। आज दुनियां में इसकी पहल चल रही है कि नाभिकीय ऊर्जा का उपयोग विनाश के हेतु प्रयोग करने से रोका जाए और इसको रोकने में वही लोग लगे हैं, जो इसको विकसित कर चुके हैं। भला कौन उनके रोकने के इस अंदाज को स्वीकार करेगा, जब वे खुद इसके प्रेरणास्रोत हैं और सत्य यह है कि वे बड़े देश दो कारणों से नाभिकीय बमों के विकास को रोक रहे हैं। प्रथम कि वह खुद डर रहे हैं और इसी की दम पर वह दूसरे को डराना भी चाहते हैं। इसलिए दुनियां भर में परमाणु अप्रसार सन्धि जोरों पर है। भला इनकी बात दुनियां के कमजोर देश क्यों मानेंगे। वे तो अपनी रक्षा हेतु कृत संकल्प हैं। प्रकृति की इस छेड़छाड़ से प्रकृति भी प्रभावित है। जापान में आयी सुनामी इसका उदाहरण है, जिसमें प्रकृति ने किसी छोटे–बड़े के साथ भेद नहीं किया है। केवल यह संदेश दिया है कि देने वाले से उतना लो, जितना देकर वह सुरक्षित रहे। अण्डा खाना अधिक सुरक्षित है, मुर्गी खाना महँगा पड़ेगा। प्रकृति हमारी जननी है, प्रकृति के पंचतत्त्वों को सुरक्षित रखें। विसर्जित करना हमें अधिक महँगा पड़ेगा। हम नहीं चेते तो चित्त होना तय है।

प्रस्तुत अंक में विचार/शोधपूर्ण लेख लेखकों के स्वयं के हैं, उसके सम्बन्ध में जर्नल का कोई विधिक उत्तरदायित्व नहीं है। इस अंक के प्रति विचार एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें, उन्हें अगले अंक में ''अभिमत'' कालम में प्रकाशित किया जायेगा।

-डॉ० विनोद मोहन मिश्रा
डॉ० राम तिवारी

संपादक - मण्डल

1. **डॉ० (मेजर) संतोष कुमार सिंह सेंगर**
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
वी0एस0एस0डी0 महाविद्यालय, कानपुर

2. **डॉ० गोविन्द सिंह**
एसोसिएट प्रोफेसर
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
वी0एस0एस0डी0 महाविद्यालय, कानपुर

3. **डॉ० (मेजर) इन्द्रजीत सिंह**
रीडर एवं अध्यक्ष
सैन्य अध्ययन विभाग
पी0पी0एन0 महाविद्यालय, कानपुर

4. **डॉ० अशोक कुमार तिवारी**
एसोसिएट प्रोफेसर
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
वी0एस0एस0डी0 महाविद्यालय, कानपुर

5. **डॉ० अरुण कुमार दीक्षित**
एसोसिएट प्रोफेसर
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
वी0एस0एस0डी0 महाविद्यालय, कानपुर

6. **डॉ० देवेश चन्द्र कटियार**
एसोसिएट प्रोफेसर
सैन्य अध्ययन विभाग
पी0पी0एन0 महाविद्यालय, कानपुर

7. **डॉ० अजय कुमार सिंह**
वरिष्ठ प्रवक्ता
सैन्य अध्ययन विभाग
पी0पी0एन0 महाविद्यालय, कानपुर

8. **डॉ० जय शंकर पाण्डेय**
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
समाजशास्त्र विभाग
डी0ए—वी0 महाविद्यालय, कानपुर

9. **डॉ० अनूप सिंह**
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
डी0ए—वी0 महाविद्यालय, कानपुर

10. **डॉ० मनोज अवस्थी**
एसोसिएट प्रोफेसर
वाणिज्य विभाग
वी0एस0एस0डी0 महाविद्यालय, कानपुर

11. **डॉ० नीलम त्रिवेदी**
एसोसिएट प्रोफेसर
डी0जी0 महाविद्यालय, कानपुर

12. **डॉ० पुष्पा वर्मा**
एसोसिएट प्रोफेसर
डी0सी0लॉ0 महाविद्यालय, कानपुर

संपादकीय परामर्शदाता मण्डल

1. **प्रोफेसर (डॉ०) राजकुमार उपाध्याय**
विभागाध्यक्ष
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

2. **डॉ० सुरेन्द्र कुमार मिश्रा**
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
सैन्य अध्ययन विभाग
गर्वनमेण्ट पी0जी0 कालेज, हिसार (हरियाणा)

3. **डॉ० रामसूरत पाण्डेय**
एसोसिएट प्रोफेसर
रक्षा अध्ययन विभाग
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, गोण्डा

4. **डॉ० विजेन्द्र सिंह**
विभागाध्यक्ष
सैन्य अध्ययन विभाग
सकलडीहा पी0जी0 कालेज सकलडीहा, चंदौली
वाराणसी

5. **डॉ० अरविन्द कुमार चतुर्वेदी**
एसोसिएट प्रोफेसर
सैन्य अध्ययन विभाग
गनपत सहाय पी0जी0 कालेज, सुल्तानपुर

6. **डॉ० संजय कुमार**
वरिष्ठ प्रवक्ता
सैन्य अध्ययन विभाग
मेरठ कालेज, मेरठ

7. **डॉ० नर्वदेश्वर शुक्ला**
विभागाध्यक्ष
सैन्य विज्ञान विभाग
एल0एस0एम0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
पिथौरागढ़ (उ0 प्र0)

8. **डॉ० एस० एन० राय**
विभागाध्यक्ष
सैन्य अध्ययन विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

9. **डॉ० धीरेन्द्र द्विवेदी**
असिस्टेंट प्रोफेसर
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
ईश्वर शरण डिग्री कालेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

10. **डॉ० गिरीश कांत पाण्डेय**
विभागाध्यक्ष,
रक्षा अध्ययन विभाग
शास. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान
महाविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

11. **डॉ० देवदत्त शर्मा**
एसोसिएट प्रोफेसर
विधि विभाग
डी0ए—वी0 कालेज, लखनऊ

12. **डॉ० अमित सिंह**
एसोसिएट प्रोफेसर
विधि विभाग
महात्मा ज्योतिबा फूले
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

13. **डॉ० दीर्घपाल सिंह भंडारी**
विभागाध्यक्ष
सैन्य विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
नई टिहरी, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

14. **डॉ० ध्रुवज्योति कुमार सिंह**
असिस्टेंट प्रोफेसर
मैथिली विभाग
साहबगंज कालेज (सम्बद्ध एस0के0एम0
विश्वविद्यालय) दुमका, झारखण्ड

संरक्षक - मण्डल

- **डॉ० बद्री नारायण तिवारी**
  अध्यक्ष,
  मानस संगम

- **डॉ० जे० एन० गुप्ता**
  CEO दैनिक जागरण एजूकेशन
  फाउन्डेशन एवं पूर्व चेयरमैन स्टाक
  एक्सचेंज, उत्तर प्रदेश

- **डॉ० आर. के. त्रिवेदी**
  निदेशक
  एच0 बी0 टी0 आई0 (स्टेप)
  नवाबगंज, कानपुर

- **डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा**
  पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर
  हिन्दी विभाग
  बी0 एस0 एस0 डी0 कालेज, कानपुर

- **श्रीमती किरन मिश्रा**
  प्रबन्धक
  ब्रह्मवर्त कामर्शियल कोआपरेटिव बैंक
  लिमिटेड, कानपुर

- **श्रीमती पुष्पलता सिंह**
  प्रधानाचार्या
  डॉ0 वीरेन्द्र स्वरूप मेमोरियल पब्लिक
  स्कूल, कानपुर

- **ई० आर० डी० पाण्डेय**
  पूर्व उपप्रबन्धक
  केस्को, कानपुर

- **डॉ० नंदिनी रस्तोगी**
  प्रख्यात चिकित्सक
  कानपुर नगर

- **प्रो० (डॉ०) आर० सी० गुप्ता**
  अध्यक्ष, नेत्र रोग विभाग
  कानपुर मेडिकल कालेज
  कानपुर

- **प्रो० सर्वज्ञ सिंह कटियार**
  पद्मश्री एवं पद्म विभूषण
  पूर्व कुलपति
  छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय
  कानपुर

- **श्री के० के० यादव (आई० पी० एस०)**
  निदेशक, डाक सेवा
  अंडमान निकोबार, पोर्ट ब्लेयर

- **डॉ० विवेक द्विवेदी**
  प्राचार्य
  बी0 एन0 डी0 महाविद्यालय, कानपुर

- **श्री अंकुश शुक्ला**
  भाई साहब (दैनिक जागरण)
  प्रख्यात व्यंग्य कार्टूनिस्ट

- **डॉ० राकेश सक्सेना**
  प्रधानाचार्य
  सेठ आनन्द राम जयपुरिया पब्लिक स्कूल
  कानपुर

- **श्री प्रकाश नारायण बाजपेई**
  प्रधानाचार्य
  पं0 दीनदयाल उपाध्याय इण्टर कालेज
  कानपुर

- **डॉ० डी० के० सिन्हा**
  प्रख्यात चिकित्सक
  संस्थापक, कानपुर किडनी फाउन्डेशन
  कानपुर

- **प्रो० (डॉ०) एस० के० अरोड़ा**
  त्वचा रोग विशेषज्ञ
  कानपुर मेडिकल कालेज, कानपुर

- **डॉ० एस० पी० तिवारी**
  प्रधानाचार्य
  आर0 एस0 जी0 यू0 डिग्री कालेज
  पुखरायाँ

- **श्री साहब लाल मौर्या**
  डिप्टी रजिस्टार
  महात्मा ज्योतिबा फूले, रूहेलखण्ड
  विश्वविद्यालय, बरेली

- **श्री योगेन्द्र स्वरूप (एड०)**
  सचिव, पी0 पी0 एन0 मेमोरियल सोसाइटी,
  कानपुर, वर्तमान सदस्य एवं पूर्व
  अध्यक्ष उत्तर प्रदेश बार काउंसिल

- **डॉ० रेनू निगम**
  एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
  संगीत विभाग,
  ए0 एन0 डी0 कालेज, कानपुर

- **डॉ० अरविन्द अरोड़ा**
  प्रख्यात लेखक एवं
  पूर्व चिकित्सा अधिकारी (होम्योपैथिक)

- **श्री राम मिलन सिंह**
  प्रधानाचार्य
  ओंकारेश्वर सरस्वती विद्या निकेतन
  इण्टर कालेज, कानपुर

- **श्री रमेश कुमार पाण्डेय**
  चेयरमैन
  विजन ग्रुप ऑफ इंजीनिरिंग एण्ड
  मैनेजमैण्ट इंस्टीट्यूट उत्तर प्रदेश

- **डॉ० एम० के० खरे**
  पूर्व चिकित्सा अधिकारी
  एवं प्रबन्धक सीता पैथोलॉजी,
  स्वरूप नगर, कानपुर

- **प्रो० (डॉ०) संजय रस्तोगी**
  वरिष्ठ चिकित्सक
  सर्जन एवं हड्डी रोग विशेषज्ञ, कानपुर

- **श्री राजू सेठ**
  प्रख्यात छायाकार एवं प्रबन्धक
  वाहु कलरलैब सोमदत्त प्लाजा,
  कानपुर

संरक्षक - मण्डल

- **प्रो0 सर्वज्ञ सिंह कटियार**
  पद्मश्री एवं पद्म विभूषण
  पूर्व कुलपति, छत्रपति शाहू जी महाराज
  विश्वविद्यालय, कानपुर

- **डॉ0 बद्री नारायण तिवारी**
  अध्यक्ष,
  मानस संगम

- **डॉ0 जे0 एन0 गुप्ता**
  CEO दैनिक जागरण एजूकेशन
  फाउन्डेशन एवं पूर्व चेयरमैन स्टाक
  एक्सचेंज, उत्तर प्रदेश

- **डॉ0 आर. के. त्रिवेदी**
  निदेशक
  एच0 बी0 टी0 आई0 (स्टेप)
  नवाबगंज, कानपुर

- **डॉ0 रमेशचन्द्र शर्मा**
  पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर
  हिन्दी विभाग
  बी0 एस0 एस0 डी0 कालेज, कानपुर

- **श्रीमती किरन मिश्रा**
  प्रबन्धक
  ब्रह्मवर्त कामर्शियल कोआपरेटिव बैंक
  लिमिटेड, कानपुर

- **श्रीमती पुष्पलता सिंह**
  प्रधानाचार्या
  डॉ0 वीरेन्द्र स्वरूप मेमोरियल पब्लिक
  स्कूल, कानपुर

- **ई0 आर0 डी0 पाण्डेय**
  पूर्व उपप्रबन्धक
  केस्को, कानपुर

- **डॉ0 नंदिनी रस्तोगी**
  प्रख्यात चिकित्सक
  कानपुर नगर

- **डॉ0 विवेक द्विवेदी**
  प्राचार्य
  बी0 एन0 डी0 महाविद्यालय, कानपुर

- **श्री के0 के0 यादव (आई0 पी0 एस0)**
  निदेशक, डाक सेवा
  अंडमान निकोबार, पोर्ट ब्लेयर

- **श्री अंकुश शुक्ला**
  भाई साहब (दैनिक जागरण)
  प्रख्यात व्यंग्य कार्टूनिस्ट

- **डॉ0 राकेश सक्सेना**
  प्रधानाचार्य
  सेठ आनन्द राम जयपुरिया पब्लिक स्कूल
  कानपुर

- **श्री प्रकाश नारायण बाजपेई**
  प्रधानाचार्य
  पं0 दीनदयाल उपाध्याय इण्टर कालेज
  कानपुर

- **डॉ0 डी0 के0 सिन्हा**
  प्रख्यात चिकित्सक
  संस्थापक, कानपुर किडनी फाउन्डेशन
  कानपुर

- **प्रो0 (डॉ0) एस0 के0 अरोड़ा**
  त्वचा रोग विशेषज्ञ
  कानपुर मेडिकल कालेज, कानपुर

- **डॉ0 एस0 पी0 तिवारी**
  प्रधानाचार्य
  आर0 एस0 जी0 यू0 डिग्री कालेज
  पुखरायाँ

- **प्रो0 (डॉ0) आर0 सी0 गुप्ता**
  अध्यक्ष, नेत्र रोग विभाग
  कानपुर मेडिकल कालेज
  कानपुर

- **श्री साहब लाल मौर्या**
  डिप्टी रजिस्टार
  महात्मा ज्योतिबा फूले, रूहेलखण्ड
  विश्वविद्यालय, बरेली

- **श्री योगेन्द्र स्वरूप (एड0)**
  सचिव, पी0 पी0 एन0 मेमोरियल सोसाइटी,
  कानपुर, वर्तमान सदस्य एवं पूर्व
  अध्यक्ष उत्तर प्रदेश बार काउंसिल

- **डॉ0 रेनू निगम**
  एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
  संगीत विभाग,
  ए0 एन0 डी0 कालेज, कानपुर

- **डॉ0 अरविन्द अरोड़ा**
  प्रख्यात लेखक एवं
  पूर्व चिकित्सा अधिकारी (होम्योपैथिक)

- **श्री राम मिलन सिंह**
  प्रधानाचार्य
  ओंकारेश्वर सरस्वती विद्या निकेतन
  इण्टर कालेज, कानपुर

- **श्री रमेश कुमार पाण्डेय**
  चेयरमैन
  विजन ग्रुप ऑफ इंजीनिरिंग एण्ड
  मैनेजमैण्ट इंस्टीट्यूट उत्तर प्रदेश

- **डॉ0 एम0 के0 खरे**
  पूर्व चिकित्सा अधिकारी
  एवं प्रबन्धक सीता पैथोलॉजी,
  स्वरूप नगर, कानपुर

- **प्रो0 (डॉ0) संजय रस्तोगी**
  वरिष्ठ चिकित्सक
  सर्जन एवं हड्डी रोग विशेषज्ञ, कानपुर

- **श्री राजू सेठ**
  प्रख्यात छायाकार एवं प्रबन्धक
  वाहु कलरलैब सोमदत्त प्लाजा,
  कानपुर

विवरणिका

लेख		पृष्ठ सं०
1-	**NUCLEAR TERRORISM A SERIOUS APPREHENSION** Dr. S.K.S. Sengar Dr. Govind Singh	**1**
2-	**परमाणु रिएक्टर्स : गम्भीर समस्याओं के जनक** डॉ0 रंजन कुमार	**5**
3-	**SHIFTING TRENDS IN INDO-BHUTAN RELATIONS** Dr. S.K. Mishra	**14**
4-	**FINANCIAL AND ECONOMIC CRISIS : SOME THEORETICAL ASPECTS** Dr. Rajesh Kundu	**20**
5-	**SPORTS INJURIES AND ITS PREVENTION** Dr. Naman Yadav	**23**
6-	**WOMEN POLITICS- REDEFINING AGENDA** Dr. Deepshikha Chaturvedi	**26**
7-	**IMPERATIVES OF SUSTAINABLE DEVELOPMENT IN DEVELOPING COUNTRIES** Dr. Rajshree Chaturvedi	**31**
8-	**INDIA'S INTERNAL SECURITY : NEEDS AND CHALLENGES** Dr. Vinod Mohan Mishra Dr. Ram Tiwari	**35**
9-	**भूमण्डलीकरण तथा भारत में उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ** डॉ0 ममता दीक्षित	**41.**

10- **विश्व शान्ति पर नाभिकीय हथियारों के आतंक का प्रभाव** **46**
डॉ0 अशोक कुमार तिवारी

11- **भारत अमेरिका परमाणु सहयोग समझौता और भारतीय सामरिक सुरक्षा** **51**
डॉ0 उपमा श्रीवास्तव
करूण कुमार

12- **गुट निरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता** **55**
डॉ0 निखिल कुमार सिंह

13- **ग्रामीण विकास के द्वारा नक्सलवाद का समाधान** **68**
डॉ0 पुष्कर पाण्डेय

14- **दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की विस्तृत रूपरेखा** **71**
डॉ0 श्री भगवान सिंह

NUCLEAR TERRORISM A SERIOUS APPREHENSION

Dr. S.K.S. Sengar
Associate Professor & Head
Defence and Strategic
Studies Department
V.S.S.D College, Kanpur

Dr. Govind Singh
Associate Professor
Defence and Strategic
Studies Department
V.S.S.D College, Kanpur

Since the Stone Age began, man involved him in scientific and technological endeavours to improve the weapon system as result of which crossing visions ages like 'age of valour' or age of gun powder; it entered into the nuclear age in July 1945. The implosion was so devastating that the Iron lair vaporized, the melted sand become like a grass crust an earth, because the temperature rise to 100 million Fahrenheit pressure 120 million atmospheric pressure. The condition was most the same as in the centre of the sun.

The monopoly enjoyed by United States came at first than Soviet Union first atomic explosion was on August 29, 1949. Later on Britain became the third member of Nuclear Club on Oct 3, 1952. France became the fourth member in 1960 and China was the fifth on Oct 16,.1946.

India came in to existence as a sixth member in 1974. Apart from this nuclear club now at present 30 nations like 'Argentina Austria, Belgium, Brazil, Canada, Czechoslovakia, Denmark, Egypt, Finland, Germany, Isreal, Italy, Japan, Mexico, Netherlands, Norway, Pakistan, Poland, Portugal, Romania, South Africa, South Korea, Spain, Sweden, Switzer land , Turkey and Yugoslavia have sufficiently advance technology to easily produce Nuclear Weapons.

Failure Of N.P.T.

Nuclear Non- Proliferation treaty was signed in 1968 the logic presented by the Nuclear club members was that Nuclear weapons may cause Nuclear warfare if they fell into hands of many countries, as the countries will not behave rationally or responsibly, the probability of Nuclear Warfare may become imminent. Therefore after 1968 none should develop Nuclear Weapons, India did not sign the N.P.T. on the pretext that it was discriminatory.

Failure of M.T.C.R.

The purpose of the 'Missile Technology Control Regime' is to forbid the export of missiles and related technology for long range missiles thus stopping the number of

countries from obtaining this technology these by reducing the risk to international peace and security. The essence of this M.T.C.R. was really and apparently violated by specifically two countries, China and North Korea. China said that its sales of missiles and other weapons to Iran are principle and above the board.

The Dead Treaty: C.T.B.T.

C.T.B.T." is not longer the document Signed by 130 Countries in 1996, it is virtually dead after it was rejected by the U.S. senate. "The purpose of this treaty had been to forbid the nations from testing the nuclear weapons anymore. It was the hope that shortly after the N.P.T. extension, a genuine CTBT would follow by the end of 1996, a fissile cut-off agreement then and the implementation of all their nuclear weapons states for deeper cuts and eventual elimination of all their nuclear weapons.

THE NATIONAL MISSILE DEFENCE (N.M.D.)

"The N.M.D. , a system that can back and deploy incoming ballistic missiles aimed at the united steles is a scaled - down version of the original Reagan era Strategic Defense Initiative or the star wars. "This plan has been vehemently opposed by China and Russia. China is not prepared even to listen about the national missile defense or the TMD,. The 'reasons are eminently practical. These forces will degrade the capability of their missile force to threaten Taiwan or deter the United States. This NMD plan has put the 1972. ABM treaty not on the back bushes but has thrown it into the dustbin.

Today we are discussing more about WMD. Iraq in is one of the country which lost her existence on the glob due lo false allegations put by U.S the possibility of future use of WMD clearly exists and use of chemical, biological or nuclear weapons by religious fanatics seems to be quite high. The publicity and shock waves created by the attacks on the World Trade Centre and the Pentagon have convinced the Jihadi groups of efficacy of WMD against the US. Considering the nature of threat of WMD and cyber-terrorism posed by non-state actors, international cooperation attains a much greater importance, cooperation cannot be gained by the US through coercion or threats.

The global fight against terrorism efforts in many areas, from strengthened border controls to better coordination among numerous government agencies at local, national, regional and international levels. As the international community attempts to come to terms with the threat of terrorism, it should built upon already existing foundations as well as develop new responses. Despite the fact that arms control predominantly involves commitments between state – not non state actors it can make a necessary and useful

contribution to preventing terrorists from acquiring the capability to launch nuclear and radiological attacks.

We can imagine three kinds of nuclear terrorism. The first is to disperse radioactive materials (a radiological or dirty bomb). The second is to intentionally cause the leakage of radioactive materials by attacking nuclear facilities. These threats are also known as radiological attacks or nuclear blackmail. Studies undertaken concerning the risk and potential for such attacks have been widely publicized and for the most part agree that efforts are needed to strengthen the safety and control of radioactive materials, waste and facilities. The third option for terrorists would be to explode a nuclear weapon.

NUCLEAR TERRORISM

Nuclear terrorism denotes the use, or threat of the use of nuclear weapons or radiological weapons in acts of terrorism including attacks against facilities where radioactive materials are present. In legal terms, nuclear terrorism is an offence committed if is a person unlawfully and internationally uses in any way radioactive material with the intent to cause death or serious bodily injury, or with the intent to cause substantial damage to property or to the environment; or with the intent to compel a natural or legal person, an international organization or a state to do or refrain from doing an act", according to 2005 United Nations International Convention for the Suppression of Acts of Nuclear Terrorism.

The notion of terrorist organization using nuclear weapons (especially very small ones, such as suitcase nukes) has been a threat in American rhetoric and culture. It is considered plausible that terrorists could acquire a nuclear weapon.

Acquiring or fabricating a nuclear weapon.

Fabricating a dirty bomb.

Attacking a nuclear reactor, e.g. by disrupting critical inputs (e.g. water supply).

Attacking or taking over a nuclear armed submarine, plane or base.

Discussions of non-state nuclear terrorism among experts go back at least to the 1970s. In 1975. The economics warned that "You can make a bomb with a few pounds of plutonium. By the mid-1980s the power stations may easily be turning out 200,000 lb of the stuff each year. And each year, unless present methods are drastically changed, many thousand of pounds of it will be transferred from one plant to another as it proceeds through the full cycle.

It is important that all nuclear weapon states and emerging nuclear weapon states maintain and strengthen their capabilities to protect their nuclear weapons and materials and convey a sense of confidence in such measures. This requires three responses. First, their must be a robust protection system against loss of existing nuclear devices. Second, a quick and regular accounting system must be use to detect any loss in real time. Third, the capability to prevent unauthorized detonation should be included in all weapons designs.

Tactical nuclear weapons are short range weapons designed for use on the battle field. Reducing the number of TNWs is an important arms control objective to prevent accidental or international nuclear war. TNWs are at a greater risk then strategic weapons to be lost or detonated because of their wide spread deployment and high state of readiness.

CONCLUSION

On the basis of observations taken, discussion and inferences obtained with the learned academician, it can easily be concluded that the present condition of the international community is very very volatile. This may invite a fierce war. Since, terrorist like a fog, wind or shadow, therefore quick attack like a lightning has become essential and inevitable. Therefore nuclear weapons should be avoided by practising restraint (by both the nuclear states and terrorists). Arms control contributes to fighting terrorism by strengthening the safety and security of nuclear weapon installations, institutions and mechanisms.

In view of volatile security scenario and a fast changing international system, we want to submit our personal observation and conclusion that nuclear terrorism is absolutely apprehension in our view but definetly a serious concern for future.

REFERENCES

1. T. Kosta, Understanding nuclear weapons.
2. Malhotra V.K., International Relations.
3. Dhar A.K., Pakistan Nuclear Technology Reached North Korea, Time of India 7 June, 1998.
4. Strategic Analysis December 2001
5. Ritambhra : 2009-10
6. Rakesh Gupta, India's Internal Security Dimensions.
7. Jenny, Tcichman, How to Define Terrorism.
8. Dixit A.K. Security and Diplomacy.
9. Johsi, Ashok Restrucuring National Security.

परमाणु रिएक्टर्स : गम्भीर समस्याओं के जनक

—डॉ0 रंजन कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
वी0एस0एस0डी0 कालेज, कानपुर

11 मार्च 2010 सुनामी, भूकम्प एवं समुद्री जल के तांडव ने जापान में व्यापक तबाही मचायी और इस विचार विमर्श का द्वार खोल दिया कि विकास विशेष तौर पर परमाणु क्षेत्र का मानव के लिये वरदान है या विनाश का मार्ग। रिक्टर पैमाने पर इस भीषण भूकम्प की तीव्रता 8.9 मापी गई, परिणाम स्वरूप हजारों लोगों की मौत हुई। इस प्राकृतिक त्रासदी ने जापान के ओनाहामा नगर स्थित फुकुशिमा परमाणु संयंत्र के रिएक्टर्स को भारी क्षति पहुंचायी। पूरा जापान ही नहीं पड़ोसी देश फिलिपीन्स, रूस, दक्षिण कोरिया, उत्तर कोरिया, चीन, ताइवान भी इसके दुष्प्रभाव के प्रति आंशाकित है। परमाणु संयत्र के रिएक्टर्स को क्षति से परमाणु विकरण के संकट ने पूरे विश्व को यह सोचने एवं रचनात्मक दिशा में कदम उठाने का यह सुअवसर भी दिया है कि जापान की त्रासदी से कुछ सीखा जाये और भविष्य के संकट से बचा जाये। चीन ने अपने दो नये परमाणु रिएक्टर्स को लगाने की प्रक्रिया को गंभीर विचार करने हेतु फिलहाल रोक दिया है। विश्व के अन्य देश भी इस ओर विचार करने हेतु बाध्य हुये है।

राइटर्स की एक रिपोर्ट के अनुसार जापान की परमाणु त्रासदी 1979 में घटित अमेरिका के पेन सेल्वेनिया प्रांत स्थित 'थ्री माइल आइसलैंड' में घटित परमाणु दुर्घटना से अधिक गंभीर प्रकृति की है। उपरोक्त दुर्घटना अमेरिका की सबसे बड़ी परमाणु दुर्घटना थी, यद्यपि इससे कोई तात्कालिक मानव क्षति तो नहीं हुई किन्तु यह परमाणु रिएक्टर्स से उत्पन्न हो सकने वाली समस्याओं का द्योतक अवश्य था। यद्यपि कुछ समय बाद यह अवश्य सूचनायें आई थी कि इस घटना के बाद पेन सेल्वेनिया के उस क्षेत्र के आस–पास लगभग 400 से अधिक शिशुओं की मृत्यु परमाणु विकरण से हुई थी।[1] जापान की परमाणु त्रासदी से घबराकर जर्मनी ने अपने देश स्थित सात पुराने परमाणु रिएक्टर्स हो हाल फिलहाल बंद करने का निर्णय लिया है और अस्थायी रूप से परमाणु ऊर्जा के विकल्प पर रोक लगायी है। फ्रांस स्वयं जो अपने देश में 50 परमाणु रिएक्टर्स के माध्यम से देश की 80% ऊर्जा की आवश्यकता की

पूर्ति करता है, ने जापान की त्रासदी से घबराकर परमाणु विकरण के संकट को अत्यंत गंभीर मानते हुये ऐसी परिस्थितियों से निपटने की तैयारी को तेज किया है।[2] स्वयं भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड ने जापान परमाणु विकरण संकट की गंभीरता को भापते हुये एक समिति का निर्माण कर उसे भारत स्थित परमाणु रिएक्टर्स की सुरक्षा पर पुनर्विचार करने का दायित्व सौपा है। साथ ही साथ समिति को यह भी सुनिश्चित करना है कि भूकम्प या सुनामी जैसी घटनाओं से निपटने की इनके पास कितनी ताकत है और यदि दुर्भाग्य वश कोई दुर्घटना हो ही जाये तो राहत के क्या साधन है।[3]

अपनी ऊर्जा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये विश्व के अनेकों देश परमाणु ऊर्जा की ओर आकर्षित हुये है। कोयले एवं जल संकट ने इस ओर बढ़ने के लिये बाध्य किया है। औद्योगिकीकरण के लिये ऊर्जा की उपलब्धता अनिवार्य है जिसे परमाणु संयत्रो से पाये जाने का प्रयास चल रहा है। विश्व में वर्ष 2002 में 444 परमाणु रिएक्टर्स कार्यरत थे यद्यपि हाल के वर्षों में इनकी संख्या में आंशिक गिरावट आई है। वर्ष 2009 में कार्य कर रहे परमाणु रिएक्टर्स की संख्या 438 ही रह गई है।[4] किन्तु भारत अपनी विस्फोटक जनसंख्या के कारण नित नये परमाणु रिएक्टर्स का निर्माण कर अपनी ऊर्जा सम्बन्धी आवश्यकता की पूर्ति के लिये प्रयासरत है। आज भारत में 20 परमाणु रिएक्टर्स कार्य कर रहे है और उनके माध्यम से 4780 मेगावाट विद्युत का उत्पादन हो रहा है।[5]

महाराष्ट्र के रत्नागिरी जनपद में स्थापित होने वाले जैतापुर परमाणु संयंत्र के संदर्भ में यह उल्लेख आवश्यक है कि भारतीय औद्योगिक जगत की ऊर्जा सम्बन्धी आवश्यकताओं के लिये ऊर्जा उत्पादन के हमारे पास क्या यही विकल्प है? कोयला एवं जल की सीमितता एवं कोयले आधारित संयंत्र से जल वायु क्षति चिंता का विषय है। सूर्य प्रकाश आधारित संयंत्र (विश्व में जर्मनी इस संदर्भ में अग्रणी है) भारत की आवश्यकताओं की पूर्ति से बहुत दूर है। कनाडा के वैज्ञानिकों ने समुद्री लहरों से विद्युत उत्पादन के लिए एक टरबाइन समुद्र में उतारा है, अभी इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना शेष है, यद्यपि इसमें अपार सम्भावनायें हैं एवं विद्युत उत्पादन का अत्यन्त सुरक्षित साधन होगा। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि समुद्री लहरों से साढ़े चार लाख मेगावाट से अधिक विद्युत उत्पादित की जा सकती है।

भारत की विशाल जनसंख्या एवं उसकी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के सम्मुख एक चुनौती पूर्ण समस्या है। विकास एवं रोजगार के लिये

Ratnagiri

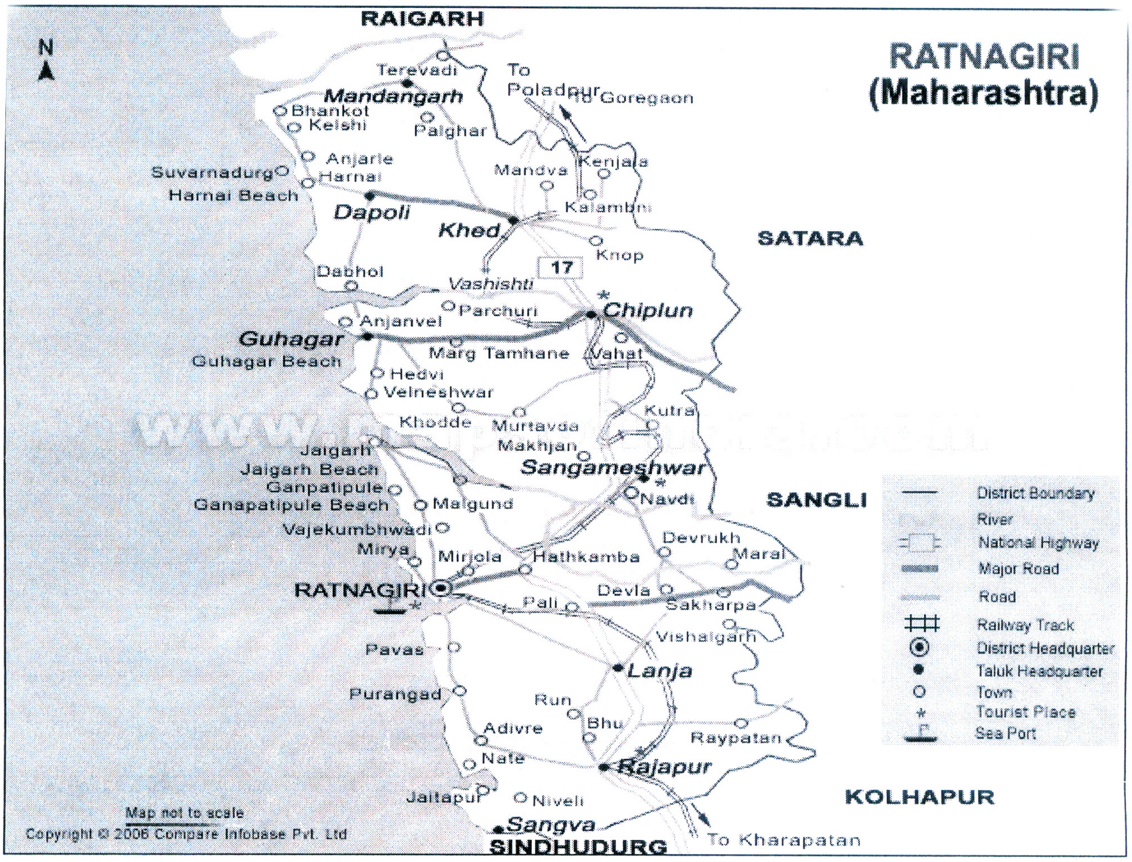

ऊर्जा की अनिवार्यता पर कोई भ्रम नहीं है, किन्तु इसके पूर्व की प्राथमिक आवश्यकताओं सहित पर्यावरणीय सुरक्षा की उपेक्षा भी उचित नहीं है। बढ़ती जनसंख्या को ध्यान में रखते हुये विश्व की भूख सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये, फूड एवं एग्रीकल्चर आरगेनाइजेशन के अध्यक्ष के अनुसार, विश्व में हो रहे खाद्यान्न उत्पादन का 70% भाग और अधिक वांछित है। खाद्यान्न को लेकर भारत की स्थिति स्वयं चिंता जनक है। अमेरिका स्थित एक संगठन 'इन्टरनेशनल फूड पालिसी रिसर्च इन्स्टीट्यूट'' के द्वारा जारी किये गये आंकड़ों (ग्लोबल हंगर इडेक्स) के अनुसार 122 देशों में किये गये अध्ययन के अनुसार, भारत का 67 स्थान है। भारत से बेहतर स्थिति पड़ोसी देश चीन, म्यांमार, पाकिस्तान एवं नेपाल की है। कुपोषण, विशेष तौर पर बच्चे भारत में एक गंभीर समस्या है।[6] हाल में भारत के सर्वोच्च न्यायालय को भी खाद्यान्न के खुले में पड़े रहने के कारण खराब होने की जानकारी मिलने पर

यह निर्देश जारी करना पड़ा था कि अनाज को भूख का सामना करने वालों के मध्य मुफ्त बांट दिया जाये। भारत में किसानों की दशा सुधारने, जल प्रबंधन आदि जैसी अनेक प्राथमिक स्तर पर गंभीर समस्यायें है जिनकी ओर तत्काल एवं गंभीर प्रयास किया जाना अनिवार्य है। भारत अनेकों समस्याओं का सामना कर रहा है, इस प्रकार भारत में ''समस्याओं की प्राथमिकता का निर्धारण'' स्वयं एक समस्या के रूप में उभर रहा है।

भारत अपनी ऊर्जा सम्बन्धी आवश्यकताओं की ओर गंभीर प्रयासरत है। विशाल जनसंख्या, रोजगार, औद्योगिक एक कृषि क्षेत्र में इसकी अनिवार्यता, विदेशी धन का भारत में निवेश आदि अनेक ऐसी अनिवार्यतायें है जिनसे प्रभाव पूर्ण ढंग से निपटने के लिये तत्काल ऊर्जा की प्रचुर मात्रा की उपलब्धता आवश्यक है। इसके लिये भारत ने परमाणु ऊर्जा की ओर ध्यान दिया है। इस हेतु नए परमाणु रिएक्टर की स्थापना के लिये भारत में गंभीर प्रयास हो रहे है। इसी कडी में विश्व का सबसे बड़ा परमाणु ऊर्जा परिसर महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में स्थित रत्नागिरी जिले के जैतापुर में स्थापित किया जाना है। विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि उपरोक्त क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य एवं विविधता से परिपूर्ण है और विश्व प्रसिद्ध एलफेंसो आम के साथ–साथ विविध फलों एवं कृषि उत्पादों के लिये विख्यात है। इस सम्पूर्ण प्रोजेक्ट के लिये जैतापुर टाउन के पास 968 हेक्टेयर भूमि की आवश्यकता है जिसे वहां स्थित पांच गांवों से प्राप्त किया जायेगा। उस क्षेत्र के लगभग 40,000 निवासियों को अपना मूल निवास छोड़ना होगा और वे वहां से विस्थापित होकर अन्यत्र अपना ठिकाना ढूंढेगें। इस भूमि के अधिग्रहण हेतु सरकार प्रभावित परिवारों को रूपये 10 लाख प्रति बीघा के साथ–साथ प्रत्येक परिवार के एक सदस्य को अनिवार्य रूप से सरकारी नौकरी देने का आश्वासन दे रही है। रत्नागिरी जिले के फल उत्पादन को ध्यान में रखते हुये वर्ष 2003 में महाराष्ट्र सरकार ने इस जनपद को 'हार्टिकल्चर जनपद' घोषित किया था, परिणामस्वरूप स्थानीय कृषकों ने और उत्पादन बढ़ाने हेतु भारी निवेश कर अपनी भूमि की उत्पादन शक्ति को बढ़ाने एवं आवश्यक संसाधनों को जुटाने के लिये कार्य किया। समुद्र से जुड़े होने के कारण रत्नागिरी जनपद में मत्स्य उद्योग भी व्यापक है और लगभग 15000 स्थानीय निवासी इस उद्योग से जुड़े हुये है।[7]

जैतापुर के पांच गांव जिन्हें विश्व के सबसे बड़े परमाणु ऊर्जा परिसर के लिये चुना गया है वहां फ्रांस की परमाणु कम्पनी ऐरीवा (Areva) 1650 मेगावाट क्षमता के 6 परमाणु रिएक्टर्स स्थापित करने जा रही है। इन परमाणु रिएक्टर्स को यूरोपियन प्रेसेराइज्ड

रिएक्टर/इवोल्यूशनरी पावर रिएक्टर (ई0पी0आर0) की संज्ञा दी गई है और इन्हें विश्व के अति आधुनिक परमाणु पावर रिएक्टर बताया जा रहा है, किन्तु ये रिएक्टर विश्व में अभी कहीं भी कार्यरत नहीं है अतः हम उन रिएक्टर्स को स्थापित करने जा रहे है जो अभी तक अप्रयुक्त हैं और जिनके बारे में हमें सैद्धांतिक रूप के अतिरिक्त व्यावहारिक कोई ज्ञान नहीं है। मार्च 2011 में जापान में भूकम्प एवं सुनामी के कारण फुकुशिमा परमाणु संयत्र को पहुंची क्षति एवं उससे उत्पन्न हुए संकट को ध्यान में रखते हुये यह गंभीर विचार का विषय है कि इन ई0पी0आर0 की स्थापना के पूर्व कई बार विचार कर लें।

ई0पी0आर0 अर्थात् यूरोपियन प्रेसेराइज्ड रिएक्टर विश्व में अभी तक चार जगह स्थापित किये जा रहे है–दो चीन में, एक फिनलैण्ड में तथा एक स्वयं उत्तरी फ्रांस में। इनका निर्माण पूर्ण होने में अभी काफी देर है, सम्भवतः 2014 तक या उसके बाद। निर्माण की धीमी गति का प्रमुख कारण इसका अत्यधिक मंहगा होना एवं संयंत्र का पूरी तरह सुरक्षित होने के प्रति सम्बन्धित देशों का पूर्णतया आश्वस्त न होना है। फिलहाल जापान संकट के बाद चीन ने अपने उपरोक्त दोनों रिएक्टरों का निर्माण पर कार्य रोक दिया है और निर्माण अवधि 2013 से बढ़कर 2014 कर दी है। परमाणु वैज्ञानिकों का बड़ा भाग इसकी कार्य प्रणाली एवं रख–रखाव का अत्यधिक खर्चीला एवं जटिल होने के कारण इसकी सफलता के प्रति संदेह ग्रस्त है। परमाणु ऊर्जा के विशेषज्ञ प्रोफेसर थामस के अनुसार भारत इन रिएक्टर्स एवं उसकी प्रौद्योगिकी को खरीदकर भारी गलती करने जा रहा है। उनके अनुसार इसकी प्रौद्योगिकी में न केवल अनेक कमिया है वरन् यह अत्यंत खर्चीला है और इसकी क्षमता को अभी भी सिद्ध किया जाना शेष है।[8]

फिनलैंड एवं फ्रांस में इन ऊर्जा रिएक्टर्स की स्थापना में इनका डिजाइन दोष निर्माण कार्य में अनेक रूकावटें उत्पन्न कर रहा है परिणामस्वरूप इन ई0पी0आर0 की लागत बहुत बढ़ती जा रही है। इन दोषों को ध्यान में रखते हुये फ्रांस सरकार ने अपने एक विद्युत ऊर्जा विशेषज्ञ फ्रां क्वाइज रूसले (Francois Roussely) की अध्यक्षता में एक समिति का निर्माण किया जिसे इसके दोषों को देखने का उत्तरदायित्व दिया गया। रूसले ने अपनी रिपोर्ट देते हुये स्वीकार किया है कि ई0पी0आर0 के फिनलैंड एवं फ्रांस में निर्माण के दौरान आई गंभीर समस्याओं ने इनकी विश्वसनीयता पर भारी कुठाराघात किया है, अनेक अन्य दोष भी सामने आये है। अतः जहां इनका निर्माण हो रहा है वहां के अनुभवों को ध्यान में रखते हुये इनमें

आवश्यक संशोधन किये जाये।[9] इस संयत्र में सुरक्षा सम्बन्धी कुछ जटिलतायें है जिसे फिनलैंड एवं ब्रिटेन के परमाणु नियंत्रण प्राधिकरण ने ऐरीवा कम्पनी को सूचित किया किन्तु डिजाइन दोष के कारण दो वर्ष से भी अधिक का समय व्यतीत हो गया किन्तु सुरक्षा सम्बन्धी उन आंशकाओं का निवारण ऐरीवा अभी तक नहीं कर पाई है। इतना ही नहीं फ्रांस की विद्युत ऊर्जा कम्पनी इलेक्ट्रिसाइट डी फ्रांस (ई0डी0एफ0) के एक अध्ययन के अनुसार ई0पी0आर0 से निकलने वाला परमाणु कचरा सामान्य प्रेसेराइज्ड हेवी वाटर रिएक्टर (PHWR) से निकलने वाले कचरे की अपेक्षा चार गुना अधिक होगा।[10] उल्लेखनीय है कि रेडियोएक्टिव परमाणु कचरा पूरी मानव सभ्यता के लिये हजारों हजार वर्ष तक घातक है। एक सामान्य परमाणु रिएक्टर 20 से 30 टन परमाणु कचरा प्रति वर्ष उत्पन्न करता है और अभी तक इसे संभालने या सुरक्षित रखने की विधि खोजी जानी शेष है। परमाणु रिएक्टर्स से निकला हुआ परमाणु कचरा 24 हजार वर्षों से अधिक समय तक मनुष्य के लिये गंभीर खतरा होता है। जैतापुर के मीथा गवाने ग्राम में कार्यरत एक चिकित्सक के अनुसार जैतापुर में परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का लगाया जाना इस पूरे क्षेत्र के लिये गंभीर पर्यावरणीय एवं चिकित्सीय खतरा है। सभी को यह मालूम है कि राजस्थान एटामिक पावर स्टेशन के आस–पास रहने वाले लोगों को कितनी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जैतापुर भूकम्प के प्रति अति संवेदनशील स्थान है और ऐसी स्थिति में जापान के अनुभव से सीखा जाना चाहिये। यह संकट और भी अधिक बढ़ जाता है जब फ्रांस सहित विश्व के अनेक देश, अमेरिका, ब्रिटेन, फिनलैंड आदि ने ऐरीवा कम्पनी के यूरोपियन प्रेसेराइज्ड रिएक्टर को सुरक्षा मानकों सहित अनेको दोषों से युक्त माना है। स्पष्ट है कि वे सभी इस रिएक्टर की सफलता के प्रति आवश्वस्त नहीं हैं।[11] 1984 में भोपाल गैस कांड की भयावतता सभी को ज्ञात है। उसके दुष्परिणाम आज भी भोपाल निवासी झेल रहे हैं। दुर्घटना का कारण गैस संयत्र का डिजाइन दोष एवं सुरक्षा उपायों का अभाव था। इसे उस समय भी समय–समय पर विशेषज्ञों द्वारा उठाया गया था किन्तु मानवीय भूल ने भारी त्रासदी मचाई।

जैतापुर में स्थापित किये जाने वाले प्रस्तावित परमाणु संयत्र में उसकी कूलिंग हेतु अनेक अन्य उपायों के साथ भारी मात्रा में जल का भी प्रयोग होगा, परिणाम स्वरूप उस संयंत्र से बहुत भारी मात्रा में गर्म जल निकलेगा और उसे समुद्र में बहाये जाने का प्रावधान किया जा रहा है। निश्चित तौर पर यह उस क्षेत्र के आस–पास समुद्री मछलियों को नुकसान पहुंचायेगा

और इससे स्थानीय मछुआरों को न केवल आर्थिक हानि का सामना करना होगा वरन् भविष्य में अन्य पर्यावरणीय क्षति भी सामने आयेगी।

इन 6 ई0पी0आर0 को लगाने की कीमत भी बहुत अधिक होगी एक अनुमान के अनुसार लगभग 2 लाख करोड़ रूपये इस प्रोजेक्ट में खर्च होगे। फिनलैंड में लग रहे उपरोक्त रिएक्टर्स में खर्च हो रहे धन से इतने भारी निवेश का अनुमान किया जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि इवोल्यूशनरी पावर रिएक्टर्स (ई0पी0आर0) से उत्पादित विद्युत ऊर्जा भी अत्यंत मंहगी होगी। विभिन्न प्रकार के निवेशों एवं आधे अधूरे सुरक्षा उपायों के उपरांत प्रति मेगावाट विद्युत उत्पादन, एक अनुमान के अनुसार, फिनलैंड में 21 करोड़ रूपये, अमेरिका एवं दक्षिण अफ्रीका में 27 करोड़ रूपये एवं कनाडा में 59 करोड़ रूपये होगी।[12] यह सत्य है कि यह एक मोटा अनुमान है, फिर भी यह कितना कम हो सकेगा न तो इसे अभी सोचा जा सकता है और न ही यह अनुमान लगाना ठीक होगा कि इसमें भारी कमी आयेगी। अतः समस्त संकटों से जूझने के उपरांत भी यदि इन्हें लगाया जाये तो भी यह राष्ट्रीय आय एवं निवेश के लिये बुद्धिमता पूर्ण न होगा।

महाराष्ट्र का कोंकण क्षेत्र जहां यह योजना प्रस्तावित है, प्राकृतिक सम्पदाओं एवं विभिन्नताओं से भरा हुआ है। इस क्षेत्र में वहां की सरकार प्राकृतिक सम्पदाओं का दोहन निर्ममता से पहले से ही कर रही है। 15 कोयला आधारित विद्युत उत्पादन संयत्र उस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, दर्जनों छोटे एवं बड़े विशेष आर्थिक जोन है, खजिन पदार्थों का दोहन बुरी तरह हो रहा है एवं क्षेत्र में व्यापक पैमाने पर रसायनिक संयत्रों की स्थापना की गई है। इन परिस्थितियों में प्रस्तावित ये 6 यूरोपियन प्रेसेराइजड रियेक्टर (ई0पी0आर0) का निर्माण उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुये बुद्धिमता पूर्ण निर्णय नहीं प्रतीत होता। भारत सरकार के राष्ट्रीय पर्यावरणीय अभियंत्रण शोध संस्थान (National Environmental Engineering Research Institute) द्वारा उपरोक्त तथ्यों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया गया है और इसने अपनी रिपोर्ट (Environmental Impact Assessment) में ऐसा कुछ भी नहीं माना है जो प्रस्तावित परमाणु ऊर्जा संयत्र के कारण संकट उत्पन्न करने वाला हो। पूर्व सोवियत संघ के चेरनोबल परमाणु संयत्र दुर्घटना ने लगभग 1 लाख लोगो की जान ली और लाखों लाख को आज तक विभिन्न त्रासदी झेलने के लिये बाध्य कर दिया। अभी तक लगभग 22 बड़ी एवं हजारों छोटी–मोटी परमाणु संयंत्र सम्बन्धी दुर्घटनायें हो चुकी हैं। यदि सब कुछ सामान्य रहे तो भी

इन परमाणु संयत्रों से भारी मात्रा में रेडियोऐक्टिव पदार्थ निकालता है जो पानी एवं हवा को प्रदूषित करता रहता है।[13] जापान में परमाणु संयत्रों की वास्तविक स्थिति इस समय क्या है, निश्चित तौर पर कुछ भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि रेडियोऐक्टिव पदार्थों से निकलने वाले विकरण के संकट के कारण संयत्र का निकट जाकर निरीक्षण संभव नहीं हो पा रहा है। वैज्ञानिकों के विरोधाभासी वक्तव्यों ने स्थिति को और गंभीर बना दिया है। स्पष्ट है कि भूकम्प एवं सुनामी के कारण परमाणु संयंत्र में आया संकट भयंकर है और इससे एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न हुआ है कि परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में बढ़ा जाये या नहीं।[14]

परमाणु संयत्रो से निकलने वाला परमाणु कचरा स्वयं एक विकट संकट है क्योंकि यह हजारों वर्ष विकरण के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति एवं विकास उपरांत सामने आये सभी फलों को संकट ग्रस्त करने वाला है। इस कचरे को हानि रहित बनाने मे अभी वैज्ञानिकों को सफलता नहीं मिली है। इतना ही नहीं इसको कहां एवं कैसे रखा जाये यह भी जटिलतम प्रश्नों में से एक है। मार्च 2011 की जापान परमाणु त्रासदी ने पुनः सभी को यह सोचने के लिये बाध्य किया है कि ऐसे प्रौद्योगिकी की ओर कदम न बढ़ाये जाये जो मात्र विनाशकारी है। उत्तम होगा कि ऊर्जा सम्बन्धी आवश्यकताओं को अन्य विकल्पों कोयला, वायु, सूर्य, समुद्री लहरों आदि से पूरा करने का प्रयत्न किया जाये। इन विकल्पों पर परमाणु विकल्पों की अपेक्षा अत्यंत कम लागत भी आयेगी एवं कोयला आधारित संयत्रों के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प पर्यावरण के लिये संकट भी नहीं होगे। कोयला आधारित संयंत्रों से उत्पन्न होने वाला पर्यावरणीय संकट परमाणु संयंत्रों से उत्पन्न होने वाले संकटों की अपेक्षा कुछ भी नहीं है। हमें यह देखना होगा कि हम आगे आने वाली पीढ़ी को विकास का कौन सा माडल दे रहे है—विकास के साथ सुरक्षा या विकास के साथ विनाश।

सन्दर्भ सूची

1. थ्री माइल आइसलैंड एक्सीडेंट विकिपीडिया से फ्री इन्साक्लोंपीडिया www.threemileisland.org
2. दैनिक समाचार पत्र 'द हिन्दू' दिल्ली 16/03/2011
3. भारत सरकार, निदेशक सूचना एवं प्रौद्योगिक सेवायें विभाग/इण्डस्ट्रियल प्लाट्स सेफ्टी डिवीजन पत्र सं0 परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड/आई0टी0 एस0डी0/प्रेस/2011/02 दिनांक मार्च 15, 2011
4. पीयूपुल बनाम न्यूक्लियर पावर इन जैतापुर, महाराष्ट्र : प्रफुल्ल बिदवई इकोनामिक

एण्ड पोलिटिकल वीकली, अंक फरवरी 19—25, 2011 पेज 13

5. दैनिक समाचार पत्र 'द हिन्दू' दिल्ली 20/01/2011
6. दैनिक समाचार पत्र 'द हिन्दू' दिल्ली 14/10/2010
7. इकोनामिक एण्ड पोलिटिकल वीकली, अंक फरवरी 19—25, 2011 पेज 10—11
8. इंडिया रेसिंग टू बाय एन अनट्राइड रिएक्टर?दैनिक समाचार पत्र द हिन्दू दिल्ली 02/12/2010
9. Reject French reactors for Jaitapur-A Gopal Krishnan http://expressbuzz.com/ 2 Dec. 2010 (Coolition for Nuclear Disarmament and Peace (CNDP) : News.
10. वही
11. इकोनामिक एण्ड पोलिटिकल वीकली, अंक फरवरी 19—25, 2011 पे0 11—13
12. वही पेज 13
13. वही पेज 13
14. दैनिक समाचार पत्र 'द एशियन ऐज', नई दिल्ली 27/03/2011

''ए० आर० एस० परिवार''

राष्ट्रीय शोध जर्नल

सिद्धांत (DOCTRINE)

के प्रथम वर्ष पूर्ण होने पर महाविशेषांक का प्रकाशन एवं वेबसाइट पर सभी लेखों को ऑन लाइन करने जा रहा है।

कृपया आगामी अंक हेतु सभी शिक्षकगण/ शोधार्थी अपने अमूल्य शोधपरक् लेखों को शीघ्र प्रेषित करें।

SHIFTING TRENDS IN INDO-BHUTAN RELATIONS

-Dr. S.K. Mishra
Associate Professor and Head,
Deptt. of Defence Studies,
Govt. P.G. College, Hisar (Haryana)

Bhutan is a landlocked Buddhist kingdom, with an area of 46,500 sq. km and shares 470 km of land boundary with the Peoples Republic of China (PRC) and 605 km. with India. Bhutan headed by the Druk Gyalpo is bounded on three sides by the Indian States of Sikkim, West Bengal, Assam and Arunachal Pradesh. Indeed, the Himalayan kingdom is wedged as a strategic buffer between India and China. Bhutan is sandwiched between China in north and Indian in South, East and West. The country has developed a distinct pattern of Socio-economic culture, political institutions and administration. Bhutan is one of the smallest countries in the world, area and population wise. Monarchy still prevails in the earning although it has national parliament but the King larger say in the nation's affairs. The Lamas constituted the main stay of the social and religious life of the nation.

The strategic location of Bhutan lies in the fact that it acts as a 'Buffer-Zone' between people Republic of China and Republic of India. After British quit India in 1947, the free India entered into a treaty in 1949 whereby India assured Bhutan's sovereignty in case of external threat. Untied the treaty India controls Bhutan's external relations. India has also been playing a major role in the economic development of Bhutan. In the path of economic development, Bhutan has to content with problems of sever physio-climatic environment, serious resource shortage, physical accessibility, lack of human resources and administrative incapability. Bhutan's trade is wholly dependent on India.

The location of Bhutan- especially after the Indo-China war of 1962- has occasioned not only the Indian involvement in the improvement of Bhutan's indigenous defence capability but also in the training of the Royal Bhutan Army. The Indian Military Training team located in the Ha District abuts the Chumbi Valley of the Tibet where China routinely keeps a huge concentration of troops. And although the Treaty of 1949 makes no reference to the defence of Bhutan by India,

Indian Prime Minister Nehru had declared in 1958 that acts of aggression against Bhutan would be deemed as act of aggression against India. And, of course, the treaty allows Bhutan the right to impact arms, ammunition and such other military material from or through India as long as the government of India is satisfied that such imports do not threaten

India. Bhutan, on the other hand, agreed not to export or allow private citizens to export any arms, ammunition of military equipment.

Diplomatic relations between India and Bhutan were established in 1968 with the appointment of a resident representative of India in Thimphu. Before this our relations with Bhutan were looked after by our Political Officer in Sikkim. The basic framework of India - Bhutan bilateral relations is the Treaty of Friendship and Cooperation of 1949 between the two countries, which was updated and signed during the visit to India of His Majesty Jigme Khesar Namgyel Wangchuck in February 2007. The updated India-Bhutan Friendship Treaty not only reflects the contemporary nature of our relationship but also lays the foundation for their future development in the 21st century. The Treaty provides, amongst other things, for perpetual peace and friendship, free trade and commerce, and equal justice to each other's citizens. Out bilateral political relations with Bhutan have matured over the years and are characterized by close trust and understanding and extensive cooperation in the field of economic development, particularly in the mutually beneficial sector of hydroelectric power. India and Bhutan friendship is deeply rooted in religion, culture, history, politics, security and economic ties. India-Bhutan Treaty of 1949, which provided for, "perpetual peace and friendship," free trade, commerce and equal justice to each other's citizen."

India and Bhutan have signed many agreements and MOUs during the last few decades. During the visit of His Majesty Jigme Khesar Wangchuck in December 2009, twelve (12) MOUs/ Agreements in areas of hydropower, IT, health/medicine, narcotics, civil aviation, agriculture and environment were signed. These are :

- Four (4) MoUs for preparation/updation of Detailed Project Reports (DPRs) of the Amochhu Reservior Hydroelectric Project (HEP), the Kuri Gongri HEP, the Chamkharchhu-I HEP and the Kholongchhu HEP;
- MoU for the Development of ICT in Bhutan;
- MoU for the Establishment of the Bhutan Institute of Medical Sciences;
- MoU on Drug Demand Reduction and Prevention of Illicit Trafficking in Narcotic Drugs, Psychotropic Substances and Precursor Chemicals and Related Matters;
- Air Services Agreement;
- MOU for Harmonisation of Seed Quality Testing and Standards for SAARC Countries;
- Agreement for Search and Rescue Operation Services;

- MoU on Technical Assistance to the National Environment Commission of the RGoB; and
- MoU for Consultancy Services for the Preparation of the National Transmission Grid Master Plan of Bhutan.

During Prime Minister Dr. Manmohan Singh's visit to Bhutan in April 2010 for the 16th SAARC Summit, Implementation Agreements for the Punatsangchhu-II and Mangdechhu Hydro Electric Projects (HEPs) were signed by the Minister of Economic Affairs of Bhutan Lyonpo Khandu Wangchuk and the External Affairs Minister of India Shri S.M. Krishna, in the presence of the Prime Minister of India and Bhutan.

CO-OPERATION IN THE FIELD OF SECURITY AND DEFENCE

(a) India's assistance towards Bhutan's security and defence arrangements, specifically in training and equipping the Royal Bhutan Army. The Royal Bhutan Army Cadets undergo training at National Defence Academy (NDA), Khadakwasla and the Indian Military Academy (IMA) Dehradun. The officers are trained at the Infantry School, Mhow, the Defence Service Staff College, Wellington and at the Army War College, Mhow. In addition, Indian Military Training Team (IMTRAT) with Headquarters (H.Q.) in Haa District of Bhutan, which is adjacent to Tibet's Chumbi valley. Maha is not only Bhutan's main development partner but also its leading and largest trade partner.

(b) Construction of Roads

As we know that roads construction in mountainous terrain is very difficult. In India, border roads development organization has gained valuable experience in this field. India's Border Road organization called Project DANTAK in Bhutan. Project DAHTAK a part of the organization has rendered good service in Bhutan by construction over 1000 km of roads in inhospitable mountairous terrain. India is not only Bhutan's main development partner but also its leading trade partner. A free trade regime exists between India and Bhutan.

(c) Flushing out of Militants from Bhutan

In the year 1996, illegal presence of militants camps using Bhutan as a base and hideout, while rebelling against the Indian Government got confirmed. Bhutan understood the potential danger. Over the last decade or so, the illicit establishment of campus by the ULFA, NDFB and KLO militant outfits the done jungles of South-east Bhutan. In addition to hampering businesses and the implementation of development barbarities in many parts of the country. The presence of these militants was a potential cause of affecting the friendly relations by Bhutan and India.

India has warm and cordial ties with Bhutan, which are founded on mutual trust and understanding, shared interest and extensive co-operation in areas such as power, transport, communications infrastructure, education, information technology, industry, medicine and agriculture. India is committed to assist the Royal Government of Bhutan in its socio-economic development. Mutually beneficial economic inter-linkages between India and Bhutan have been an important element in our bilateral relations. India continues to be the largest trade and development partner of Bhutan. Indo-Bhutan relations are also prominent in other areas such as education and culture where there is a high level of interaction.

While India and Bhutan share an extraordinary warm friendship, issues such as the state of relations with China continue be a cause of some concern to both countries. The illegal presence of militants using Bhutan as a base and hideout while rebelling against the Indian government resulted in the Bhutanese army taken military action to flash out the insurgents.

BHUTAN AND CHINA RELATIONS

China and Bhutan have not established diplomatic relations yet, but they enjoy friendly relations. Bhutan has time-honored historical relations with China and China's Tibet in particular. On December 8, 1998. The two government signed the agreement on maintaining peace and tranquility in the somo-Bhutanese border areas. China has cultivated strong relations with India's immediate South Asian Association for Regional Co-operation (SAARC) neighbours, the salient ones being.

· Bilateral ties with China account for 25 percent of Myanmar's total trade and China is developing an oil pipeline through Myanmar to obtain direct transport access to the Bay of Bengal.

· In Bangladesh, China has developed a container shipping facility at Chittagong.

· Pakistan remains under China's economic and military umbrella, the latter having provided the former with nuclear technology ballistic missiles, aircraft, complete weapons systems while China is currently developing a port at Gwadar, Pakistan, on the Arabian Sea.

· In Nepal, with recent rise to power of Maoists, increased ties with the People's Republic of China (PRC) are anticipated through economic and military cooperation and perhaps even an extension of the Qinghai-Tibet railway from Lhasa to Kathmandu.

- Sri Lanka has received Chinese assistance in the development of its Colombo and Hambantota Ports and a weapons arrangement between the two countries involving the Chinese construction and weapons producer, Norinco.

It is feared that expanding Chinese influence - initially economic and perhaps thereafter military- in other South Asian countries such as Bhutan and Maldives, at present firmly in New Delhi's sphere of influence, will shift the regional balance of power out of India's hands.

Perception of China's malicious intentions and its emerging capacities has brought about the "String of Pearls" theory. As Christopher Pehrson of the US Army War College writes,

> The "String of Pearls" describes the manifestation of China's rising geopolitical influence through efforts to increase access to ports and airfields, develop special diplomatic relationships, and modernize military forces that extend from the South China Sea through the Strait of Malacca, across the Indian Ocean, and on to the Arabian Gulf. A question posed by the "String of Pearls" is the uncertainty of whether China's growing influence is in accordance with Beijing's states policy of "peaceful development," or if China one day will make a bid for regional primacy.

Reports of China building and strengthening its existing infrastructure in Tibet continue to flow in regularly. The latest is that China is building 24 new project along its side of the Brahmaputra river. While China has constructed a vast network of a roads, tunnels, railways and airfields that enable mass rapid movement of troops to the border, the picture on the Indian side continues to be dismal, which is traught with strategic and tactical disadvantages.

China is engaged in building its comprehensive National power encompassing economic and military development, which would enable her to play a dominant role in global affairs. With faster economic technological and military modernisation, China is likely to become more aggressive and be in a position to create pressure point on the border and other strategic issues.

CONCLUSION

Bhutan-China relation are improving in 1998, China and Bhutan signed a bilateral agreement for maintaining peace on border. In the agreement, China affirmed its respect for Bhutan's sovereignty and territorial integrity and equitable solution to the border question. The two countries have had sound cooperation in international affairs. Since 1995,

confronted with the pressure from the West, Bhutan has supported China for 5 consecutive years in upsetting the anti-China motions at the UN conferences of human rights. It also supported China's stance on Taiwan question by opposing Gaoxiong to host 2002 Asian Games. As Vice-Chairman of the 55th UN General Assembly, Bhutan supported China in rejecting the so-called Taiwan's participation motion in the UN.

China and Bhutan planned develop more economic and trade relations. Himalayan kingdom of Bhutan and the People's Republic of China have conducted regular talk on border and security issues. On December 1, 2000, the two governments reached agreement on retaining Bhutan's honorary consulate in Macao special Region through an exchange of letters. China is wooing Bhutan to consolidate her strategic influence in South Asia. Bhutan has to tread cautiously to retain balance in keeping with her overall national interests. Bhutan maintaining friendly relations with China without undermining its own relations with India is a challenge that deserves careful consideration.

REFERENCES

1. Rastomji, Nari (1978) Bhutan: The Dragon Kingdom in China, New York.
2. Ram Rahul (1983) Royal Bhutan, New Delhi.
3. Ravi Verma (1988) 'India's Role in the Emergence of Contemporary Bhutan', New Delhi.
4. Olschak, C. Blanche (1971) Bhutan : Land of Hidden Treasures, New Delhi.
5. Mishra and Ghosh. Terrorism and low intensity conflict in South Asian Region.
6. Maj Gen Y.K. Gera (Retd.) 'Development in Bhutan' USI Journal, June-September, 2008.
7. Prabhakaran Paleri (2008) National Security, New Delhi.
8. Hli (2009) China-India Relations, New Delhi.
9. Neil Padukone (2010) Security in Complex Era : Emerging Challenges Facing India, New Delhi.
10. Lyonpo Dago Tshering, Indo-Bhutan Relations.
12. Tashi Chodan, 'Indo-Bhutan Relation Recent Trends', Centre for Bhutan Studies, Thimpu.
13. Annual Report 2009-2010, Ministry of Defence Government of India.
14. Maj Gen Raj Mehta (Retd.) Infrastructure Cauldron on the Eastern frontier. The Tribune, Dec. 24, 2010.
15. Gen. V.D. Malik (Retd.) Focus on Reform, refurbishment. The Tribune, Sunday, January 9, 2011.

FINANCIAL AND ECONOMIC CRISIS : SOME THEORETICAL ASPECTS

-Dr. Rajesh Kundu
Assistant Professor
Department of Economics,
Govt. P. G. College, Hisar (Haryana)

These are exceptional times. Exceptional for what has happened to financial markets – it can be termed as a meltdown. The **Great Depression** of the 1930s is worth studying in the first place purely for historical interest. Then 2008 as financial meltdown and economic crises became amongst the most frequently used words in the world.

An important aspect of the **Great Depression** of 1930s deserves mention. It was virtually worldwide. To some extent, this was the result of the collapse of the international financial system. It also resulted from the mutual adoption of high tariff polices by many countries. The experience of the thirties varied internationally. Sweden suffered its depression in the twenties and benefited from expansionary policies in the thirties. The Britain's economy too suffered more in the twenties than in the thirties. China escaped the recession until after 1931 essentially because it had a floating exchange rate. Moreover, in United States GNP fell below its 1929 level in 1930 and stock prices 1932 were one third their 1929 level.

As is often the case, there is disagreement among economists with regard to **Great Depression**. Lord Keynes has written his famous books on **The General Theory of Employment, Interest and Money** (1936) after the **Great Depression** of the 1930s. Keynes's favoured public investment to overcome depression and to attain full employment. Though he said that the role of public investment was to supplement private investment. Yet public investment has tended to replace private investment to a large extent.

The main thrust of Friedman and Schwartz argument related to the question of - could depression had been avoided ? Particularly in 1930 the monetary policy would have prevented the depression while others blamed reduction in consumption rather than investment in this particular phase. Peter Temin in a book entitled **Did Monetary Forces Cause** the **Great Depression** (1976) suggested that better policy, monetary and fiscal would have made the depression much less severe.

THE FIRST GLOBAL FINANCIAL CRISIS OF THE 21ST CENTURY

The year 2008 saw the emergence of a global economic crisis. The crisis originated in the USA which was considered to be the strong pillar of world capitalism. The disintegration of the Soviet Union and the collapse of the Berlin wall had become the symbols of the collapse of communism. It is now being talked about the new crisis which will lead to the collapse of world capitalism.

The present financial system is much different from Keynesian times. Financial instruments have been completely revolutionized in 21st century. Now the government do not have the same level of control and domination in financial sector as was available in Keynesion Era. Economists have offered different views about how financial crises develops and how it can be prevented.

Economists have given **random walk hypothesis** as a general basis for present crises of global financial markets. According to this hypothesis, changes in stock prices look erratic, like a random walk of a drunkard over a time. The current price of a stock fully reflects new information. Although some information is expected but much of its unexpected. On some days, it is good and on other day, it is bad. This unexpected or unpredictable information follows a random walk.

Day after day we are getting news of business collapse, rising unemployment and price rise in the US economy. Next to the United States the region most affected is Europe. In Europe too there have been financial crises. In fact the whole of the western world and Japan is today in the grip of a recession.

Since the outbreak of the crisis, it appeared that the emerging Asian countries especially the China and India would not only remain relatively affected but also play a role in moderating the global crises and paving the ways for a worldwide recovery in a short spam.

Decoupling proponents believe that the rest of the world will continually become less dependent on the U.S.A. and other advanced countries. They basis their theory on the idea that consumption level in the rest of the world will eventually rise to a level where it can replace any consumption fall off from the U.S.A.

The global economy is today facing unprecedented crisis with falling production and job losses. Mostly developed industrialized countries are already in the grip of recession and economic stability is a question. The state's direct intervention in the economy is in direct opposition to the ruling economic philosophy of free market economy.

The current global financial crisis requires a much better understanding of appropriate policy responses. First, how developed countries can minimize their financial losses. Second, which type of monetary policy is required? Third, there needs to be understanding of financial stability and how cross-border cooperation can help to provide the public good of international financial rules and systems.

The message conveyed by the United Nations World Economic and Social Survey (2008) is that markets cannot be left alone to deliver the appropriate and desired levels of economic security. Against the growing backdrop of increasing economic and political insecurity in interval Europe, John Maynard Keynes called for new policies and new instruments to adapt and control the working of intolerably economic forces, so that they do not interfere with contemporary idea as to what is fit and proper in the interests of society.

The present crisis is global in character and concerted action by all countries of the world is necessary to find solution to it. The crisis is likely to be prolonged and the western world is destined to a long spell of economic stagnation. Growth rates in the developing countries will also decline. Unemployment rates the world over is destined to rise. In India, while layoffs are not expected to occur on a large scale there will certainly be a strong impact on creation of new jobs and employment.

The economic reforms, introduced in India in recent years. Have strengthened her economic system and this is one of the reasons why the country is able to withstand the present world economic crisis. In many developed countries including the USA the regulatory mechanism in the financial sector needs to be strengthened to prevent a repetition of an economic crisis. Our own banking system is well capitalized and as a result of the reforms undertaken in recent years have low levels of non performing assets which make them capable of withstanding the present turmoil in the world financial markets.

In sum, what the world needs is a more integrated approach (Policy approach) to the challenge of economic insecurity especially in financial markets, redistribution measures and improve risk management techniques to better cope with the consequences of shocks and crisis.

REFERENCES

1. Bill Emmott, **Switching to Keynes, Business world**, (Dec) (2008).
2. **Business Standard** 18/19 Oct. (2008)
3. J. M. Keynes, **The General Theory of Employment**, **Interest and Money,** (1936)
4. **The Economist**, **The Decoupling Debate** (March) 2008.

SPORTS INJURIES AND ITS PREVENTION

-Dr. Naman Yadav
Assistant Professor
Department of Physical Education
V.S.S.D College, Kanpur

Introduction

Attention towards sports injuries and its prevention is of great importance now a days. In last several years, sports have received a lot more attention and scrutiny so much so, that rules in certain games are changing and laws are being implemented to keep athletes of all ages and skills safe. We all know that it is impossible to get rid of injuries in sports, the only thing which we can do is to minimize the injuries for which coaches, parents and athletes need to learn about the injuries to prevent injuries and make the best decision if an injury does occur. Here is some basic must know information:

Sports injury- Any stress or strain on any muscle, joint and or bone to an athlete on and off the ground is known as sports injury.

Sports Injury can be divided into three parts-

A) Soft Tissue Injuries- i) Macro-trauma ii) Micro-trauma

B) Hard Tissue Injuries C) Dislocations

A. Soft Tissue Injuries- It consists injuries to muscle, tendon and ligaments

i) Macro-trauma- It is usually acute injury in which a single traumatic event causes the injury to a previous healthy tissue or sudden damage to a tissue. Under Macrotrauma we can include injuries like:

a) Sprain- Injury to ligaments

b) Strain- Injury to muscle and tendon

c) Contusion- Severe blow on the muscle lead to contusion

d) Laceration- Injury due to blunt object and it tears the skin

e) Incision- Injury due to sharp object

f) Abrasion- Skin is scrapped due to friction

ii) Micro-trauma- It is the over use injury due to repeated sub-maximal trauma. These injuries occur and worsen over time and are often caused by repetitive exercise activities, such as running, exercising on treadmills, cycling, serving in tennis and throwing. Eg.- Tendinitis- inflammation of tendon caused by repetitive stretching or over-loading.

B) Hard Tissue Injury- It is commonly known as fractures. Fracture is defined as discontinuation of bone. Common type of fractures are-

i) Simple Fracture- Bone breaks but the skin over it does not.

ii) Compound Fracture- Both the skin and bone breaks

iii) Multiple Fracture- More than one break in the bone

iv) Comminuted Fracture- Bone is broken in several small parts

v) Complicated Fracture - Break in ribs and piercing the internal organs

vi) Impacted Fracture- Bone is broken and is driven into the other bone.

C) Dislocations- It occurs when the displacement of a bone from its normal position in the joint.

Treatment of the Injuries—Treatment depends upon the degree and type of injury which is as follows:

A) Non-Surgical B) Surgical C) Physiotherapy Rehabilitation

Prevention of injuries-

Following are some general rules for injury prevention no matter what sport you play. While it is impossible to prevent every injury, research suggests that injury rates could be reduced by 25% if athletes took appropriate preventative action, including:

1. **Be in proper physical condition to play a sport.**

   Keep in mind the weekend warrior has a high rate of injury. If you play any sports, you should adequately train for that sport. It is a mistake to expect the sport itself to get you into shape. Many injuries can be prevented by following a regular conditioning program of exercises designed specifically for your sport.

2. **Know and abide by the rules of the sport.**

   The rules are designed, in part, to keep things safe. This is extremely important for anyone who participates in a contact sport. Rules of conduct, including illegal blocks and tackles are enforced to keep athletes healthy. Know them. Follow them.

3. **Wear appropriate protective gear and equipment.**

   Protective pads, mouth guards, helmets, gloves and other equipment is not for sissies. Protective equipment that fits you well can safe your knees, hands, teeth, eyes, and head. Never play without your safety gear.

4. **Rest.**

   Athletes with high consecutive days of training, have more injuries. While many

athletes think the more they train, the better they'll play, this is a misconception. Rest is a critical component of proper training. Rest can make you stronger and prevent injuries of overuse, fatigue and poor judgement.

5. **Always warm up before playing.**

   Warm muscles are less susceptible to injuries. The proper warm up is essential for injury prevention. Make sure your warm up suits your sport. You may simply start your sport slowly, or practice specific stretching or mental rehearsal depending upon your activity.

6. **Avoid playing when very tired or in pain.**

   This is a set-up far a careless injury. Pain indicates a problem. You need to pay attention to warning signs your body provides.

   Research provides us with helpful clues about the cause of sports injury. There are two factors that outweigh the rest when it comes to predicting a sports injury. They are:

   Having a history of injury. Previous injuries to a muscle, or joint tend to develop into chronic problem areas for many athletes. It is extremely important to warm up, and stretch previously injured parts.

   A high number of consecutive days of training. Recovery days reduce injury rates by giving muscles and connective tissues an opportunity to repair between training sessions.

Conclusion:

Finally it is concluded that members of the medical profession, in particular those involved with sports injuries (and in broader context with sports medicine), have a responsibility to advise both sports groups and individuals on aspects of prevention of injury resulting from sport. Such advice may offered at all levels, with the recipients ranging from sports governing bodies on the one hand to local sports clubs and individual sports participants on the other. Thus we can say, "Prevention is better than Cure" an old proverb may help us to minimize the sports injuries.

References

* American Academy of Orthopaedic Surgeons Public Information
* **Web:** http://www.aaos.org/wordhtml/home2.htm
* March 2000
* Hutson M. Sports injuries recognition and management, 3rd edition pub. united states by oxford university press, Newyork 2001
* Webb G. Sports injuries: diagnosis and management, pub. Saunders 1990

WOMEN POLITICS- REDEFINING AGENDA

-Dr. Deepshikha Chaturvedi
Associate Professor
Deptt. of Political Science
D.A.V. College, Kanpur

Women politics is the most significant feature in Indian politics. Women are the pivot around whom the family, society rather the whole humanity moves. Thus their role in directing and shaping the destiny of the nation is crucial. With the advancements of the science and technology the world has moved at a faster pace. Women have to assume a dynamic role in the changing context. For their participation in national life, it is necessary that women should occupy positions at the decision making, policy making and planning levels. Political participation of women at all levels is necessary to create equalitarian society in India.

Women comprise about 50 percent of country's population. However, they are the biggest debarred group roughly in all facets. The male is denying their rights and liberties. Due to the male domination of Indian society , their social, economic and political status behind comparatively stumpy. From time immemorial, they have been classified in all activity of life and regarded as “second class citizen”. Woman have long been a suppressed group. In all sphere of life men have systematically dominated them. The subjugation of women by men is not confined only to developing countries. This is also present through to a lesser degree in most developed countries. Women's liberation *move*ment has gained some momentum in western countries. Their spill over effect in developing countries does not appear to be significant. It is thus apparent that the level of development of country is correlated with the status of women in their country. The nature of women participation in politics is greatly affected by the level of development of a country. Further, the socio-economic status of a woman tends to affect her political participations.

Indian history provides a few examples of Indian women having excellent as ruler and statesman. But by and large, our women used to fight taking part in politics. In fact, political participation by then started during the Indian freedom struggle. Mahatma Gandhi was a strong advocate of female participation in politics. As Mahatma Gandhi stated “As long as women of India do not take part in public life their can be no salvation of the country.” He further added ,”As long as…. Women do not come to public life and purify it…we are not likely to attain swaraj.” Our independence movement produced some eminent women leaders like Annie Basant, Sarojini Naidu, Durg Bai etc.

The question of women representation in politics in all over the world began to assume importance since 1975 when united nations declared the decade as the "**Women's Development Decade**" and adopted some resolutions for women's empowerment. The Nairobi conference called on the participating nations to take steps for ensuring women participation in politics. The debate was at the centre in the international arena in 1994 UN conference in Cairo, at UN's fourth international conference.

After independence in India the system of democratic setup with liberal principles of the nation's philosophy in all areas of activity have been adopted under such a principle of destiny of women has begun to alter male domination to greater emancipation. The present socio-economic status of Indian women is not favorable for the successful involvement in political affairs. Women are politically not dynamic and do not offer to involve herself in the public affairs. Political equality is meaningless without social and economic equality . Aside from these , Women experiences from traditional attitudes, which made them to be aware of that they are unequal. A better social, economic and political condition of women is indispensible for political involvement . Those who have powers , material knowledge , resources are in a position to involve in the decision making process. Political empowerment of women is the determining factor for development and nation building. Our Development has become loop side due to denial of opportunities to women to participate in the many spheres of life.

The Indian women are now standing at the crossroads of their destiny. There has been tremendous urge among them for empowerment , development and emanicipation in all spheres of life. They are considering the space now they occupy in politics as the space in development . They are equipped to play their role in the society as equal partners with men. They are prepared to take up any responsibility or challenge and convert these challenges and responsibilities into opportunity. The world over the participation of women in political decision making is still a symbolic one. From India to England the percentage of women in the parliament is seven to nine.

The committee on the status of women in India in its report(1975) recognized the problems of women in India and suggested some means for their advancement . The Indian government in its national Perspective Plan for women (1988) envisaged political and economic emancipation of women, and aimed at restoring to women their rightful place in society.

India's record on women in politics is never encouraging. The post independence India created a new political order in which the constitutional infrastructure opened up equal

political opportunities for all. But despite the constitutional promise of a political atmosphere free from discrimination of any kind, there exists a gender discrimination, legally invisible though, in the realm of politics, largely because of the continuation of the inbuilt inhibitions of the Indian patriarchal society. Politics has traditionally been viewed as a male preserve. Women still face many difficulties and obstacles in their fight for representation. The material circumstances of their upbringing have made their choices for them and inhibited their Participation in formal politics. Woman's cultural socialization and the fear of unsettling the family and their position in it have also lessened many women's desire to participate in politics.

Rapid expansion of communication, education industrialization and urbanization seems to have brought about some changes in the attitude and outlook of Indian women. They have to some extent been modernized. But they have been fully free of the cultural values and more of Indian. Empirical evidence suggest that Indian women in general one political much less active than Indian men. The spread of literacy and mass communication motivate women to be interested and active in politics these forces tend to stimulate their political awareness.

The strengthening of women's participation in politics has become a major issue in the discourse of economic and social development in the last decades virtually every international and bilateral development agency has proclaimed policies to integrate women better into economic and social process. The promotion of women in politics however, especially if it is supposed to be implemented through affirmative action is still contested. This is in spite of the fact that women from around 50 percent of total world population share a considerable laws presence in elected political bodies.

The empowerment and autonomy of women and the improvement of women's social, economic and political status in essential for achievement of transparent accountable government, administration and sustainable development in all area of life. In every society, there are powerful and powerless groups. Power itself can be simply defined as control over resources and control of ideology and it is exercise through a series of order or decision making capacity.

The traditional working pattern of many political parties and government structures continue to be barriers women's participation in public life. Women may be discouraged from seeking political office by discriminatory attitudes and practices family and child-care responsibility and the high cost of seeking and holding public office.

Women in politics and decision – making positions in government and legislative bodies contribute to redefining political priorities placing new items on the political agenda

that reflect and address women's gender – specific concerns values and experiences and providing new perspectives and mainstream politics issues.

Political status of women can be defined as the degree of equality and freedom enjoyed by women in the shaping and sharing of power and in the value by society to this role of women. The Indian constitution guarantees political equality through the adult franchise and the right to equality which prohibits discrimination on the ground of sex. The equal political status will not be realized by mere declaration in the constitution.

Voting in the election does not bestow equal status. If adequate opportunities to take part in the deliberation of the nation are not provided participation has no meaning. The socio-economic conditions are not conducive for the effective participation of women in political affairs. Political equality is meaningless in a country where the mass of the population suffers from poverty, illiteracy, inequality of class status and power. Apart from these, women suffers from traditional attitudes, which made them to feel the they are unequal.

The political background of women show that they are far away from and equal status along with men. Women are politically not active and do not come forward to participate in the public affairs. The organization exercise of franchise discussing politics etc. explains the political profile of the women.

The problem of equal status and equal status and equal participation must be understood in the context of society in a traditional society like Indian the participation of women in public life is not encouraging since women are keeping low profile as far as political life is concerned.

Though women become member of political parties their percentage is very low when the question of closeness to political patties comes there also the picture is not too encouraging since women are keeping the part played by women in other social actives is minimal.

Women's representation have not excluded eight percent any time in parliament. The Indian state has attempted to reduce this gap by the method of reservation at the local level bodies of self governance *i.e.* Panchayas through constitution (73^{rd} Amendment Act, 1992) and through the 81 Amendment bill and Reservation of Women in parliament and Legislature women face when functioning a male dominated public forums, constraints that the result both from initial handicaps that women suffer because of their social conditioning and from male responses to their presence on those bodies pressures to prove themselves and

constraints that emerge from their class and caste position. Lack of proper education and necessary orientation also serves as hurdle for their effective functioning.

Social obligation, and traditional control of womenfolk by family members and their commitment to household work also serve obstacles in permitting the women representatives to function effectively.

Hence the need of the hour to empower womenfolk is to provide necessary political education and proper orientation. Further political will and the part of administrators to contain male domination and enlarge avenues for the women just by negating gender weakness may help to a large extent in the empowerment of women.

Women should realize their potent power which is quite latent for long. They must be required to see themselves and their rights in a new way and they must be helped to help themselves.

Women will need to work persistently and consistently at the national, State District and village levels to understand the Policy process make them head of the relevant bodies and monitor the adopted plans. Further empowerment is about choices and the ability to exercise them. Women's choices will be limited unless they are more involved in policy making.

Conclusion

Women's group and women's movement have approached the state and pressurized it to frame pro women policy while the state has framed seemingly pro women policies these have actually helped to break sexual stereo type and male dominance either of these policies has been able to achieve the objective of equality and development.

References :

"The Women's Decade –I " in The Statesman, Neerja Choudhury. , Calcutta, 18, September, 1985 Forward Looking Strategies for Advancement of Women to the year 2000 A.D.,

Report of the Nairobi World Conference, July 1985

Women Political Elites : Search for Identity Sushila Patri, (Jaipur: Printwell, 1994)

Women Empowerment , R.L Panigrahi and D.Bhuyan,(2006)

Women in Politics, Dasarathi Bhuyan, (2008)

Women and Empowerment, SushmaSahay,(1998)

Women In Politics , Jane S. Jaquette, (N.Y .:John Wiley and Sons,1979)

IMPERATIVES OF SUSTAINABLE DEVELOPMENT IN DEVELOPING COUNTRIES

-Dr. Rajshree Chaturvedi
Assistant Professor
Department of Political Science
DAV College Kanpur.

In almost every domain of human life , change is accelerating . This is true wherever we look, in the ecological, economic, intellectual, political, professional, psychological , social or technological aspects of our lives. Along with other changes , human aspirations are growing at an accelerating rate it is not just that change is fast; it is getting faster and faster. The burden of this growth will fall largly on the poorer countries . In the current projections for the thirty year period 1989 to 2025 , both the population of low income countries ,and those of middle income countries, are expected to rise by more than three quarters.

World's people living in less-developed countries and one-fifth below the poverty line. The long-term impact of past industrialization, exploitation and environmental damage cannot be wished away. It is only right that development in this new century be even more conscious of its long-term impact. The problems are complex and the choices difficult. Our common future can only be achieved with a better understanding of our common concerns and shared responsibilities.

Following are some perspectives and approaches towards achieving a sustainable future.

Poverty and a degraded environment are closely inter-related. The survival needs of the poor force them to continue to degrade an already degraded environment. Removal of poverty is therefore a prerequisite for the protection of the environment.

Diversion of common and marginal lands to 'economically useful purposes' deprives the poor of a resource base which has traditionally met many of their sustenance needs.

Market forces also lead to the elimination of crops that have traditionally been integral to the diet of the poor, thereby threatening food security and nutritional status.

Literacy and a basic education are essential for enabling the poor to access the benefits offered by development initiatives and market opportunities. Basic education is therefore a precondition for sustainable development. A sizeable proportion (about 60 per cent according to some estimates) of the population is not integrated into the market economy. Ensuring the security of their livelihoods is an imperative for sustainable development.

Changing Patterns of Consumption and Production

With increasing purchasing power, wasteful consumption linked to market driven consumerism is stressing the resource base of developing countries further. It is important to counter this through education and public awareness.

Several traditional practices that are sustainable and environment friendly continue to be a regular part of the lives of people in developing countries. These need to be encouraged rather than replaced by more 'modern' but unsustainable practices and technologies. Development decisions regarding technology and infrastructure are a major determinant of consumption patterns. It is therefore important to evaluate and make development decisions which structurally lead to a more sustainable society.

Managing the Natural Resources for Economic and Social Development

The integration of agriculture with land and water management, and with ecosystem conservation is essential for both environmental sustainability and agricultural production. An environmental perspective must guide the evaluation of all development projects, recognizing the role of natural resources in local livelihoods.

Water governance arrangements should protect ecosystems and preserve or restore the ecological integrity of all natural water bodies and their catchments. This will maintain the wide range of ecological services that healthy ecosystems provide and the livelihoods that depend upon them.

Biomass is, and will continue for a long time to be, a major source of fuel and energy, especially for the rural poor. Recognizing this fact, appropriate mechanisms must be evolved to make such consumption of biomass sustainable, through both resource management and the promotion of efficient and minimally polluting technologies, and technologies which will progressively reduce the pressures on biomass, which cause environmental degradation.

The traditional approaches to natural resource management such as sacred groves and ponds, water harvesting and management systems, etc., should be revived by creating institutional mechanisms which recapture the ecological wisdom and the spirit of community management inherent in those systems.

Health issue and Sustainable Development Human health in its broadest sense of physical, mental and spiritual wellbeing is to a great extent dependent on the access of the citizen to a healthy environment.

Access to safe drinking water and a healthy environment should be a fundamental right of every citizen.

Basic health and educational facilities in developing countries need to be strengthened. The role of public health services must give preventive health care equal emphasis as curative health care. People should be empowered through education and awareness to participate in managing preventive health care related to environmental sanitation and hygiene.

Most developing countries are repositories of a rich tradition of natural resource-based health care. This is under threat, on the one hand from modern mainstream medicine, and on the other from the degradation of the natural resource base. Traditional medicine in combination with modern medicine must be promoted while ensuring conservation of the resource base and effective protection of IPRs of traditional knowledge.

Means of Implementation

Finance

Overseas Development Assistance (ODA) is declining. The commitments made by industrialized countries at the Earth Summit in Rio a decade ago remain largely unmet. This is a cause for concern which has been voiced by several developing countries. Industrialized countries must honour their ODA commitments.The new instruments and mechanisms, e.g., the Clean Development Mechanism, that are trying to replace ODA need to be examined closely for their implications for the developing countries. In view of the declining trend in ODA, developing countries must explore how they can finance their sustainable development efforts, such as by introducing a system of ecological taxation.

Trade

Trade regimes, specifically WTO, are sometimes in conflict with sustainable development priorities. Imperatives of trade, and the concerns related to environment, equity and social justice however need to be dealt with independently.

Environmental and social clauses which are implicitly or explicitly part of international agreements must not be used selectively to erect trade barriers against developing countries.

Developing countries will suffer a major trade disadvantage if the efforts to put in place globally acceptable Process and Production Methods (PPMs) are successful. Instead, existing disparities between the trade regimes and multilateral environmental agreements, such as those between Trade Related Intellectual Property Rights (TRIPS) regime and the Convention on Biological Diversity (CBD), should be thoroughly addressed. Mechanisms to resolve such conflicts between multilateral agreements should be set up.

Technology

Mechanisms must be put in place to make available to developing countries the latest technologies at reasonable cost.

Local innovations and capacity building for developing and managing locally relevant and appropriate technologies must be encouraged and supported.

Science and Education

Basic education which promotes functional literacy, livelihood skills, understanding of the immediate environment and values of responsible citizenship is a precondition for sustainable development. Such education must be available to every child as a fundamental right, without discrimination on the basis of economic class, geographical location or cultural identity.

The empowerment of women and girls must be supported by actions to improve their access to basic and higher education, training and capacity building. The emphasis should be on gender mainstreaming.

Population

The official realization, that population is not merely about numbers but about the health and quality of life of people in general and women in particular, must be reinforced and sustained by an informed debate to bring key population issues into ever sharpening perspective at various levels of policy making from the national and state legislatures to local government institutions.

An important part of empowering women in matters pertaining to population, is toexplicitly recognize and respect their rights over their bodies and their reproductive behaviour. This recognition must permeate society in general, and religious, judicial and law-enforcement institutions in particular, through continual campaigning and dialogue.

References

1. Conway and Barbier, E.B. 1990, after the green Revolution : sustainable agriculture for development Earthscan.
2. Corbett, J. 1988 , ' Famine and household coping strategies', World development , Vol 16 no. 9, pp 1099-1112.
3. Dreze, J. and Sen , A., 1989,'Public action for social security : foundation and strategy' DEP No 20,
4. Lele and S.M. 1991,' Sustainable development : acritical review' World Development vol 19 no. 6, pp 607-621.
5. Mishra, P.R. and Sarin , M.,1988,'Social security through Social fencing , Sukhomanjari and Nada .

INDIA'S INTERNAL SECURITY : NEEDS AND CHALLENGES

Dr. Vinod Mohan Mishra
Assistant Professor (Senior Grade)
Department of Military Studies,
D.A.-V College, Kanpur

Dr. Ram Tiwari
Assistant Professor
Department of Defence & Strategic Studies
V.S.S.D. College, Kanpur

The internal security problems should not be merely law and order problems. They have to be dealt with comprehensively in all their dimensions and at all levels - political, economics and social. They are interlinked. At times, the required measures will conflict with each other. Going too far in one direction could be counter-productive. The security requirements have to be met, but that does not mean the security agencies a free hand. Striking the right balance is the key to success in meeting these challenges effectively. We need a comprehensive security policy that will be implemented effectively at all levels.

Security is not a luxury and is not merely a function of the state : it is a way of life. India has to and can overcome the general inability of democracies to put together the political well, the resources and the strategies that are necessary to prevail over all internal security threats. Real reforms that would remove of minimize economic and religion / caste based inequalities, good and honest governance and effective policing are pre-requisites for the marshalling the total resources of the nation in there efforts. The Government of India should also be prepared to lower the threshold of tolerance in relation to cross-border terrorism and to serve credible notice that India has capacities and the determination to inflicts prohibitively high and unacceptable cost on the state sponsors of terrorist acts against Indian interests.

A majority of India's farmer have been facing severe economics due to various factors, including globalization, credit crunch, non inclusive economics progress etc. It would not be difficult for the Maoists to project themselves as the sloe protectors of the poor farmers interests and the militant way as the only viable redresses procedure available top them. Some recently announced relief measures, including the 'revolutionary fern loan waiver scheme, are very welcomes steps, but they should be the begging and not the end of the many measures necessary to retrieve the poor farmer form the potential embrace of Maoists. The perception of imbalances subsidies, which is also major source of alienation, needs to be overcome by introducing a more rational system.

India was partitioned in the backdrop of large scale communal riots but the partition of the country on religious lines, without taking into consideration its multiple identities

instead of bringing the communal tensions down, in fact, worsened the situation. The two nation theory created Pakistan and it still survives on this theory. Pakistan finds it difficult to accept the reality that India continues to be as democratic plural, multi religious society and that India today as more Muslim citizens than Pakistan. The Government of Pakistan has taken upon itself the responsibility of not only protecting its own citizens, but also the Indian Muslims. The power structure in theocratic Pakistan dominated by the army, the feudal landlords, the bureaucracy and the religious leaders has been able to retain its hold over the levers of power by playing the anti India and Islamic cards. Pakistan plays the Islamic card in its foreign policy also. It misses no opportunity to club India as an anti Islamic country where Muslims are not safe. The continuing tensions between India and Pakistan have a direct bearing on the internal situation in India. They have further complicated the internal security situation.

The management of Internal security, therefore, assumes great importance. If the internal security issues are tackled effectively, subversion by the external forces to that extent becomes more difficult. Unfortunately the rise of contentious politics based on sectarian, ethnic, linguistic or other divisive criteria, is primarily responsible for the many communal and secessionist movements flourishing in India. The Presence of hostile neighbors enables the internal conflicts to get external support, which includes money, arms and sanctuaries. The vested interests exploits these conditions to pursue their own agenda.

In a well established political system and a developed economy, conflicts between the various group identities are kept under check as in due course they get assimilated into the national identity. But that has not happened in India as yet where the wounds of the partition and the colonial rule have still not fully healed. Moreover, the dependence on the government by a large section of our people for their very survival sharpens these conflicts among them. The democratic institutions and the state structure are still not strong enough to fully harmonize these conflicts in a peaceful manner. Violence erupts when conflicting interests cannot be consensually reconciled. The hostile external forces, taking advantage of this situation through subversive propaganda, further accentuate these conflicts. They give material and ideological support to aggravate this sense of grievance to such an extent that a small minority are willing no become rules in their hands no subvert the stability and security of the country.

In addition, a number of secessionist and the so-called revolutionary movements are operating in India today. Their goal could be to overthrow the government and bring about revolutionary changes in the structure and functioning of the state, or even secession from the Indian Union. Ever since independence, India has been facing all types of violent conflict based on religion, caste, language, ethnicity and regional loyalities Political insecurity

further compounds the problem. Preoccupied with the problem of survival, the governments in some of the most affected states are not looking at the problem from a long term perspective. They have bought temporary peace by compromising with the subversive forces. Such shortsighted policies can have disastrous consequences in the long run. Instead of effectively dealing with them in the initial stages when the problem is manageable, they have allowed with these anti national forces to take roots and spread their tentacles far and wide. When a state government is unable to effectively deal with them, instead of strengthening the state policy machinery, it rushes to the Centre to hand over its responsibility at the first sign of any serious trouble. It is not surprising that in these states some sections of the police have actually joined hands with the subversive forces against the central forces. If you cannot fight them join them. Finding themselves at the mercy of these subversive forces, the people tend to change sides and start supporting them instead of supporting the security forces. It would be wrong to assume that all those supporting directly or indirectly, these forces are sympathetic to their ideology. Far from it! For most of them, preoccupied with the daily battle of survival, this the obvious choice, because the police are unable to protect them. Polarizations on caste and religious lines can further reduce the credibility of the police in the minds of the people.

The police politician criminal nexus can embolden the criminal elements. Their activities can create an environment of lawlessness, where influential and rich people Violate the law with impunity. The police is not the only component of the criminal justice system that has suffered because of these nexus. In fact, the entire criminal justice system is under strain. Not all crimes are being registered and those registered are not being properly investigated and even out of those charge sheeted, very few are ending in conviction. The conviction rate in case of heinous crimes is steadily falling. In some North Eastern state is has reached almost zero level. Where the police have stopped even submitting the charge sheets in the insurgency related cases. When the fear of legal punishment disappears organized crime find it convenient to spread its tentacles. The crime syndicates are finding the new communication and information technology very useful. Extortion and payment of the so called protection money is more widespread than we would like to believe. According so some reports direct extortion form the government funds runs into hundreds of corers of rupees. Many of insurgent and militant group are not driven by ideology, but by sheer greed. Money power is bigger motivating factor than ideology. Vested interests have developed around these group with active connivance of corrupt politicians, police officers and civil servants. Some politicians even take their assistance during election times. They have to

return their favors, when they come to power. This mutually beneficial relationship has seriously damaged the quality of governance in the areas. The real losers are the people. The development process gets seriously hampered in a violent environment. When large development funds are siphoned by this unholy alliance between the criminal and corrupt forces, even the delivery of the most basic services like water, power healthcare, education and communication becomes a stupendous task.

The rise of fundamentalist forces is posing the most serious threat to the India's security. Fired with religious zeal these forces have created an entirely new situation. The intelligence agencies in our neighborhood and the organization, like Al Qaida and Jaish-e-Mohammad are encouraging the so-called Jehadis to enter India from outside. After first targeting the border states they have now spread deep inside the country. These bond of fanatics are not only indulging in subversive activities, but are spreading the virus of the fundamentalism among the Indian Muslims. The break up of the Indian union continues to be the main goal of Pakistan's domestic and foreign policy. Easy availability of deadly weapons with the subversing groups operating in India has created new dangers for India's security.

With the golden crescent and the Golden Triangle in India's neighborhood, drug trafficking poses yet another threat to our security Drug syndicates are generating huge funds a part of which is being used to give financial support to some of these subversive groups. The intelligence agencies like the ISI are recruiting a number of carriers in drug trafficking as their agents. These agencies provide legal immunity for their criminal activities in their own country in addition to giving the them financial and logistical supports.

The state politics is no less responsible for the current turmoil in Kashmir. Even though Omar Abdullah apparently a fully democratic process, but many veteran leaders of the state are not ready to accept his opposition peoples democratic party (PDP) seems more interested in destabilizing the state instead the suggestion of the Prime Minister Manmohan Singh Omar Abdullah called an all party meeting also invited, but it did not join. Instead its leaders continued to give poisonous statement regarding the played by the Hurriyat conference which avoids participating in the state democratic process. Even rejected by the people every time. One thing is clear whether it is an attempts by the PDP to weaken Omar Abdullah government or leaders like Geelani, ultimately those youth are getting injured of killed who are victims of such polite for this is the course of doing their duty. Kashmir youth should follow the following lines of the people ba-heel-a-e-mazhab kabhi banaam-e-watm. Its mean that the secessionist are only trying to capture of freedom or religion.

First and foremost is the need to recognize that our internal security can be ensured only, if there is a consensus on national security policies. Political entities need to agree to eschew the temptation of exploiting divisive issues which have the potential of posing threat to national security and cohension. Uch issues should be discussed between all concerned political entities and the concerned people so, that agreed policy approaches could be worked out. The relatively easy procedure of inciting emotion and passion on the potentially divisive issue needs to be given up, though at some cost to the popular image.

Similarly, parochialism should not be allowed to over-ride overall national interests particularly relating to national security and national integration. Local and minor issues should not emotionally be blown up to become a major national issue. Local and regional concerns no doubt require attention, but they could be pursued with a proper sense of proportion and negotiation should become the first choice instead of agitation, merely to attract the attention of the media and the public. All section of the media need to resolve that they would demand and encourage such a change in the priorities for the procedures to be adopted for the resolution of potential conflicts of interest.

On the part of government, it has to recognize the public perception that while considerable progress has been made in the area of collection of intelligence, Through technical means, about the activities of terrorist and militant group, such progress does not seem to have been matched in the areas of penetration of those group and collection of intelligence through human agents. If this perception is correct necessary measures to rectify the imbalance need to be initiated urgently.

Further, though the required mechanisms are stated to have been created for effective co-ordination between state and central agencies, as also amongst central agencies themselves, the results do not reflect the effectiveness of these mechanisms. What the public see and hear, soon after any incident or future of security. is prompt litany of complaints from state and central security agencies, though mostly indigenous against each other. This efforts to shift blame often takes precedence over speedy investigation and relief measures.

The variety of internal security threats makes it essential that coping those threats cannot be lefty to be the sole responsibility of the state security agencies. There is an inescapable need effectively to involve all other state agencies, all political and religious entities, private security agencies, educationists, social; workers and civil society as a whole to protect our nation. Prevention should be the primary objective with effective detection and deterrent punishment (when prevention fails) as the back-up. It is the area of prevention that the total involvement of the nation could be made most effective.

REFERNECES

1. Times of India, 12 May, 2010
2. India today 7 June 2010
3. Geographicals Factor of Indian History Page No. 129
4. India my Dream: Sh. Nirmal Verma Page No. 65
5. Hindustan Times : 16 July 2010
6. The Hindu : 19 November 2009
7. Hindustan Times : 27 November 2010

''राज्य की नीतियों को कुशलतापूर्वक लागू करने के लिए राजा में शेर (सैन्य शक्ति) और लोमड़ी (राजनीति) दोनों के ही गुण होने चाहिए, जिसका प्रयोग उसे राज्य की सुरक्षा और शक्ति के विस्तार के लिए करना चाहिए। अर्थात् जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ उसे शेर की आक्रामक नीति को अपनाना चाहिए और जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ उसे लोमड़ी की तरह कूटनीतिक चालों का प्रयोग करना चाहिए। इन नीतियों के अनुसरण से ही राजा अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है।''

—मैकियावेली

भूमण्डलीकरण तथा भारत में उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ

—डॉ0 ममता दीक्षित
असिस्टेंट प्रोफेसर (सीनियर ग्रेड)
शिक्षाशास्त्र विभाग
महिला महाविद्यालय, कानपुर

सम्पूर्ण पृथ्वी को स्थलमण्डल, जलमण्डल एवं वायुमण्डल में विभक्त कर सकते हैं। स्थलमण्डल को ही भूमण्डल कहा जाता है और इसी से भूमण्डलीकरण बना है जिसे अंग्रेजी में 'ग्लोबलाइजेशन' कहते हैं। यद्यपि हिन्दी के भूमण्डलीकरण में जलमण्डल एवं वायुमण्डल सम्मिलित नहीं है तथापि अंग्रेजी का ग्लोबलाइजेशन इन्हें सम्मिलित कर लेता है क्योंकि ग्लोब सम्पूर्ण पृथ्वी का प्रतीक है। मेरे मत में इन दोनो में अर्थ वैभिन्य है लेकिन इनकी भावना समान है। भूमण्डलीकरण की परिभाषा देते हुए कहा जा सकता है – ''भूमण्डलीकरण एक सापेक्ष तथा औपचारिक शब्द है जो प्रचलित दर्शन का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रगति एवं उपलब्धियों के पुंज को मानव एवं उसके सहजीवियों के लिए सुलभ कराने हेतु कृत संकल्पित है।''

शिक्षा और भूमण्डलीकरण दोनों व्यापक आधार वाले शब्द हैं जिनकी सापेक्ष तुलना कर पाना कठिन है। ''सम्पूर्ण पृथ्वी पर मानवजाति की समस्त उपलब्धियाँ शिक्षा का प्रसाद है, जिनका प्रसार उत्तम भूमण्डलीकरण का आधार है'' शैक्षिक भूमण्डलीकरण वर्तमान अथवा आधुनिक शिक्षा व्यवस्था से सम्बन्धित है। स्पष्टतः शिक्षा और भूमण्डलीकरण सहजीवी हे और एक दूसरे से प्रभावित होते हैं तथा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। शिक्षा को वैश्विक विकास का साधन बनाने के लिए राष्ट्र की प्राथमिकताओं को तय किया जाना आवश्यक है, क्योंकि विकसित, विकासशील तथा अविकसित देशों की प्राथमिकता में अन्तर होता है परन्तु निर्विवाद रूप से कहा जाये तो शिक्षा के द्वारा प्रेरित एवं प्राप्त विकास सर्वाधिक श्रेष्ठ होगा। शिक्षा और भूमण्डलीकरण मिलकर वैश्विक विकास को जन्म देते हैं।

आज जिस शिक्षा की बात की जाती है वह विज्ञान तथा वास्तविकताओं के अधिक निकट है। यह अनुभव एवं सूचनाओं का बन्डल बनती जा रही है। जो भूमण्डलीकरण की देन

है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में विशिष्ट ज्ञान एवं तथ्य ही वैश्विक प्रतियोगता में बने रह सकते हैं। यदि एक राष्ट्र द्वारा विकसित तकनीक अथवा प्रौद्योगिकी दूसरे राष्ट्र की तकनीक अथवा प्रौद्योगिकी से श्रेष्ठ हैं, तभी उसकी अन्य राष्ट्रों, में माँग होगी अन्यथा उसका भूमण्डलीकरण संभव नहीं हो सकेगा।

1991 से ही प्रमुख रूप से देश में भूमण्डलीकरण की नीतियां लागू की गयी हैं। इन्हीं परिस्थितियों के परिणामस्वरूप आज स्थितियां ऐसी हैं कि देश के हर तबके में यह महसूस किया जा रहा है कि हमारी उच्च शिक्षा हमारी आकांक्षा के अनुरूप नहीं है।

भारत में उच्च शिक्षा अंगद के पैर की तरह जम गयी है – ठोस, भारी और अचल। उसका समसामयिक जीवन के बदले हुए संदर्भों से बहुत कम सरोकार है। वह आज आने वाले कल की चुनौतियां स्वीकार नहीं करती, बल्कि अपने ढांचे को सुरक्षित रखने में तल्लीन है। यह जिस रोग से ग्रस्त है उसकी छानबीन अनेक आयोगों, समितियों, कार्य समूहों और अध्ययन दलों ने की है और उन्होंने कई भारी भरकम प्रतिवेदन प्रस्तुत किए हैं। पर अमल नाममात्र को हुआ। यदि आज किसी विश्वविद्यालय में वर्ष भर में अस्सी या नब्बे दिन शांतिपूर्वक पढ़ाई हो जाए तो उसे भाग्यशाली समझना चाहिए। इस अल्पावधि में कुछ नहीं होता। इस बात का संगठित प्रयास किया जाताहै कि श्रांत–क्लांत विद्यार्थियों को ज्ञान की पुड़िया दे दी जाए, ताकि वे किसी तरह परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकें। उच्च शिक्षा आज एक अनुष्ठान मात्र बन कर रह गयी जिसका न कोई अर्थ न प्रयोजन।

हमारे विश्वविद्यालयों में अंसतोष इतना व्यापक है और हिंसा के ऐसे आवधिक विस्फोट होते रहते हैं कि हम उन संकटों की ओर ध्यान नहीं दे पाते जो उच्च शिक्षा की आत्मा का हनन कर रहे हैं उदाहरण के लिए लक्ष्यों का ही संकट ले। राष्ट्र निर्माण और विकास में उसकी भूमिका के साथ केवल शाब्दिक खेल किया जा रहा है, और यदि उसे कहीं बढ़ावा मिलता भी है तो दबे स्वर में। यदि हम शिक्षा के लक्ष्यों के सम्बन्ध में राष्ट्रीय सहमति विकसित कर सकें और उनकी ओर अग्रसर होने के लिए आवश्यक शक्ति जुटा लें, तो हम विश्वास के संकट और सर्वत्र फैल रही विघटनकारी दोषदर्शिता का सामना करने में सफल हो सकेंगे।

प्रासंगिकता के प्रश्न की जितनी सूक्ष्म, जाँच होनी चाहिए थी, वह नहीं हुई और शायद इसी क्षेत्र में यह संकट सबसे अधिक गहरा है। प्रो0 दौलत सिंह कोठारी ने कहा है, ''विज्ञानाश्रित विश्व में किसी भी देश की समस्त विकासात्मक प्रक्रिया, उसके कल्याण प्रगति

और सुरक्षा के लिए शिक्षा और अनुसंधान का भारी महत्व होता है'' आज यह समझना आवश्यक है कि संसार कितनी तेजी से बदल रहा है, किन्तु विश्वविद्यालयीन प्रणाली इस प्रकार की समझ विकसित करने में कोई सक्रिय सहयोग नहीं देती। हमारे देश में अनेक विश्वविद्यालय अपने कर्तव्य की पुरानी संकल्पनाओं से बंधे रहकर ही काम करते आ रहे हैं। हम यत्र तत्र किए गए कठिन परिश्रम या ठोस उपलब्धियों की चर्चा नहीं कर रहे। यदि हम शिक्षा की समग्र उपलब्धि की प्रासंगिकता के नाते छान–बीन न करें, तो हमारा परिश्रम व्यर्थ होगा।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जनसंख्या विस्फोट भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। ज्यों–ज्यों हमारा समाज तकनीकी दृष्टि से अधिक जटिल बनता जाएगा, हमारी प्रशिक्षित जनशक्ति संबंधी आवश्यकताएँ बढ़ती जायेंगी और हमें अधिक उच्च शिक्षा संस्थाओं की आवश्यकता होगी, परन्तु हमारी असल आवश्यकता ऐसी प्रशिक्षित योग्यताओं की है जिनमें समस्याओं का समाधान करने की सशक्त क्षमताएँ हों। हमें ऐसे डिग्रीधारी समूहों की जरूरत नहीं है जिनका शिक्षा के एक या अधिक क्षेत्रों से अस्पष्ट और अपर्याप्त परिचय भर हो। उच्च शिक्षा प्राप्ति के अधिकार को लेकर हमारे यहाँ काफी भ्रान्तियाँ है। उच्च शिक्षा प्राप्ति का ''अधिकार'' जैसी कोई चीज नही है, यह तो एक ऐसा विशेषाधिकार है जिसे कठोर उपलब्धि–संबंद्ध मानदंड पर पूरा उतरने पर ही अर्जित किया जा सकता है। इस तथ्य को स्वीकार कर लेना सामान्यतः हमारे देश और विशेषतः हमारी शिक्षा प्रणाली के लिए हितकर होगा।

हमारी सर्वाधिक स्पष्ट असफलताएँ शैक्षिक नवाचारों के क्षेत्र में है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थाओं ने पूर्व स्थापित पद्धति में साहसपूर्ण परिवर्तन किए और उनसे यह आशा की कि वे रूढ़ पद्धतियों पर चल रहे विश्वविद्यालयों के लिए दिशा निर्धारक सिद्ध होंगे। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। ये संस्थान भी कष्टग्रस्त हैं और ऐसा लगता है कि वही पुरानी परिपाटी अपनाने की दिशा में अग्रसर हैं जो अपनी प्रतिष्ठा खो चुकी है। स्वायत्त कालेजों के बारे में कई समितियों में चर्चा की गई लेकिन उन पर अमल नाम मात्र को ही हुआ। अब तक बहुत थोड़े कालेजों को यह दर्जा मिला है। पाठ्यचर्चा में नम्यता की आवश्यकता है लेकिन हमारे विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम एक विशिष्ट पद्धति के बंदी बने हुए हैं, उनमें केवल समिति और रूढ़िगत विकल्प ही सम्भव हैं। सेमेस्टर पद्धति जिसे हमारी शिक्षा प्रणाली की सभी बुराईयों को दूर करने के लिए रामबाण समझा जाता है, सर्वथा निष्फल सिद्ध हुई हैं। परीक्षा

पद्धति में सुधार को लेकर खासी बहसें हुई हैं लेकिन सुधार आज तक नहीं हो पाया। मूल्यों और प्रतिबद्धता जैसे संवेदनशील विषयों पर भी विचार किया जाना अत्यन्त आवश्यक है भारत में उच्च शिक्षा के लोकतंत्र, समता, सामाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्ष सम्बन्धी मूल्यों को अपनाना और उन्हें आगे बढ़ाना होगा।

इस प्रकार भूमण्डलीकरण के दौर में हमें गम्भीरता से विचार करना है कि उच्च शिक्षा का आयोजन किस तरह किया जाए। हमें उच्च शिक्षा को और अधिक गिरावट से रोकना है, तो उच्च शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन करने होंगे। ऐसी शैक्षिक प्रक्रिया का नियोजन करना है जिसके द्वारा नई पीढ़ी में मानवीय विशिष्टताओं का प्रस्फुटन हो, वैज्ञानिक चिंतन प्रणाली का विकास हो तथा प्रबुद्ध वैज्ञानिक, समर्पित नागरिक और संवेदनशील मानव का निर्माण कर सकना शिक्षा की महान उपलब्धि होगी। इस प्रकार उच्च शिक्षा नियोजन में बहुत सारे कारगार तत्व ठोस सार भाग का निर्माण करते दिखायी देते हैं। इनमें प्रमुख है – शैक्षणिक नियोजन, जनशक्ति, नियोजन, शिक्षा का सन्तुलन, क्षेत्रीय प्रसार, जनचेतना उत्पन्न करे पढ़े लिखे समाज का निर्माण करना, रोजगार की पर्याप्तता, शिक्षकों को उचित सम्मान व मानवीय मूल्यों का विकास, नौकरी को डिग्री से मुक्त करना, प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की अभिवृत्ति व अभिप्रेरणा की जाँच करना, शैक्षणिक प्रणाली का विकेन्द्रीकरण अधिकाधिक कालेजों को स्वायत्ता प्रदान करना आदि।

अंत में यह कह सकते हैं कि वैश्वीकरण की व्यवस्था ने उच्च शिक्षा को जिस स्वरूप में लाने की कोशिश की है, वह अत्यंत ही विचित्र स्थिति पैदा करती है, क्योंकि किसी भी प्रकार के विकास करने के लिए शिक्षा का अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है और उसमें भी बुनियादी और मूल्यपरक शिक्षा का होना नितान्त आवश्यक है। इन अवधारणाओं की स्पष्टता तभी सुनिश्चित की जा सकती है जबकि शिक्षा भूमण्डलीकरण के तमाम नियमों से बाधित न हो।

संदर्भ

1. Challenges of Education : A Policy Perspectives, Ministry of Education, 1985, New Delhi.
2. Kochhar, S.K. Pivotal Issues in Indian Education, Sterling Publishers Pvt. Ltd., New Delhi, 1981

3. Mohanty, J., Dynamics of Higher Education in India, Deep and Deep Publications, New Delhi, 1993.
4. Mohanty, J., Modern Trends in Indian Education, Deep and Deep Pyublications, New Delhi. 1989.
5. UGC Annual Report, 2000-2001
6. Philip G Altabach, Higher Education and WTO : Globalization Run Amok, Chronicle of High Education.
7. Open Doors 2004, Report on International Educational Exchange, Institute of International Education.
8. Guy Neave, "The Dark side", Globalization : Threat, Opportunity or Both Report presented to the IAU Administrative Board Meeting at its Mexico City meeting in November, 2001.

''युद्ध में किसी घटना के सम्बन्ध में किसी को कोई मत व्यक्त करने का अधिकार तब तक नहीं है, जब तक कि वह स्वयं कोहरे से शून्य होकर गर्मी एवं प्यास से निर्जीव होकर या परिश्रम एवं भूख से मर न रहा हो, वह युद्ध स्थल में अफसर की पूरी स्थिति का तब तक अनुभव नहीं कर सकता, जब तक उसे युद्ध का वास्तविक अनुभव न हो।''

—क्लॉजविट्ज

विश्व शान्ति पर नाभिकीय हथियारों के आतंक का प्रभाव

–डॉ0 अशोक कुमार तिवारी
एसोसिएट प्रोफेसर
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
वी0एस0एस0डी0 महाविद्यालय, कानपुर

वर्तमान में विश्व के सभी देश में हथियारों की बढ़ती प्रतिस्पर्धा में सबसे विनाशकारी हथियार नाभिकीय आयुध है। नाभिकीय हथियारो की उत्पत्ति उस समय हुई जब विश्व में सर्वप्रथम परमाणु बम अमेरिका के कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो0 जे0 आर0 ओपेनहीमर द्वारा बनाया गया। ''अमेरिका ने 31 अक्टूबर 1952 ई0 को अपने प्रथम हाइड्रोजन बम का सफल परीक्षण प्रशान्त महासागर में एक तैरती नाव में किया। यह 10 मेगाटन का शक्तिशाली बम था।''[1] ''अगस्त 1953 ई0 में शक्ति के प्रदर्शन हेतु रूस ने भी हाइड्रोजन बम का सफल परीक्षण किया।''[2] बस इसी समय से परमाणु शक्ति सम्पन्नता को प्राप्त करने की अप्रत्याशित होड़ चल पड़ी। अमेरिका ने परमाणु बम की विनाशकारी क्षमता का उदाहरण हिरोशिमा और नागासाकी पर बम गिराकर दिखाया था। बाद में सुरक्षा परिषद के अन्य स्थायी सदस्यों फ्रांस, रूस, ब्रिटेन तथा चीन ने भी आणुविक कार्यक्रम विकसित कर लिये।

आज आतंकवादी संगठन अपने आप को पूरी आधुनिक सेना के रूप में परिवर्तित कर चुके है। तकनीकी और रणनीतिक बदलाव के साथ–साथ आतंकवादी आज टाईमबम, बारूदी सुरंग, मानव बम का प्रयोग कर रहे। वर्तमान में आतंकवादी जैविक, रासायनिक एवं आणविक हथियारों की प्राप्ति हेतु निरन्तर प्रयास कर रहे है। वे अणु बम संरचना और निर्माण प्रक्रिया के बारे में गम्भीर है। ''एक न्यूक्लियर बम का निर्माण करने के लिए लगभग 11 पौण्ड प्लूटोनियम अथवा 45 पौण्ड अति परिष्कृत यूरेनियम की आवश्यकता होती है।''[3] जहाँ तक इसकी उपलब्धता का सवाल है इसकी बिक्री पर पूरी तरह सख्ती रखी जाती है। फिर भी सम्भव है कि आतंकवादियों को उनके आश्रयदाताओं से कुछ प्लूटोनियम प्राप्त हो जाये अथवा वे उसे चुराने में सफल हो जायें। अर्थात् यदि आतंकवादियों के हाथ परमाणु सामग्री लग गई तो वह कुछ ही हफ्तो मे अणुबम बना सकते हैं, किसी भी देश अथवा सम्पूर्ण विश्व के लिए यह

भयानक दिन होगा। ''अमेरिकी अणु ऊर्जा आयोग के एक अध्ययन के अनुसार प्लूटोनियम आक्सॉइड के 412 पौण्ड परिस्कृत पाउडर से इतनी रेडियोधर्मिता फैलेगी कि हवा के रूख के अनुसार उस स्थान से 1800 फुट दूर तक के हर व्यक्ति को फेफड़े व हड्डियों का कैंसर होनें की शत् प्रतिशत् सम्भावना होगी।''[4] यदि आतंकवादियों द्वारा आणुविक हथियारों का प्रयोग हुआ तो इसका प्रभाव असीमित होगा। भूमि, जल, वनस्पति, फसल एवं मानव सहित पृथ्वी पर मौजूद सभी प्रकार की सम्पदा का विनाश हो जायेगा। विश्व में आणुविक हथियारों का क्षेत्र तेजी से फैल रहा है। बम विस्फोट और नाभिकीय हथियारों के प्रयोग की धमकियों की घटना निरन्तर बढ़ रही है। नाभिकीय आतंकवाद से विश्व को बचाने का रास्ता बहुत सीमित और निष्प्रभावी है कुछ गैर जिम्मेदार राष्ट्र भी नाभिकीय भयादोहन के रूप में इसके प्रयोग की धमकी दे रहे है। ये स्वयं या आतंकी संगठनो की मदद से नाभिकीय युद्ध की शुरूआत कर सकते है। मध्य एशिया, दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया इस समय आतंकवाद की तीखी पीड़ा से ग्रसित है। जिसमें दक्षिण एशिया इस समय आतंक की आग से वृहत स्तर पर ग्रसित है। भारत की नाभिकीय सुरक्षा चिंताए दक्षिण एशिया में अत्यन्त गम्भीर है। पाकिस्तान तो परमाणु क्षमता सम्पन्न देश है ही ईरान भी परमाणु कार्यक्रम बढ़ा रहा है। तालिबानी आतंकवादी भी विभिन्न स्रोतो से लगातार परमाणु हथियार पाने को प्रयासरत् हैं। चीन ने पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम में हर संभव सहायता की है। पाकिस्तान के परमाणु वैज्ञानिक अब्दुल कादिर खॉन ने तो अपना जाल विश्वस्तर पर फैलाया। इस तरह देखे कि परमाणु अप्रसार संधि पूर्णतः विफल रही। इस मोरचे पर अब उत्तर कोरिया का रवैया भी चिंतित करने वाला है। संयुक्तराष्ट्र के विशेषज्ञों ने माना है कि उत्तर कोरिया परमाणु और बैलेस्टिक प्रोद्योगिकी निर्यात करता है। ईरान ने हाल में ही ब्राजील और तुर्की के साथ परमाणु ईंधन हेतु समझौता किया है। ईरान और उत्तर कोरिया का आरोप है कि अमेरिका अपनी परमाणु क्षमता में कटौती न करके अन्य देशों के शांतिपूर्ण परमाणु कार्यक्रमों पर रोक लगाना चाहता है।

''4 फरवरी 2004 में पाकिस्तान द्वारा परमाणु तस्करी करने का मामला प्रकाश में आया था जिसमें पाकिस्तान के वैज्ञानिक डॉ0 अब्दुल कादिर खॉन का हाथ होने की पुष्टि हो चुकी है।''[5] विशेष तौर पर देखा जाय तो परमाणु तस्करी का कृत्य आतंकवाद की क्रिया का एक प्रमुख भाग है। फरवरी 2004 में उत्तरकोरिया, रूस, तुर्की, जर्मनी, फ्रांस, नीदरलैण्ड, यूक्रेन, पोलैण्ड, बेलारूस, कजाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका के नाम परमाणु तस्करी के मामलें में प्रकाश

में रहे। ''सन् 1996 ई0 में यूक्रेन के शस्त्रागार से अटैची साइज के दो सौ रूसी परमाणु बम लापता हो गये।''[6] इसके बारे में सही जानकारी तो उपलब्ध नहीं हुई किन्तु ऐसी आशंका व्यक्त की जा रही है कि ये परमाणु शस्त्र कुछ लोभी देशो के साथ–साथ आतंकवादी संगठनों के पास पहुँच गये है। जिससे परमाणु आतंक का खतरा बढ़ गया है। यह सर्वविदित है कि पाकिस्तान ने अपनी परमाणु क्षमता तस्करी एवं चोरी छिपे प्राप्त की है। लेकिन यह भी सत्य है कि पाकिस्तान को परमाणु सम्पन्न बनाने में चीन ने भी सहायता की है। गत वर्ष ''2 फरवरी 2004 को पाक परमाणु वैज्ञानिक डॉ0 अब्दुल कादिर खान द्वारा ईरान, उत्तरकोरिया और लीबिया को परमाणु तकनीक देने की स्वीकारोक्ति ने इस आशंका को और भी बलवती किया है कि परमाणु बम बनाने में उपयोग की जाने वाली तकनीकी और पुर्जो की खरीद में बिक्री में विश्वव्यापी काला बाजारियों का नेटवर्क सक्रिय है।''[7] यह स्थिति पूर्णतः स्पष्ट है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् की बदलती परिस्थितियों में किये जा रहे शस्त्र परिसीमन और निःशस्त्रीकरण के प्रयासों में निहित शर्तों ने विश्व के चन्द महत्वाकांक्षी देशों को परमाणु क्षमता हासिल करने के लिए प्रेरित किया, जिसका लाभ उठाया व्यापारी किस्म के देशों ने और वहाँ अपने नेटवर्क फैलाये काला–बाजारियों ने इस अवसर का लाभ पूर्ण रूप से आतंकवादी संगठनों को भी हुआ। विशेष रूप से ऐसे संगठनों को जिनके पास पर्याप्त आर्थिक क्षमता थी और एक विस्तृत नेटवर्क उपलब्ध था। इन आतकी संगठनों ने अवसर का लाभ उठाते हुए परमाणु के अवैध कारोबार को प्रायोजित किया। इससे इन्हें अपनी आतंकी कार्यवाही के संचालन के लिए विभिन्न देशों यथा–ईरान, इराक, सऊदी अरब, लीबिया, उत्तर कोरिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, चेचेन्या रूस, ब्रिटेन, अमेरिका आदि में आधार क्षेत्र प्राप्त हुए।

''अरबी मीडिया ने यह तथ्य उजागर करके सबको चकित किया कि पिछले कई वर्षों से (1997–98) अलकायदा के पास परमाणु हथियार है।''[8] अरबी समाचार पत्र 'अलहयात्' ने अपनी विशेष रिपोर्ट में कहा है कि ''आतंकी संगठन अलकायदा के पास आणुविक हथियार है। यह आणुविक हथियार 'ओसामा बिन लादेन' ने यूक्रेन के वैज्ञानिकों से सन् 1998 में प्राप्त किया था। परन्तु गम्भीर परिणामों की आशंका की वजह से उसने इसका प्रयोग नही किया। लेकिन भविष्य में किसी भी देश में इसके प्रयोग की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। वर्तमान परिवेश में जिस प्रकार से आतंकवादी संगठन अपने हिंसक गतिविधियों का दायरा क्षेत्र बढ़ाने के लिए एक क्षेत्र विशेष (दक्षिण एशिया) में कुटिल दृष्टि लगाये है उससे

नाभिकीय आतंकवाद की आशंकाए बलवती हो गयी है क्योंकि इन आतंकी संगठनों के पास न तो कोई नैतिकता है और न ही ये अपने लक्ष्यों के प्रति अपने किसी मूल्य से समझौता करते है। इस स्थिति की भयंकरता को भॉपते हुए संयुक्तराष्ट्र की परमाणु निगरानी संस्था अंतराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के पूर्व प्रमुख अलबरदेई ने कहा था कि ''वर्तमान परिदृश्य में नाभिकीय तस्करी, प्रौद्योगिकी व तकनीकी हस्तान्तरण तथा आतंकवादी संगठनों के पास परमाणु हथियारों का होना यह बात सिद्ध करती है कि दुनियां बहुत बड़े परमाणु हादसे की ओर जा सकती है।''[9]

वर्तमान में चीन–पाकिस्तान के गठजोड़ के तहत चीन आने वाले दिनों में वृहतस्तर पर परमाणु सहयोग की तैयारी में है। चीन परमाणु ऊर्जा संयंत्रो के निर्माण के लिए पाकिस्तान को वृहत मात्रा में धन उपलब्ध करा रहा है। चीन के सरकारी अखबार 'चाइना डेली' ने 23 जून 2010 को चीन के विशेषज्ञों के हवालें से लिखा कि चीन अन्य देशों द्वारा जताई गयी आपत्तियों के बावजूद पाकिस्तान में दो परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण के लिए वित्तीय मदद देने के अपने फैसले पर कायम रहेगा। विदित हो कि ''**चाइना नेशनल न्यूक्लियर कॉर्पोरेशन** ने अप्रैल 2010 में घोषणा की थी कि चीन 2.375 अरब डालर (लगभग 110 अरब रू0) के करार के तहर पाकिस्तान को परमाणु ऊर्जा रिएक्टर देगा।''[10]

चिंताजनक तथ्य यह है कि पाकिस्तान विखंडनीय सामग्री का उत्पादन कर रहा है जिससे उसकी परमाणु शस्त्रागार में लगभग सात दर्जन परमाणु हथियार है। अमेरिका की कांग्रेसनल रिसर्च सर्विस (CRS) ने अपनी ताजा रिपोर्ट में अमेरिकी सांसदों से कहा कि अमेरिका व पाकिस्तान के अधिकारियों की ओर से पाकिस्तान के परमाणु हथियारों पर नियंत्रण होनें के बारे में विश्वास जताए जाने के बाद भी अस्थिरता की उपस्थिति सुरक्षा को प्रभावित कर सकती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान में व्याप्त अस्थिरता परमाणु हथियारों के लिए खतरा है क्योंकि वे आतंकवादियों के हाथ में आ सकते है। पाकिस्तान के परमाणुक्षमता बढ़ाने के इन्ही प्रयासों पर टिप्पणी करते हुए ''25 सितम्बर 2010 को अमेरिकी कांग्रेस के एक शीर्ष सांसद **'एडरायस'** ने कहा कि चीन को पाकिस्तान में नए परमाणु संयंत्र बनाने से रोका जाना चाहिए।''[11] उनका मानना है कि पाकिस्तान एक जिम्मेदार देश नहीं है। उन्होनें कांग्रेस के समक्ष कहा कि उस गैर जिम्मेदार देश ने वैश्विक सुरक्षा को बहुत नुकसान पहुँचाया है।

अतः इन स्थितियों के अवलोकन से यह निर्धारित होता है कि आज विश्व को घातक अथवा विनाशकारी हथियारों के अनसुलझे खतरे से, तनाव से गुजरना पड़ रहा है। मानव जाति के समक्ष आज अनेक अभूतपूर्व समस्याएं उत्पन्न हो गयी है यदि इन समस्याओं का संयुक्त समाधान नहीं खोजा जाता है तो मानवता के भविष्य में प्रश्नचिन्ह लगा रहेगा। आज विश्व के अधिकांश राष्ट्र पहले से अधिक आत्मनिर्भर हो गये है जिसके कारण विनाशकारी हथियारों की होड़ बढ़ी है और इनका प्रयोग आपसी मतभेद वैज्ञानिक विफलता अथवा मानव कमजोरी के कारण यदि किया जाता है तो जीव जगत को भारी नुकसान होगा।

सन्दर्भ सूची

1. टेररिज्म इण्टर डिसिप्लीनरी–जे0 मैलिन–पृ0 सं0 95
2. वहीं–पृ0 सं0 98
3. इमर्जिंग पावर इण्डिया–स्टीफन कोटेन–पृ0 सं0 110
4. द टाइम्स ऑफ इण्डिया–15 मई 2010 पृ0सं0 6
5. इण्डिया टुडे – 15 अगस्त 2010
6. इण्डिया टुडे – 16 फरवरी 2010
7. इण्डिया न्यूज – 15 जनवरी 2009 – पृ0 सं0 6
8. इण्डिया टुडे – 15 फरवरी 2010
9. दैनिक जागरण –16 मार्च 2009
10. अमर उजाला–15 सितम्बर 2010
11. राष्ट्रीय सहारा–26 सितम्बर 2010

भारत अमेरिका परमाणु सहयोग समझौता और भारतीय सामरिक सुरक्षा

डॉ0 उपमा श्रीवास्तव
वरिष्ठ प्रवक्ता
प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

करूण कुमार
यू0जी0सी0 नेट (शोधार्थी)
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय
कानपुर

भारत और अमेरिका के मध्य 18 जुलाई 2005 ई0 को एक परमाणु समझौता सम्पन्न हुआ जिसके अन्तर्गत मुख्य उपबन्धों के तहत भारत स्थित भारत के असैन्य परमाणु संयत्र अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की निगरानी के अधीन अपना काम करेगें। भारत के सैन्य परमाणु संयत्र इस अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेन्सी की निगरानी से दूर रखे गये है। इस शर्त की पूर्ति के परिणामस्वरूप भारत को असैन्य परमाणु सयत्रों के लिये अमेरिका के साथ ही साथ नाभिकीय आपूर्ति समूह के देशों से संबंधित युरेनियम (कच्चामाल) तथा अवश्यक संवार्धित तकनीक आदि मिलने का मार्ग प्रशस्त हो गया तथा भारत को अमेरिका सहित अन्य परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों से परमाणु रियेक्टर आदि भी प्राप्त करने का रास्ता खुल गया है। इस समझौते के अनुसार भारत अपने वर्तमान 22 परमाणु संयत्रो में से 14 को अन्तराष्ट्रीय निगरानी के अधीन लायेगा। साथ ही भारत को नये परमाणु रियेक्टर जो विदेशी मदद से असैन्य प्रयोग हेतु लगाये जाते है। वह भी अन्तर्राष्ट्रीय निगरानी के दायरे में आयेगे। इससें मुख्य विवादित प्रश्न है कि यदि अन्तर्राष्ट्रीय निगरानी समिति यह कहती है कि भारत द्वारा असैन्य परमाणु संयत्रो का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप असैन्य प्रयोग के लिये नही किया जा रहा अथवा संवर्धित यूरेनियम का प्रयोग परमाणु अस्त्र बनाने हेतु किया जा रहा है उस दशा में यह परमाणु करार को रद्द करने का अधिकार अमेरिका के पास सुरक्षित रहेगा। यह प्रश्न है कि जब चाहे अमेरिका यह कह सकता है कि असैन्य परमाणु संयंत्रो का प्रयोग सैन्य कार्यो हेतु किया जा रहा है और वह परमाणु करार रद्द कर सकता है तथा जो भी उसने भारत को रियेक्टर आदि दिये है वह वापस ले सकता है उस दशा में भारत को गम्भीर ऊर्जा संकट का सामना करना पड़ सकता है।

मुख्य रूप से यह समझौता भारत की ऊर्जा पूर्ति को सुनिश्चित करने एवं भारत–अमेरिका सम्बन्धों को नयी दिशा देने के उद्देश्य से किया गया है। इस समझौते से भारत को न केवल अमेरिका से वरन् अन्य परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह के 40 सें अधिक देशों से

परमाणु ईंधन एवं परमाणु प्रौद्योगिकी प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। इस परमाणु समझौते की सबसे विशेष बात यह है कि इसके तहत भारत को परमाणु अप्रसार संधि का सदस्य न होने के बावजूद परमाणु प्रौद्योगिकी एवं परमाणु ईंधन प्राप्त हो सकेगा।

इस समझौते के फलस्वरूप भारत को परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर किये बिना ही परमाणु शक्ति सम्पन्न देश मान लिया जायेगा एवं जो सुविधायें विश्व की परमाणु शक्ति सम्पन्न शक्तियों से भारत के 32 वर्ष पुराने नाभिकीय अलगॉव समाप्त होने की दिशा में एक महत्वपूर्ण सफलता उस समय मिली जब भारत–अमेरिका परमाणु सहयोग समझौते की अमेरिकी कांग्रेस ने ''यूनाइटेड स्टेट्स–इंडिया पीसफुल एटॉमिक एनर्जी कोआपेरेशन एक्ट 2006'' नामक कानून पारित कर दिया। उल्लेखनीय है कि 1974 में पोखरन में भारत द्वारा किये गये प्रथम परमाणु परीक्षण के पश्चात अमेरिका ने भारत के साथ सभी तरह के परमाणु सहयोग पर प्रतिबन्ध लगा दिया था।

90 के दशक में अमेरिका द्वारा सी0टी0बी0टी0 परमाणु परीक्षण प्रतिबन्ध संधि पर भी भारत ने अपनी सुरक्षा सम्बन्धी कारणो से हस्ताक्षर नही किया था तथा भारत ने अपनी सामरिक महत्व को प्रमुखता दी थी, उसके बाद भारत ने 1998 ई0 में सफल परमाणु परीक्षण पोखरन में किया, जिसके परिणामस्वरूप अमेरिका सहित कई देशों ने भारत पर अनेक आर्थिक एवं सामरिक प्रतिबन्ध लगाये थे, जिनका भारत ने दृढता एवं सफलतापूर्वक सामना किया था अन्त में विश्व के उन्ही देशों ने वह सभी प्रतिबन्ध हटा लिये थे।

भारत द्वारा अमेरिका से किया गया करार के संबंध में जो भी ऐसे प्रवधान है जो भारत की सामरिक महत्व से संबंधित है भारत जैसे जिम्मेदार देश जो शांति की नीति में विश्वास करता है वो कदापि भी शान्तिपूर्वक कार्यो हेतु प्राप्त परमाणु ईधन का प्रयोग अपने सामरिक क्षेत्र में कभी भी नही करेगा।

भारत में वर्तमान में विद्युत (ऊर्जा) की गम्भीर समस्याँ उत्पन्न हो रही है भविष्य में विद्युत ही भारत की प्रगति में एक महत्वपूर्ण कारक साबित होगी, भारत में कोयले के भण्डार काफी कम बचे हुये है ऐसी दशा में विद्युत उत्पान हेतु हमें परमाणु आधारित विद्युत उत्पादन संयंत्र की आवश्यकता होगी। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये भारत को ऐसे करार की आवश्यकता थी।

अमेरिका परमाणु करार को लेकर इतना अधिक व्यग्र हो गया था कि अमेरिकी राजदूत डेविड मलफोर्ड ने भारतीय जनता पार्टी से समर्थन प्राप्त करने हेतु भाजपा के वरिष्ठ नेता लाल कृष्ण आडवाणी से मुलाकात भी की थी, किन्तु उन्होने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया था।

अमेरिका ने करार हेतु समर्थन जुटाने के लिये कई बी0जे0पी0 नेताओं से भी मुलाकात की थी। यह इस बात का प्रमाण है कि अमेरिका हर हाल में भारत से से यह करार मौजूदा प्रारूप में करना चाहता था।

जुलाई, 2005 में भारतीय प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह की अमेरिका यात्रा तथा मार्च 2006 में अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश की भारत यात्रा के दौरान परमाणु सहयोग की पृष्ठभूमि सम्पन्न हुई थी। इस समझौते के कार्यान्वयन हेतु अमेरिकी कानून में तब्दीली लाना आवश्यक थी। इससे सम्बन्धित कानून को प्रतिनिधि सभा ने 27 जुलाई, 2006 ई0 को तथा सीनेट ने 27 नवम्बर, 2006 को पारित कर दिया था। इस सर्वसम्मत विधेयक को प्रतिनिधि सभा की अन्तर्राष्ट्रीय मामलों की समिति के अध्यक्ष हेनरी हाइड ने सदन में पेश किया प्रतिनिधि सभा ने इसे 8 दिसम्बर, 2006 ई0 को पारित कर दिया। यह कानून जनवरी, 2007 से अस्तित्व में आ गया।

भारत के समक्ष उत्पन्न मुख्य्य चुनौतियॉ –

- अमेरिका द्वारा भारत पर शान्तिपूर्ण कार्यो हेतु परमाणु ईंधन का प्रयोग न करने का आरोप लगा कर कभी भी करार रद्द करने का अधिकार रखता है।
- परमाणु कचरे के सम्बन्ध में इसके सुरक्षित निस्तारण हेतु कोई भी प्रावधान स्पष्ट नही है। इसके निस्तारण की उचित व्यवस्था करनी पड़ेगी।
- परमाणु संयंत्रो हेतु सुरक्षा के संबंध में एवं दुर्धटना को रोकने के उपाय तथा दुर्धटना के समय बचाव के संदर्भ भी परमाणु समझौते में कोई व्यवस्था नही है।
- वर्तमान में तापीय विधुत गृह में उत्पादित विधुत मूल्य से बहुत अधिक मूल्य परमाणु रियेक्टर से उत्पादित विधुत का आयोग जो भारतीय अर्थ व्यवस्था के लिये एक बड़ी समस्या हो सकती है। आयातित रियेक्टरों की प्रति मेगावाट क्षमता का मूल्य 17 लाख डालर तय किया गया है जो देशी रियेक्टरो की तुलना में दोगुना है। इससे भी बदत्तर यह है कि विशेष कानून द्वारा हादसे की स्थिति में विदेशी कम्पनियॉ का दायित्व सीमित कर दिया गया है।

समाधान :–

- भारत को परमाणु प्रौद्योगिकी के विकास पर ध्यान देना चाहिये, भारत में थोरियम का प्रचूर भण्डार मौजूद है उसे परमाणु ईंधन के रूप में हम प्रयोग कर सकते है। एवं परमाणु ईधन के संदर्भ में विदेशो पर से हमारी निर्भरता समाप्त हो सके।

➢ परमाणु संयंत्रो में भूकम्प अथवा अन्य कोई प्रकृतिक आपदा अथवा कोई अन्य दुर्धटना के फलस्वरूप उत्पन्न त्रसदी से निपटने हेतु भी समुचित प्रबन्ध किया जाना चाहिये।

➢ भारत को अपनी सामरिक आवश्यकता को आर्थिक प्रगति से अधिक महत्व देना चाहिये यदि सामरिक सुरक्षा में ऐसे करार बाधक साबित हो रहे हो तो उसे अस्वीकार कर देना चाहिये और देशवासियों को भी विद्युत समस्या को समझना चाहिये।

निष्कर्ष –

विदेशो से आयातित ईधन पर आधारित रिएक्टरों के बल पर ऊर्जा सुरक्षा की योजना पैसे की बर्बादी के अलावा कुछ नही है। यही नही बाहरी दबाव के कारण ऊर्जा सुरक्षा और राष्ट्रीय हित भी खतरे में पड़ जायेगे। भारत में जिन चार हल्के पानी के रियेक्टर (LWR) प्रौद्योगिकी वाले रियेक्टर भी शामिल है, जिनका परीक्षण ही नही हुआ है। आज देश को परमाणु पारदर्शिता और खुली बहस की जरूरत है किन्तु इस जरूरत पर भ्रष्टाचार और परमाणु लाबी का उभार भारी पड़ रहा है।

Reference

1. Articles from "The Hindu"
2. Frontline, July 12, 1996
3. Frontline September 1996

''मनोवैज्ञानिक साधनों द्वारा राष्ट्रीय एकता, राजनीतिक संकल्प, सामाजिक सुसंगतता व विकास सम्भव होता है। धर्म तथा आत्मा के द्वारा स्थापित राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक सुसंगतता दृढ़ व स्थायी होती है।''

–ल्यूडेनडार्फ

गुट निरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता

–डॉ0 निखिल कुमार सिंह
रीडर, रक्षा अध्ययन विभाग
श्री मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर
महाविद्यालय बलिया (उ0प्र0)

द्वितीय महायुद्धोत्तर विश्व परिदृश्य में जबकि दुनियां दो विचारधाराओं में अमेरिका और सोवियत संघ के नेतृत्व में बटी थी, नव स्वतंत्र देशों के लिए इन्हीं में से किसी के साथ होने के अतिरिक्त कोई तीसरा विकल्प उपलब्ध नहीं था। किन्तु भारत, मिस्र और यूगोस्लाविया के, पंडित जवाहर लाल नेहरू, कर्नल नासिर और मार्शल टीटों जैसे नेताओं के सतत् प्रयासों से उक्त दोनों गुटों से भिन्न जनतांत्रिक वैश्विक आन्दोलन के रूप में समय के साथ गुट–निरपेक्ष आन्दोलन का सूत्रपात हुआ, जो कि कालक्रम में तीसरी दुनिया के रूप में नव स्वाधीन देशों की एक सांगठनिक शक्ति के रूप में विकसित हुआ, जिसे दोनों महाशक्तियाँ भी नजर अंदाज नहीं कर सकती थी।[1]

गुटनिरपेक्षता का विकल्प उपलब्ध होने में प्रायः 15 वर्षों का समय लगा। पुनः राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से कमजोर राष्ट्रों का आन्दोलन होने के कारण इसकी आरम्भिक विश्वसनियता स्वाभाविक रूप से कम थी, यही कारण है कि द्वितीय महायुद्धोत्तर विश्व परिदृश्य में 'सामूहिक सुरक्षा' की अवधारणा के अनुरूप सैनिक एवं राजनैतिक गठबंधनों का सिलसिला मिलता है। इस दृष्टि से अमेरिका और पश्चिमी यूरोपीय मित्र देशों का नाटो संगठन, सोवियत संघ और पूर्वी यूरोपीय देशों का वार्सा पैक्ट, अरब देशों का सेंटो, दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों का सीटो, इनके अतिरिक्त अरब लीग जैसे विशुद्ध राजनैतिक संगठन बनाये गये। दूसरे शब्दों में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद राजनैतिक और सैनिक गुटबंदी यूरोप तक सीमित नहीं रही, अपितु विश्वव्यापी हो गई। दूसरी ओर आण्विक शस्त्रों के रूप में सर्वविनाशक हथियारों की उपलब्धता के कारण महाशक्तियों की रूचि सशस्त्र संघर्ष में ना होकर संघर्ष की धमकी तक सीमित रह गई। दूसरे शब्दों में द्वितीय महायुद्ध के बाद महाशक्तियों में उपलब्ध होने वाली 'नाभिकीय प्रतिरोधकता' ने युद्ध का स्वरूप बदल कर 'शान्ति युद्ध' के रूप में अन्तरित कर दिया, जिसका राजनैतिक परिणाम परम्परागत क्षेत्रीय साम्राज्यावाद के स्थान पर विचारधारात्मक विस्तारणवाद अथवा नव साम्राज्यवाद के रूप में सामने आया। दूसरे शब्दों में महाशक्तियां अपनी प्रतिरोधक क्षमता के आधार पर अपेक्षित देशों में राजनैतिक, सैनिक और आर्थिक सुविधायें बिना प्रत्यक्ष नियंत्रण के ही प्राप्त करती, अर्थात

नव उपनिवेशवादी प्रवृत्ति का विस्तार समूचे वैश्विक परिदृश्य में उपस्थित हो गया।

गुटनिरपेक्षता की नीति पिछले पांच दशकों से अधिक समय से चल रही हैं और आज संयुक्त राष्ट्र संघ के दो–तिहाई से अधिक सदस्य इसे व्यवहार में ला रहे हैं, तथापि जहां तक 'गुटनिरपेक्षता' शब्द की सही–सही व्याख्या का प्रश्न है, इसके निहितार्थ को लेकर आज तक राजनीतिक–विश्लेषकों में भ्रातियां बनी हुई हैं। जॉर्ज श्वार्जन बर्गर ने गुटनिरपेक्षता को स्पष्ट करने के लिए इससे संबंधित छह अर्थों की व्याख्या की है और गुटनिरपेक्षता को इन सबसे भिन्न बताया है। ये छः अवधारणाएं हैं– अलगाववाद, अप्रतिबद्धता, तटस्थता, तटस्थीकरण, एकपक्षवाद और असंलग्नता।

अलगवावाद ऐसी नीतियों का समर्थन करता है जिनसे राष्ट्र विश्व–राजनीति में कम से कम भाग ले या उससे बिल्कुल अलग रहे। अप्रतिबद्धता का अभिप्राय है किन्हीं दो शक्तियों से समान संबंध रखते हुए उनमें किसी एक के साथ पूरी तरह से प्रतिबद्ध ना होना। तटस्थता किसी एक देश की वह विधिक या राजनीतिक स्थिति है, जो किसी युद्ध के दौरान युद्धरत राष्ट्रों में किसी के भी साथ युद्ध में संलग्न होने की अनुमति नहीं देती। तटस्थीकरण अर्थात देश हमेशा के लिए तटस्थ है और अपनी तटस्थीकृत स्थिति को कभी भी नहीं छोड़ सकता है, स्विट्जरलैण्ड इसी स्वरूप के राष्ट्र का महत्वपूर्ण उदाहरण है। एकपक्षवाद यह स्वीकार करता है कि प्रत्येक देश को निःशस्त्रीकरण जैसे आदर्शों को पालन करने की नीति अपनाना चाहिये और ऐसा करने में इस बात का ध्यान नहीं देना चाहिये कि अन्य देश भी ऐसा करते हैं या नहीं। असंलग्नता विभिन्न परस्पर विरोधी विचारधाराओं के मध्य हो रहे संघर्ष से उत्पन्न खतरों को समझने पर जोर देती है और यह निर्दिष्ट करती है कि हमें इस संघर्ष से अलग रहना चाहिये।[2]

श्वार्जन का अभिमत है कि गुटनिरपेक्षता उपर्युक्त सभी अवधाराणाओं से भिन्न एवं विशिष्ट है। वस्तुतः यह मैत्री संधियों या गुटों से बाहर रहने की नीति है। गुटनिरपेक्षता का सार तत्व यह है कि अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में नीति एवं कार्यवाही की पर्याप्त स्वतंत्रता बनायी रखी जाये। यहां उल्लेखनीय है कि गुटनिरेपक्षता की वास्तविक संवेदना के बोध के लिए इतना बता देना ही पर्याप्त नहीं है कि गुटनिरपेक्षता क्या है ? यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि गुटनिरपेक्षता क्या नहीं है :

1. गुटनिरपेक्षता अन्तर्राष्ट्रीय मामलों या अन्य देशों के प्रति निषेधात्मक नीति या दृष्टिकोण नहीं है, इसके विपरीत यह सकारात्मक दृष्टिकोण का द्योतक है।
2. गुटनिरपेक्षता अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में तटस्थता या निष्क्रियता की नीति नहीं है, अपितु

जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में– जहां स्वतंत्रता के लिए खतरा पैदा होता है या न्याय पर आंच आने लगती है या कोई देश दूसरे पर आक्रमण कर देता है वहां न हम तटस्थ रह सकते हैं और न ही रहेंगे।

3. गुटनिरपेक्षता अस्वस्थ और निष्क्रिय अन्तर्मुखी प्रवृत्ति नहीं है अपितु इसमें कम्बोडिया के पूर्व नरेश नारोदम सिंहानुक के शब्दों में, ''अन्तर्राष्ट्रीय जीवन का एक गतिशील स्वरूप परिलक्षित होता है।''

4. गुटनिरपेक्षता का अर्थ वैश्विक मामलों से दरकिनार रहना नहीं है और ना ही अपना काम निकालने की नीति की अवसरवादिता ही है, अपितु गुटनिरपेक्ष देश अन्तर्राष्ट्रीय ज्वलन्त प्रश्नों के प्रति उदासीन ना रहकर स्वतंत्र और दृढ़ दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

5. गुटनिरपेक्षता अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में न्यायाधीश जैसी निरपेक्षता की द्योतक नहीं है अर्थात गुटनिरपेक्ष राष्ट्र वैश्विक मामलों में निर्णायक की भूमिका की तलाश में नहीं रहते अपितु वे प्रत्येक प्रश्न अथवा स्थिति के सन्दर्भ में गुण दोषों के आधार पर निष्पक्ष निर्णय देने का प्रयत्न करते हैं।

6. गुटनिरपेक्षता आत्मोत्सर्ग भी नहीं है अथवा गुटनिरपेक्ष राष्ट्र 'निरे–परोपकारी' भी नहीं होते, अपितु गुटनिरपेक्षता भी उतनी ही राष्ट्रहितपरक नीति है, जितनी की गुटबद्धता है।

7. गुटनिरपेक्षता कोरे सिद्धान्तों अथवा कोरी कल्पना पर आधारित नीति नहीं है, वरन् यह नितांत व्यवहारिक नीति है इसका जन्म अन्तर्राष्ट्रीय समाज की यथार्थताओं में हुआ है और वही इसका आधार भी है।

8. गुटनिरपेक्षता सदा–सर्वदा के लिए अथवा कैसी भी परिस्थिति में बंधकर चलने की नीति नहीं है, जैसा कि अल्जीरिया के पूर्व प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि ''हम किसी से बंधे नहीं .... गुटनिरपेक्षता से भी नहीं।''

9. गुटनिरपेक्षता कोई एकान्तिक नीति नहीं है, यह किसी अन्य राष्ट्र अथवा राष्ट्रों के समूह के साथ मैत्री और सहयोग का रास्ता नहीं रोकती है।

10. गुटनिरपेक्षता का लक्ष्य किसी विचारधारा, गुट अथवा राष्ट्र का विरोध करना नहीं, इसका ध्येय सभी राष्ट्रों के साथ शान्ति और मैत्री को बढ़ावा देना है, भले ही उनमें वैचारिक अथवा राजनीतिक मतभेद ही क्यों न हो।[3]

अन्ततः गुटनिरपेक्षता किसी तीसरी शक्ति का द्योतक नहीं है, न उसका ध्येय किसी तीसरे शिविर अथवा राष्ट्रों के गुट की उद्भावना करना है, वस्तुतः ऐसा ध्येय तो गुटनिरपेक्षता

के आधार के ही विरूद्ध है। गुटनिरपेक्षता एक नीति है अथवा मनोवृत्ति और दृष्टिकोण है या वह नीति के किन्हीं निर्दिष्ट साध्यों को प्रोत्साहित करने का साधन है ? डॉ0 एम0 एस0 राजन के अनुसार ''यह तीनों का समन्वित रूप है।''

सामान्यतः गुटनिरपेक्षता की अवधारणा का विकास द्वितीय विश्व युद्धोत्तर कालीन राजनैतिक परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में हुआ, किन्तु समय के साथ वैश्वीकरण की चुनौतियों को समायोजित करने के कारण इसे आज भी प्रासंगिक माना जाता है। आरम्भिक रूप से गुटनिरपेक्षता का अर्थ केवल यू0एस0ए0 के नेतृत्व वाले पूँजीवादी गुट और सोवियत संघ के नेतृत्व वाले कम्युनिस्ट गुट से इस विचार को अलग करने के रूप में किया जाता था। किन्तु समय के साथ इस पर लगाये जाने वाले आरोपों का खण्डन करते हुए इसके संस्थापक सदस्यों के रूप में नेहरू, नासिर और टीटो द्वारा इसे एक संकल्पना का स्वरूप दिया गया। जिसके अनुसार गुटनिरपेक्षता अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी नीतिगत सक्रियता है, जिसमें राष्ट्रहित के अनुरूप सदस्य देश किसी समस्या पर अपना दृष्टिकोण निश्चित करते हैं। यहां उल्लेखनीय है कि गुटनिरपेक्षता सोवियत गुट अथवा अमेरिका गुट से भिन्न किसी तीसरे गुट के रूप में नहीं मानी जाती है। क्योंकि गुटनिरपेक्षता सदस्य देशों के बीच किसी सैनिक संधि अथवा समझौता का परिणाम नहीं थी, अपितु सैन्य संधि और समझौते का विरोध करने वाला आन्दोलनात्मक स्वरूप था। इसलिए इसका कोई निश्चित कार्यालय, संगठन तंत्र अथवा संविधान नहीं है। अपितु ऐसे सामान्य दिशा–निर्देश हैं, जिनका अनुपालन गुटनिरपेक्षता समझा जाता है और इनका मूलाधार 1955 में वांडुग सम्मेलन (इण्डोनेशिया) में स्वीकार किये गये पंचशील के सिद्धान्त है[4] जो अनाक्रमण, अहस्तक्षेप अथवा सम्प्रभुता के सम्मान सहयोग और सदभाव पर आधारित है। इसी प्रकार इस आन्दोलन के सदस्य न केवल साम्राज्यवाद उपनिवेशवाद, नस्लवाद व रंगभेद का विरोध करते हैं अपितु सैनिक संधि तथा अपने क्षेत्र में सैनिक अड्डों की स्थापना को भी अनुचित मानते हैं। दूसरी और स्वाधीनता आन्दोलनों, लोकतांत्रिक संघर्षों और मानवाधिकारों के प्रति सम्मान और समर्थन व्यक्त करता है।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलनों के उक्त दिशा–निर्देशों के नैतिक स्वरूप और इसके सदस्यों की आर्थिक निर्बलता और राजनैतिक अस्थिरता के कारण इस आन्दोलन पर प्रारम्भ से ही तरह–तरह की आपत्तियां की गई। जैसे कि गुटनिरपेक्षता, तटस्थता, तटस्थीकरण अथवा असंलग्नता की नीति है किन्तु नेहरू ने इसका स्पष्टीकरण करते हुए इसे सक्रियता और निरपेक्षता अथवा सक्रिय अलिप्तता के रूप में प्रतिष्ठित किया। क्योंकि तटस्थता, राष्ट्रहित के अनुरूप सामयिक हो सकती है। क्योंकि गुटनिरपेक्षता सामयिक अवधारणा नहीं है। इसी

प्रकार तटस्थीकरण सामयिक न होकर भी निष्क्रियता की बाध्यता है। जबकि गुटनिरपेक्षता सक्रियता की स्वाभाविकता होती है। असंलग्नता किसी भी मामले में अपना अलगाव होता है। लेकिन गुटनिरपेक्षता सभी मामलों में सक्रिय दृष्टिकोण होती है, इस रूप में गुटनिरपेक्षता सक्रियता है तथा दोनों गुटों के परिप्रेक्ष्य में दोनों से समान दूरी अथवा अपनी अलिप्तता बनाये रखना है। अपने इस सूक्ष्म आन्दोलनात्मक संकल्पना के कारण ही गुटनिरपेक्षिता आज सबसे अधिक देशों द्वारा अपनाई जाने वाली विदेश नीति का आधार तत्व है।[5]

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन यद्यपि सोवियत संघ और अमेरिका शक्ति गुटों के सापेक्ष में तृतीय विश्व की आवाज के रूप में पर्याप्त प्रासंगिक माना गया है, किन्तु शीतयुद्ध समाप्त होने और औपचारिक रूप से वार्सा पैक्ट एवं सोवियत गुट के विघटन के बाद अमेरिका के नेतृत्व में बने एक ध्रुवीय विश्व के परिप्रेक्ष्य में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता को प्रश्नगत किया जाने लगा है। वस्तुतः इस प्रकार की आपत्तियां 1989 में होने वाले गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के अधिवेशन में उठाई गई। इस अधिवेशन में जर्मनी के एकीकरण अथवा बर्लिन दीवार के टूटने तथा पूर्वी यूरोपीय देशों के साम्यवाद विरोधी प्रदर्शनों की पृष्ठभूमि में यह स्वीकार किया गया कि गुटीय शक्तियों का समान रूप से विरोध करने वाले इस आन्दोलन की आवश्यकता नहीं रह गई हैं। किन्तु इसी अधिवेशन में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को पुनर्गठित करने और इसके आदर्शों को पुनः संयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। यही कारण है कि इस आन्दोलन की प्राथमिकताओं में राजनैतिक दृश्यों के स्थान पर आर्थिक विषयों को शामिल किया गया तथा विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के साथ आर्थिक नीति के परिप्रेक्ष्य में किये जाने वाले भेदभाव को समाप्त करने का लक्ष्य शामिल किया गया। सामान्य रूप से इस प्रकार के विवादों को ''उत्तर–दक्षिण'' विवाद कहा गया, और इसी के शांतिपूर्ण समाधान की दृष्टि से गुटनिरपेक्ष सदस्यों में से 15 अग्रणी सदस्यों को अग्रगामी दस्ता (G-15) के गठन की आवश्यकता पर बल दिया गया।[6] पुनः 1992 और अन्ततः 1995 अधिवेशन में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के पुनर्गठित स्वरूप को अन्तिम रूप दिया गया। उदाहरण– 1995 के कार्टागेना अधिवेशन में वैश्वीकरण से संबंधित तृतीय विश्व की आर्थिक समस्याओं जैसे असमान प्रतिद्वन्द्विता, पर्यावरण और श्रम जैसे विषयों को विश्व व्यापार संगठन से अलग रखने जैसे मुद्दों के साथ अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी और जनसंख्या जैसे सामान्य विषयों के लिए समेकित और कारगर नीति अपनायें जाने पर बल दिया गया। साथ ही यहीं ''कोलम्बिया घोषणा'' के अनुरूप अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद तथा सीमा पार इसके प्रायोजन जैसे ज्वलंत विषयों को भी आन्दोलन के प्रमुख उद्देश्यों के रूप में शामिल किया गया। इससे स्पष्ट है कि 1989 में हरारे

अधिवेशन से लेकर कोलम्बिया के कार्टागेना अधिवेशन तक आन्दोलन ने अपना स्वरूप राजनैतिक विषयों से बदलकर सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय बना लिया है। पुनः इसके इस स्वरूप में वैश्वीकरण से संबंधित आवश्यकताओं गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की और समस्याओं का भी समायोजन है। यहां उल्लेखनीय है कि प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए भारत का दृष्टिकोण गुटीय तर्क पर ही आधारित है। दूसरे शब्दों में भारत का मत है कि यद्यपि सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के राजनैतिक विघटन के बाद यह अवश्य ही राजनैतिक और सैनिक शक्ति गुट नहीं रहे, किन्तु एक ध्रुवीय विश्व में इस प्रकार के राजनैतिक गुटों का स्थान आर्थिक गुटों ने ले लिया है। ऐसी स्थिति में आर्थिक गुटों के परिप्रेक्ष्य में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन उतना ही प्रासंगिक और प्रभावशाली है जितना कि राजनैतिक गुटों के समय इसकी प्रासंगिकता राजनैतिक थी। इससे स्पष्ट है कि सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विषयों तथा आण्विक शस्त्रों जैसे वैश्वीकरण मुद्दों पर गुटनिरपेक्ष आन्दोलन वैश्वीकरण के बाद भी प्रासंगिक एवं प्रभावशाली है।[7] दिनों दिन इसकी सदस्य संख्या में होने वाली वृद्धि इसका प्रमाण है।

गुटनिरपेक्षता की बढ़ती लोकप्रियता का प्रमाण गुटनिरपेक्ष देशों के विभिन्न शिखर सम्मेलनों से मिलता है, जो इस प्रकार है–[8]

सम्मेलन क्रमांक	**वर्ष**	**स्थान**	**सम्बन्धित विषय वस्तु**
1.	1961	बेलग्रेड	उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, प्रजातिवाद की निन्दा। उपनिवेशों के स्वतन्त्र आन्दोलन का समर्थन।
2.	1964	काहिरा	''शांति और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए योजना'' की घोषणा।
3.	1970	लुसाका	''गुटनिरपेक्षता तथा आर्थिक विकास'' के शीर्षक से छह प्रमुख प्रस्तावों की स्वीकृति।
4.	1973	अल्जीयर्स	निर्गुट देशों के बीच आर्थिक और तकनीकी सहयोग पर बल।
5.	1976	कोलम्बो	एशिया में सम्पन्न इस प्रथम सम्मेलन में सामूहिक आत्मनिर्भरता के विचार पर बल।

6.	1979	हवाना	सदस्यों में पहली बार अन्तर्विरोध के कारण कोई स्पष्ट प्रस्ताव पारित नहीं।
7.	1983	नई दिल्ली	शान्ति और निरस्त्रीकरण के साथ मानवाधिकारों और नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की आवश्यकता पर बल।
8.	1986	हरारे	'अफ्रीकी कोश' की स्थापना तथा नामीबिया की स्वतन्त्रता की रंगभेदी सरकार से सम्बन्धित विषयों पर विशेष समिति का गठन।
9.	1989	बेलग्रेड	अफगानिस्तान तथा पश्चिमी एशिया की समस्या पर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सम्मेलन का आह्वान और पूर्ण निःशस्त्रीकरण की मांग।
10.	1992	जकार्ता	उत्तर–दक्षिण संवाद और सहयोग पर बल। पहली बार एक ध्रुवीय विश्व में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता पर मिस्र द्वारा प्रश्नचिह्न भी लगाया गया।
11.	1995	कार्टागेना	आन्दोलन की वैधता, उपयोगिता एवं प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए आतंकवाद की निन्दा।
12.	1998	डरबन	निःशस्त्रीकरण, आतंकवाद, सुरक्षा परिषद के पुनर्गठन और विस्तार सम्बन्धी विषयों के साथ 'अणुमुक्त विश्व' की मांग।
13.	2003	क्वालालम्पुर	उत्तर–दक्षिण सहयोग के साथ–साथ दक्षिण–दक्षिण सहयोग को सभी क्षेत्रों में संवर्धित करना तथा वैश्वीकरण का लाभ सभी देशों के लिए सुनिश्चित करना।

14.	2006	हवाना	इस सम्मेलन में कुल 118 सदस्य देशों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इस सम्मेलन में हैती और सेंट किट्स को संगठन का नया सदस्य बनाया गया।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन (नाम) के देशों का 15वां शिखर सम्मेलन मिस्र के काहिरा में 15–16 जुलाई को आयोजित किया गया। सम्मेलन नाम देशों के बीच वैश्विक वित्तीय संकट से निपटने की रणनीति पर चर्चा हुई। भारत समेत सभी सदस्य देशों के नेताओं ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में एकजुटता पर जोर दिया। उनके बीच शांति के विस्तार और विकास के मुद्दों पर भी बातचीत हुई। नाम सदस्यों ने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय हालात और व्यवस्था का फिर आकलन करने की जरूरत है। गुटनिरपेक्ष एक ऐसी शब्दावली है जो अब अस्पष्ट हो गई है। उन्होंने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में एक स्थायी सीट की जरूरत बताई। गद्दाफी ने समूह के भीतर शांति और सुरक्षा परिषद के गठन का सुझाव भी दिया। आतंकवाद का सबसे बड़ा खतरा बताते हुए नाम देशों ने कहा कि आतंकवाद परिभाषित होना चाहिये और इसके सभी स्वरूपों से सख्ती से निपटा जाना चाहिये।

नाम के निवर्तमान अध्यक्ष क्यूबा ने दुनिया के सभी देशों से वित्तीय संकट से निपटने के लिए प्रभावी उपाय तलाशने की अपील की। उसने कहा कि नाम को बराबरी और विकास के लिए नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना को बढ़ावा देना चाहिये। मिस्र के राष्ट्रपति होस्नी मुबारक को अगले तीन साल के लिए गुट निरपेक्ष आंदोलन का अध्यक्ष बनाया गया। उन्होंने क्यूबा के राउल कास्त्रो का स्थान लिया। मुबारक ने विश्व शांति और विकास को विस्तार देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय एकजुटता पर जोर दिया। फिलीपींस राष्ट्रपति ग्लोरिया आरोया ने कहा कि विश्व आर्थिक संकट की गिरफ्त में है और नाम के सदस्य देशों के बीच स्थिति से निपटने के लिए वृहद सहयोग की जरूरत है।

शिखर सम्मेलन के मसौदा घोषणा पत्र में चीन के साथ तालमेल का आह्वान किया गया ताकि अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसे वैश्विक वित्तीय संस्थानों में वह नाम की ओर से आवाज उठा सकें। चीन ने इस सम्मेलन में बतौर पर्यवेक्षक भाग लिया।

सम्मेलन की समाप्ति पर नाम देशों ने विश्व शांति और सुरक्षा पर एक घोषणा पत्र जारी किया। सम्मेलन में ईरान को 2012 में होने वाले नाम सम्मेलन का मेजबान भी चुनने पर सहमति जताई गई। इस सम्मेलन में अर्जेंटीना व विश्व शांति परिषद को नाम के पर्यवेक्षक

देशों व संगठनों के समूह में शामिल किया गया। इसके साथ ही नाम के पर्यवेक्षक देशों की संख्या 16 व संगठनों की संख्या 9 हो गयी।

अगले तीन सालों के लिए नाम के अध्यक्ष चुने गये मिस्र के राष्ट्रपति होस्नी मुबारक ने सम्मेलन की समाप्ति के दौरान नाम देशों के अपने संबोधन में गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सिद्धांतों, रूख और उद्देश्यों की रक्षा करने व इन्हें हासिल करने की प्रतिबद्धता जताई। मुबारक ने नाम देशों द्वारा शर्म अल शेख घोषणा पत्र व कार्य योजना, क्यूबा के खिलाफ अमेरिका द्वारा लगाये गये राजनैतिक व आर्थिक प्रतिबंधों पर एक घोषणा पत्र व फिलिस्तीन पर शर्म अल शेख घोषणा पत्र जारी करने और नेल्सन मंडेला अन्तर्राष्ट्रीय दिवस को मान्यता देने की घोषणा की।

नाम घोषणा पत्र में विश्व शांति व सुरक्षा को हासिल करने के लिए लक्ष्य को अभी भी मुश्किल से प्राप्त होने वाला लक्ष्य बताया गया। इसके लिए घोषणा पत्र में कुछ देशों की एकपक्षीय कार्यवाही करने और विनाश के हथियारों, पारंपरिक हथियारों, आतंकवाद, संघर्ष, मानवाधिकारों के हनन और अन्तर्राष्ट्रीय मानवतावादी कानूनों आदि पर किये गये अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों व संधियों के दायित्वों व वायदों के ठीक से निर्वाह न करने की प्रवृत्ति को दोषी ठहराया गया।

घोषणापत्र में निरस्त्रीकरण, अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा, शांति रक्षा और शांति निर्माण, मानवाधिकार व लोकतंत्र स्वःअवधारणा, फिलिस्तीन समस्या, संयुक्त राष्ट्र सुधार, वैश्विक वित्तीय व आर्थिक संकट, खाद्य सुरक्षा, विकास, महामारी, नागरिक समाज, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा समस्या, मानव तस्करी, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद और सभ्यताओं व धर्मों के आपसी संवाद जैसे विषयों व मुद्दों पर नाम की स्थिति व इसके लक्ष्यों को भी रेखांकित किया गया।

सम्मेलन की समाप्ति पर जारी कार्य योजना में अगले कुछ सालों में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रसार करते हुए संयुक्त राष्ट्र संगठन व इसकी एजेंसियों और दूसरे वैश्विक मंचों पर नाम की उपस्थिति बढ़ाते हुए इसके 118 सदस्य देशों के हितों की रक्षा करने व इसके उद्देश्यों को हासिल करने की बात कही गई। इसमें दक्षिण–दक्षिण व उत्तर–दक्षिण देशों के बीच सहयोग बढ़ाने और जी–77 देशों व चीन के बीच सहयोग और समन्वय को प्रोत्साहित करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों में विकासशील देशों की पूछ बढ़ाने के लिए उनकी क्षमता को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

इनके अलावा इसमें उन नाम देशों के लिए जो बाहरी देशों के एकतरफा बल प्रयोग व आक्रमण का सामना कर रहे हैं या कर सकते हैं, सभी विकासशील देशों के हितों की सुरक्षा

करने व वचनों व कार्यों में पूर्ण एकता लाने के दृढ़ निश्चय पर भी बल दिया गया। सामाजिक–आर्थिक मुद्दों पर घोषणापत्र में क्षेत्रीय व वैश्विक स्तर पर सहयोग बढ़ाने के विशेष कदम उठाने की बात कही गई। ऐसे कदमों में क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर आंतरिक मजबूती व सहयोग को बढ़ावा देना, सामाजिक आदान–प्रदान और सभ्यताओं व धारणाओं पर सांस्कृतिक संवाद को फैलाना शामिल हैं।

घोषणापत्र में मानवजाति के विश्वव्यापी गुणों या भावों के तौर पर मानवाधिकारों को समर्थन देने की बात को दोहराया गया और कहा गया कि सभी देशों के लिए लोकतंत्र का एक ही मॉडल लागू नहीं हो सकता। किसी देश के अंदरूनी मामलों में दखलअंदाजी करने के लिए लोकतंत्र व मानवाधिकारों के मुद्दों को एक राजनैतिक हथियार के तौर पर प्रयोग करने का भी इसमें विरोध किया गया।

भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 15 जुलाई को गुट निरपेक्ष देशों को संबोधित करते हुए आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता से सख्त कदम उठाने की अपील की। मनमोहन सिंह ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ स्पष्ट रूप से सख्त रुख नहीं अपनाया गया तो विकासशील देशों के समूह की प्रासंगिकता का ह्रास होना शुरू हो जायेगा। उन्होंने पाकिस्तान सहित अन्य देशों को यह स्पष्ट संकेत दिया कि आतंकवाद के सफाये को लेकर भारत काफी गंभीर है और इस मुद्दे पर अभी तक इस्लामाबाद के रुख में अस्पष्टता ही सामने आई है। उनके भाषण में पाक के लिए संदेश और साफ तब हो गया जबकि उन्होंने कहा कि आतंकवादियों और उन्हें शह देने वालों को सजा मिलनी चाहिये। आतंकवाद के ढांचे को ढहाया ही जाना चाहिये बल्कि आतंकियों के लिए सुरक्षित ठिकाने भी नहीं बनने देना चाहिये।

आतंकवाद के अलावा प्रधानमंत्री ने आर्थिक मंदी का मसला भी उठाया। उन्होंने कहा कि भविष्य में आर्थिक ठहराव का खतरा भी हो सकता है। इसके लिए सुधारवादी कदम उठाने की दरकार है। उन्होंने विकसित देशों को संरक्षणवादी नीतियां नहीं अपनाने को कहा। उन्होंने कहा कि इससे विकासशील देशों के निर्यात पर असर पड़ा है और पूंजी प्रवाह थम गया है। अगर मंदी जारी रही तो ज्यादा लोग गरीबी की जद में आते जायेंगे।

मनमोहन सिंह ने भारत के पक्ष को विकासशील देशों के समक्ष बड़े ही तार्किक तरीके से रखा। उन्होंने कहा कि मौजूदा संकट से उबरने के लिए ऐसी नई अन्तर्राष्ट्रीय वित्त व्यवस्था की जरूरत है जिसमें सभी देशों की भागीदारी हो। उन्होंने यह भी कहा कि मंदी के मौके पर विकसित देश अपनी जिम्मेवारी से भाग नहीं सकते। मनमोहन सिंह ने बढ़ते पर्यावरणीय खतरे पर चिंता जताते हुए कहा कि 200 साल में विकसित देशों ने जिस तरह से

औद्योगिक गतिविधियां चलाई हैं, उसकी ऐतिहासिक जिम्मेदारी उन्हें स्वीकारनी होगी। नाम शिखर सम्मेलन के पहले दिन मनमोहन सिंह ने कई राष्ट्राध्यक्षों से बातचीत की। फिलीस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास से मुलाकात के दौरान उन्होंने पश्चिम एशिया क्षेत्र में शांति और बेहतर व्यापारिक रिश्तों पर बातचीत की। मलेशिया के प्रधानमंत्री नजीब तुन रजाक से मुलाकात के दौरान उन्होंने आतंकवाद रोकने को साझा कदम उठाने व आपसी सौहार्द पर वार्ता की। मनमोहन सिंह ने वियतनाम के राष्ट्रपति ग्वेन मिन्ह ट्राइट से मुलाकात की और उनसे पूर्व केंद्रित नीति को मजबूती देने की तथा शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के मुद्दे पर बातचीत की। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना से मुलाकात के दौरान दोनों देशों ने रिश्तों को और मजबूत बनाने, रेल सहयोग, जल विवाद और आतंकवाद को प्रश्रय जैसे मसलों पर बात की।

नाम सम्मलेन के दौरान 16 जुलाई को भारत व पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने द्विपक्षीय वार्ता भी की। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की पाकिस्तानी प्रधानमंत्री यूसुफ रजा गिलानी से होने वाली मुलाकात के पूर्व दोनों देशों के विदेश सचिवों ने 14 जुलाई को मुम्बई हमले के जिम्मेदार लोगों को न्याय के कटघरे में लाने की दिशा में हुई प्रगति की समीक्षा की। विदेश सचिव शिवशंकर मेनन और पाकिस्तानी विदेश सचिव सलमान बशीर के बीच हुई यह वार्ता आतंकवाद पर केंद्रित रही। साथ ही इस बात पर भी चर्चा हुई कि इस्लामाबाद ने भारत के खिलाफ आतंकवाद को रोकने की दिशा में क्या कदम उठाये हैं।

इसके बाद दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों की बैठक में भी आतंकवाद का मुद्दा छाया रहा। इससे पहले मनमोहन सिंह 16 जून को रूस के येकातेरिनबर्ग में पाकिस्तानी राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी से मिले थे। उस बैठक के दौरान मनमोहन ने जरदारी को मीडिया के सामने कड़े शब्दों में कहा था कि उनके लिए पाकिस्तान को यह बताना जरूरी है कि उसे अपनी धरती से भारत के खिलाफ चल रहीं आतंकी गतिविधियों के खिलाफ कार्रवाई करनी होगी। नाम सम्मेलन के दौरान हुई बैठक से पहले ही मनमोहन सिंह ने यह स्पष्ट कर दिया था कि पाकिस्तान के साथ सभी लंबित मुद्दे सुलझाने के लिए भारत जो भी जरूरी है, वह सब करेगा लेकिन पहले पाकिस्तान भारत को निशाना बनाने वाले आतंकी तत्वों से निपटने के लिए 'विश्वसनीय कार्रवाई' करें।

वार्ता के दौरान दोनों प्रधानमंत्रियों ने भारत–पाकिस्तान संबंधों को आगे बढ़ाने के मद्देनजर द्विपक्षीय संबंधों के हर पहलू पर चर्चा की। बातचीत के बाद जारी संयुक्त वक्तव्य में कहा गया कि दोनों पक्ष आपसी विश्वास और भरोसे का माहौल निर्मित करने में सहमत हुए।

दोनों पक्षों ने यह प्रण किया कि उन सभी कारकों को दूर किया जायेगा जो दोनों पड़ोसी देशों को आपसी संबंधों की व्यापक संभावनाओं को पूरी तरह साकार करने से रोकते हैं।

दोनों नेता इस बात पर सहमत हुए कि आतंकवाद दोनों देशों के लिए प्रमुख खतरा है। दोनों नेताओं ने आतंकवाद से लड़ने और इस मामले में एक दूसरे का सहयोग करने में अपने इरादे को दोहराया। मनमोहन सिंह ने मुम्बई आतंकी हमलों के दोषियों को कानून के दायरे में लाने की आवश्यकता पर जोर दिया। पाक प्रधानमंत्री ने आश्वासन दिया कि पाकिस्तान इस संबंध में अपने अधिकार क्षेत्र में हर संभव कार्य करेगा। दोनों नेता इस बात पर सहमत हुए कि दोनों देश भविष्य में ऐसी किसी आतंकी धमकी के बारे में सही समय पर विश्वसनीय और कार्रवाई योग्य सूचना का आदान–प्रदान करेंगे। पाक प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि बलूचिस्तान और अन्य क्षेत्रों में इस तरह के खतरे के बारे में पाकिस्तान के पास कुछ सूचना है।

दोनों प्रधानमंत्रियों ने यह माना कि आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता संवाद ही है। आतंकवाद पर कार्रवाई को समग्र वार्ता प्रक्रिया से नहीं जोड़ा जाना चाहिये और इनको एक ही दायरे में नहीं रखना चाहिये। मनमोहन सिंह ने कहा पाकिस्तान के साथ भारत बाकी बचे मसलों सहित सभी मसलों पर चर्चा के लिए तैयार है। दोनों नेता इस बात पर सहमत हुए कि विकास और गरीबी का उन्मूलन ही वास्तविक चुनौती है। दोनों नेताओं ने अपनी पूर्ण क्षमता का दोहन करने से रोकने वाले सभी कारकों को दूर करने का इरादा किया। दोनों नेता आपसी विश्वास और भरोसे का माहौल बनाने के लिए कार्य करने पर सहमत हुए। दोनों नेताओं ने क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के इरादे को भी दोहराया।

दोनों नेता इस बात पर भी सहमत हुए कि दोनों देशों के विदेश सचिवों को जब जरूरत हो प्रायः मुलाकात करनी चाहिये और दोनों विदेश मंत्रियों को रिपोर्ट करनी चाहिये जो संयुक्त राष्ट्र महासभा की अगली बैठक के अवसर पर मुलाकात करेंगे।

एक तरफ गुट निरपेक्ष आंदोलन के नेताओं ने जहां सम्मेलन के दौरान वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की, वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की पत्नी गुरशरण कौर सहित इन नेताओं की पत्नियों ने भी एक समानांतर बैठक की। इस बैठक में मानव तस्करी और महिलाओं की अन्य समस्याओं पर विचार–विमर्श किया गया, जो नाम आन्दोलन में नव परिवर्तन की ओर इशारा करते हैं।

सन्दर्भ

1. अली मजरूई, ''फरवर्ड'', पीटर विलेट्टरस, द नॉन अलाईड मूवमेण्ट लन्दन, 1978; पृ0 13
2. रक्षार्थ वाल्यूम 3 नं0 3–4, 2001; पृ0 42
3. डॉ0 बी0एल0 फाडिया अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, 2009; पृ0 313
4. वी0एन0 खन्ना, लिपाक्षी अरोड़ा– भारत की विदेश नीति; पृ0 377
5. एम0एस0 राजन, ''इंडिया एण्ड द नाम'', वर्ल्ड फोक्स, वाल्यूम 17, अंक 10–11–12, अक्टूबर–नवम्बर–दिसम्बर 1996; पृ0 57
6. हिन्दुस्तान टाइम्स, 2 सितम्बर 1992
7. ''नान अलाईण्ड मूवमेन्ट : रिट्रोस्पेक्ट एण्ड प्रोस्पैक्ट'' (लेख श्रृंखला), वर्ल्ड फोक्स, वाल्यूम 18, अंक 7, जुलाई 1997
8. रमेश ठाकुर, द पॉलिटिक्स एण्ड इकोनॉमिक्स ऑफ इंडियाज फॉरेन पॉलिसी, नई दिल्ली, 1994; पृ0 15, तथा ''नोनअलाईंड मूवमेंट'' वर्ल्ड फोकस, 24(3), मार्च, 2003; पृ0 18
9. डॉ0 रविकान्त दुबे : भारतीय विदेश नीति के नये आयाम, 2009; पृ0 35
10. अरिहन्त समसामयिकी महासागर, सितम्बर 2009; पृ0 55

''विजय का अर्थ शत्रु सेना का पूर्ण विनाश नहीं वरन्, उसके मनोबल को तोड़कर आत्मसमर्पण के लिए विवश करने से है। शत्रु आत्मसमर्पण के लिए विवश तभी होगा जब वह कठिन परिस्थिति में फंस जाए और हम उसकी तुलना में अपने लिए अनुकूल परिस्थिति का निर्माण करने में सफल हो जाएँ।''

–लिडिलहार्ट

ग्रामीण विकास के द्वारा नक्सलवाद का समाधान

–डॉ0 पुष्कर पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग,
डी0 ए–वी0 कॉलेज, कानपुर

भारत में साम्यवादी आन्दोलन की ग्रामीण परिवेश की शाखा जिसका प्रेरणास्रोत चीन एवं माओत्सेतुंग रहा है– नक्सलवाद कहा जाता है। नक्सलवाद का प्रारम्भ उत्तरी पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के सिलीगुड़ी सब डिवीजन के नक्सलवाडी, खारीवाड़ी, फान्सीदेवा में 1967 से हुआ। नक्सलवाड़ी में सर्वप्रथम यह घटना होने के कारण पूरा आन्दोलन नक्सलवादी आन्दोलन कहा जाता है। आन्दोलन का उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष के द्वारा राज्य सत्ता पर अधिकार करना है।

1967 में नक्सलवाड़ी, फान्सीदेवा, खारीवाड़ी के 265 वर्गमील क्षेत्र में 26,723 आदिवासी निवास करते थे। उन्होंने किसान समितियों का गठन किया। वस्तुतः ये किसान समितियाँ पूर्व सोवियत संघ के सोवियतो के समान थी। इन्हीं किसान समितियों के माध्यम से नक्सलवादी हिंसक गतिविधियों जैसे जमीनों पर कब्जा, लूट, देशी हथियारों जैसे तीर धनुष से धनी व बड़े किसानों से मोर्चे लेना – का संचालन करते थे। वस्तुतः इन किसान समितियों के इन षड्यन्त्रों में सम्मलित होने की पुष्टि आधिकारिक सूचनायें 1966 से ही थी।

परन्तु यदि संगठन को देखें तो किसान सभायें गरीब, बटायीदार खेती करने वाले आदिवासी किसानों का संगठन थी। विकास की रोशनी से वंचित किसान जिन्हें उनके सामाजिक– आर्थिक– राजनीतिक विकास के अभाव में सरलता से भ्रमित किया जा सकता था और भ्रमित किया भी गया।

वस्तुतः उस समय के सभी नक्सलवादी नेताओं जैसे चारू मजूमदार, कानू सान्याल, जंगल संथाल ने दुष्प्रचार (Propoganda) को नक्सलवाद के प्रसार में आवश्यक माना। आज भी नक्सली नेता Propoganda को इसी रूप में देखते है। अभी हाल में CPI (Maoist) के जनरल सेक्रेटरी मुलप्पा गणपति राव (गणपति) ने सफेद झूठ बोलते हुए कहा– जब हमने संघर्ष प्रारम्भ किया तो यह एक शान्तिपूर्ण आन्दोलन था एवं लोगों के मुद्दों – भूमि, जीविका, साम्राज्यवादी एवं सामन्तवादी शोषण एवं दबाव से मुक्ति के लिए था। .. जब शान्तिपूर्ण प्रदर्शन, रैलियाँ, धरना, भूख हड़ताल, आम हड़ताल, निष्प्रभावी रहे या लोग कुचल दिये गये तब लोग हिंसक उपायों को अपनाने को विवश हुए।

परन्तु सत्य तो यह है कि नक्सलवादी आन्दोलन 1967 से ही हिंसक रहा है। नक्सलवादी मांगों को सुनने एवं उन पर कार्य करने का प्रयास प्रारम्भ से ही हुआ। 1967 में प0 बंगाल की अजय मुखर्जी सरकार में भू राजस्व मंत्री कोनार एवं नक्सली नेता कानू सान्याल के

मध्य सुखना समझौता हुआ था। समझौते में सरकार के द्वारा कानून बनाकर, किसान समितियों के माध्यम से भूमि पुनर्वितरण की व्यवस्था थी। इसे समय आने पर नक्सलियों ने नकार दिया और हिंसक गतिविधियाँ जारी रखी। वास्तव में 2004 में MCC एवं PWG के विलय से CPI (Maoist) बनने से पूर्व एवं उसके पश्चात राज्यों के स्तर पर एवं केन्द्र के स्तर पर वार्ता के सरकारी प्रयास होते रहे है। परन्तु हिंसा का मार्ग त्यागकर लोकतांत्रिक मार्ग का अंगीकरण नक्सलियों ने स्वीकार नहीं किया। हाँ लोगो की गरीबी, पिछड़ेपन के कारण दुष्प्रचार (Propaganda) का सहारा लेकर हथियार अवश्य थमा दिये।

जयप्रकाश नारायण ने जो कुछ नक्सलवाद के बारे में कहा था वह आज भी प्रासंगिकता रखता है– इस हिंसा के एक भाग ने बिना किसी सन्देह के राजनीतिक विचारधारा के द्वारा कृत्रिम रुप से पोषण प्राप्त किया है। परन्तु नक्सलवाद को न जड़ मिलता न ही जमीन। यदि गरीबी, बेरोजगारी, तथा सामाजिक आर्थिक अन्याय न होता। सुधारवादी कानूनों के क्रियान्वयन की असफलता ने इस तरह की ग्रामीण हिंसा को जन्म दिया। यह तथाकथित नक्सलवादी नहीं हैं, जो इस हिंसा के जन्मदाता है, परन्तु वे लोग है जिन्होंने पिछले कई वर्षो से इन कानूनों को नकारा एवं हराया है –वे चाहे राजनीतिज्ञ हो, प्रशासक जमीदार या सूदखोर हों।

बड़े जमीदार जिन्होंने सीलिंग कानून को बेनामी एवं झूठे सेटलमेन्ट से धोखा दिया, तथाकथित सभ्य लोग जिन्होंने सरकारी एवं गांवों की सामूहिंक जमीन हथिया ली, जमीन मालिक जिन्होंने लगातार अपने बटायीदारों के वैध अधिकारों को नकारा तथा उन्हें बेदखल किया, जिन्होंने अपने मजदूरों से बेगार करवाया तथा उन्हें उनके घरों से बेदखल किया, वे व्यक्ति जिन्होंने कमजोर वर्ग से बल से या छल से उनकी जमीनें छीन ली, तथाकथित उच्च जातियों के वे लोग जिन्होंने हरिजनों से दुर्व्यहार, सामाजिक भेदभाव किया, सूदखोर जिन्होंने गलत ब्याज लगाकर गरीबों, कमजोरों की जमीन हड़प ली, राजनीतिज्ञ एवं प्रशासक जिन्होंने इस पर आँख बन्द कर ली या इन सबकी सहायता की – यह सब उन अन्यायों एवं शिकायतों के रुप में इकट्ठा हुआ जिससे आज हिंसा का प्रकटीकरण हुआ है। इसके लिए न्यायालय, न्याय की प्रक्रिया एवं न्यायिक व्यय भी जिम्मेदार है जिससे निष्पक्ष न्याय गरीबों को दुरुह हो गया।

इसके लिए शिक्षा की व्यवस्था एवं नियोजन की प्रकृति भी जिम्मेदार है, जिसनें लगातार बढ़ती बेरोजगार– हताश युवाओं की फौज तैयार की, आर्थिक असमानता बढ़ायी, धन को वर्ग विशेष के हाथों में संचित होने दिया। इसके लिए राजनीतिज्ञों की स्वार्थी इच्छा भी जिम्मेदार है जिसने लोकतन्त्र का पतन किया।

कहने का प्रयोजन यही है कि सही अर्थो में ग्रामीण विकास नही हो पाया और इन सब स्थितियों के कारण देश के दुश्मनों को हमारे लोकतंत्र के बारे में दुष्प्रचार का अवसर मिल जाता है। नक्सलीवादी आन्दोलन के पीछे प्रारम्भ में चीनी सहयोग सर्वविदित रहा है। नक्सलवादी भी कश्मीर, तमिल, उत्तर–पूर्व के हिंसक आन्दोलनकारियों के प्रति समर्थन रखते है। अन्य आतंकवादी संगठनों के साथ सम्बन्धों से भी नकारा नही जा सकता।

आज उ0 प्र0, झारखण्ड, बिहार, प0 बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगंढ़, म0 प्र0, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश में नक्सलियों की सशक्त उपस्थिति है। उ0 प्र0 के सोनभद्र, मिर्जापुर। बिहार के पटना, गया, औरंगाबाद, जहानाबाद, रोहतास, बक्सर, सहरसा, खगीड़या, बॉका, जमुई। झारंखण्ड के– पलामू, गढ़वा, लातेहार, गुमला, चतरा, हजारीबाग, कोडरमा। पं0 बंगाल के मिदनापुर, पुरुलिया, बाकुरा। उड़ीसा के मलकानगिरी, कोरापुट, गाजापती, रायगाड़ा, नवरंगपुर, मयूरभंज। छत्तीसगढ़ के जगडालपुर, बस्तर, कान्केर, राजनन्दगॉव, दॉतेवाड़ा, सरगुजा, कवरधा, जसपुर। म0 प्र0 के बालाघाट, ढिन्डोली, मन्डला। महाराष्ट्र के गढ़चिरोली, भण्डारा, चन्द्रपुर। आन्ध्रप्रदेश के उत्तरी एवं दक्षिणी तेलंगाना, रायलसीमा, उत्तरी एवं दक्षिणी तटीय जिलों के ग्रामीण क्षेत्र नक्सली प्रभाव में है। कुल 12,476 पोलिस स्टेशनों में से 395 जो 11 राज्यों में फैले है – पूर्णतया, नक्सली प्रभाव में इन्हें गृहमंत्रालय भी मानता है।

नक्सली प्रभाव वाले क्षेत्र स्पष्टतः सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक विकास के अभाव से ग्रस्त है। अतः समाधान भी विकास में है। राजनीतिक विकास हो– राजनीतिक व्यवस्था की प्रभावशीलता बढ़े, लोगो की मांगों एवं दबावों का सामना कर सके। प्रशासनिक विकास हो– प्रशासन की पहुंच एवं नियन्त्रण प्रत्येक स्थान तक हो। सामाजिक समानता स्थापित की जाये– जाति व्यवस्था के बंधन समाप्त किये जाये– आर्थिक विकास (मात्रात्मक एवं गुणात्मक) हो। आर्थिक नीतियाँ ऐसी न हों जो SEZ की तरह जनता पर उसकी इच्छा के विरुद्ध थोपी जाए– जैसे सिंगूर में हुआ। टाटा, एस्सार, जिन्दल ग्रुप के ढेरों प्रोजेक्टों को नक्सलियों ने अपने लक्षित लक्ष्यों की सूची में रखा है। यह जनता के इन प्रोजेक्टों के प्रति आक्रोश को दिखाता है। अतः जन संवेदना को ध्यान में रखकर आर्थिक विकास की नीतियॉ अपनायी जाये तभी नक्सलवाद जैसी विकराल समस्या का समाधान होगा। समस्या को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री डा0 मनमोहन सिंह ने अप्रैल 2006 में कहा– नक्सलवाद की समस्या, देश के सामने अब तक आयी सबसे बड़ी आन्तरिक सुरक्षा की समस्या है। उन्होंने इसके कारणों की ओर भी इशारा किया है– शोषण, कम मजदूरी, असमानतापूर्ण सामाजिक आर्थिक परिस्थितियाँ, अपर्याप्त रोजगार के अवसर संसाधनों तक पहुंच का अभाव, अविकसित कृषि, भौगोलिक विलगाव, भू–सुधार का अभाव, – सभी ने नक्सलवाद के विकास में पर्याप्त योगदान दिया है। चूँकि नक्सलवाद मुख्यतः ग्रामीण जीवन से जुड़ी गतिविधि है। अतः ग्रामीण विकास की व्यापक, समग्र, समावेशी– नीति, योजना एवं उनके प्रभावी क्रियान्वयन में समाधान निहित है।

सन्दर्भ

1. **The Naxalite Movement In India** – Prakash Singh, Rupa & Co., New Delhi.
2. **Naxalite Politics In India** – Johari, J. C.
   The Institute of Constitutional and Parliamentary Studies, New Delhi-1972
3. **Red Sun : Travels In Naxalite Country** – Chakravarti Sudeep, Penguin 2008
4. **India Today**, February 11, 2008
5. **India Today**, November 9, 2009

रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर
में सम्पन्न
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित
दो दिवसीय
(दिनांक 05 एवं 06 मार्च 2011)
राष्ट्रीय संगोष्ठी
विषय : ''भारत की आन्तरिक सुरक्षा : चुनौतियाँ एवं विकल्प''
(India's Internal Security : Challenges and Options)

आयोजन सचिव : डॉ. श्री भगवान सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर

राष्ट्रीय संगोष्ठी के अविस्मरणीय पल

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए एयर वाइस मार्शल एम. मातेश्वरन्, संसद सदस्य योगी आदित्यनाथ, डॉ. श्री भगवान सिंह तथा अन्य मंचासीन विद्वतजन

राष्ट्रीय संगोष्ठी के तकनीकी सत्रों पर विचार–विमर्श करते हुए डॉ. श्री भगवान सिंह एवं मंचासीन विद्वतजन

विषय / विमर्श बिन्दु :

राष्ट्रीय संगोष्ठी का विमर्श विषय **'भारत की आन्तरिक सुरक्षा : चुनौतियाँ एवं विकल्प' (India's Internal Security : Challenges and Options)** था। सर्वविदित है कि देश इस समय आन्तरिक सुरक्षा की अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रहा है। देश के 22 प्रान्तों के 200 से अधिक जिले नक्सलवाद से प्रभावित हैं। इसी प्रकार लगभग 183 आतंकवादी गुटों द्वारा 231 से भी अधिक जिलों में आतंकवादी अभियान संचलित हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त देश विभिन्न प्रकार के अपरम्परागत खतरों यथा साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नृजातीय संकट आदि का भी सामना कर रहा है। ऐसे में उच्च शिक्षा संस्थानों एवं सम्बन्धित विषयों के लिए ऐसे राष्ट्रीय महत्त्व के विषय पर विचार–विमर्श करना जरूरी है।

संगोष्ठी में विमर्श के लिए निम्नलिखित बिन्दु निर्धारित किये गये – 1. नक्सल समस्या, 2. आतंकवाद, 3. अवैध घुसपैठ, 4. जाली करेंसी का प्रवाह, 5. साम्प्रदायिक, नृजातीय टकराव, क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार एवं प्रेरणादायी नेतृत्व का अभाव, 6. शिक्षा की भूमिका, सरकारी नीतियाँ, सामाजिक जागरूकता और राष्ट्रवादी भावनाओं का प्रसार, 7. आन्तरिक सुरक्षा में मीडिया की भूमिका।

प्रतिभागिता :

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न प्रान्तों एवं अंचलों से आये 122 विषय विशेषज्ञों / शोध अध्येताओं / सुरक्षा विशेषज्ञों ने प्रतिभागिता की। इसके अतिरिक्त बड़ी संख्या में नागरिकों, बुद्धिजीवियों ने तकनीकी सत्रों तथा विशिष्ट व्याख्यानों में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

आयोजन की रूपरेखा :

राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम दिन उद्घाटन सत्र के पश्चात् दो तकनीकी सत्र आयोजित हुए, जिसमें बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने अपने शोध–पत्र पढ़े। इसी प्रकार दूसरे दिन समापन सत्र से पूर्व भी तीन तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने शोधपत्रों का वाचन एवं तत्सम्बन्धी विचार–विमर्श किया।

विशिष्ट उपस्थिति एवं व्याख्यान :

राष्ट्रीय संगोष्ठी में अनेक विशिष्टजनों की उपस्थिति एवं महत्त्वपूर्ण व्याख्यानों के चलते आयोजन अत्यन्त सफल एवं उद्देश्यपूर्ण सिद्ध हुआ। **उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता संसद सदस्य एवं संसद की आन्तरिक सुरक्षा विषयक समिति के सदस्य 'योगी आदित्यनाथ'** ने की, जबकि **मुख्य वक्ता के रूप में वायुसेना के एयर वाइस मार्शल एम. मातेश्वरन्** उपस्थित रहे। **विशिष्ट अतिथि के रूप में वेक्टर फोर्स के पूर्व जनरल आफिसर कमांडिग ब्रिगेडियर ए. के. आर. त्रिपाठी** ने भी प्रतिभागिता की। इसके अतिरिक्त **दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. राजेन्द्र प्रसाद** तथा **रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. आर. एन. सिंह** भी उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र में विशिष्ट अतिथियों ने महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिये।

समापन सत्र की अध्यक्षता भारत सरकार के पूर्व गृहराज्यमन्त्री स्वामी चिन्मयानन्द जी सरस्वती ने की जबकि मुख्य वक्ता के रूप में ख्यातिलब्ध रक्षा विशेषज्ञ एवं पुणे विश्वविद्यालय के रक्षा अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. गौतम सेन एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में गोरखा रिक्रूटिंग डिपो गोरखपुर के डिप्टी कमाण्डेण्ट ब्रिगेडियर कुँवर वीरेन्द्र सिंह ने प्रतिभागिता की। समापन सत्र के दोनों व्याख्यान भी विमर्श के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुए।

प्रकाशन :

संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर 39 विस्तृत शोध आलेखों वाला 304 पृष्ठों की पुस्तक **'आन्तरिक सुरक्षा : चुनौतियाँ और विकल्प' (India's Internal Security : Challenges & Options)** का लोकार्पण भी किया गया। इन शोधपत्रों में संगोष्ठी के विमर्श बिन्दुओं पर विशद् चर्चा एवं विश्लेषणात्मक प्रस्तुतियाँ की गयी हैं।

संगोष्ठी के निष्कर्ष एवं सुझाव :

संगोष्ठी में उपस्थित विशिष्ट जनों एवं प्रतिभागियों के शोध पत्रों में आन्तरिक सुरक्षा की स्थिति की विश्लेषणात्मक प्रस्तुति के अतिरिक्त अनेक महत्त्वपूर्ण सुझाव भी दिये गये। इन सभी का सम्यक् विश्लेषण और संकलन तैयार किया जा रहा है जिसे गृह एवं रक्षा मन्त्रालय को भी प्रेषित किया जायेगा, तथापि प्रमुख निष्कर्षों / सुझावों को निम्नवत् सूचीबद्ध किया जा सकता है –

1. देश की सुरक्षा का विश्लेषण संकीर्ण नजरिये से करने की बजाय व्यापक दृष्टिकोण से करने की जरूरत है।
2. सुरक्षा का तानाबाना इतना जटिल और संवेदनशील हो गया है कि उसे केवल सेनाओं के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता।
3. आन्तरिक सुरक्षा मजबूत करने के लिए मौजूदा पुलिस एक्ट में संशोधन करना जरूरी है।
4. पुलिस का राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद निरोधक कार्यवाही नेटवर्क और प्रशिक्षित कार्यबल तैयार करना जरूरी है।
5. भोजन, जल, ऊर्जा और सुरक्षा जैसी समस्याओं को सही ढंग से निपटाते हुए यदि संसाधनों का सही प्रयोग हो तो पुलिस और सैन्य बल के प्रभार कम किये जा सकते हैं।
6. देश की नीतियाँ पारदर्शी हों और उन्हें इस दृष्टिकोण से नियोजित एवं निर्देशित किया जाय, जिससे गरीबों और अमीरों के बीच की खाई को कम किया जा सके, ताकि नक्सलवाद की बुनियादी ताकत कमजोर हो सके।
7. राज्य एवं केन्द्र की खुफिया इकाइयों में समन्वय और बढ़ाया जाए।
8. चीन पूर्वोत्तर में प्रभाव बढ़ा रहा है इसका समुचित प्रतिकार होना चाहिए।
9. सुरक्षा में भी पीपीपी मॉडल (Public Private Partnership Model) लागू होना चाहिए।
10. सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारियों, शिक्षकों, पुलिसकर्मियों का स्थानीय स्तर पर नेटवर्क बने।
11. आर्थिक सुधार के उपायों को वास्तविक रूप से लाभकारी और पारदर्शी बनाना होगा।
12. भ्रष्टाचार के खिलाफ निर्णायक प्रहार जरूरी है क्योंकि यह सीधे राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा हुआ है।
13. देश में राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन और सैन्य शिक्षण को अनिवार्य बनाना एक उचित कदम होगा।
14. पुलिस को बेहतर संसाधन उपलब्ध कराना जरूरी है।
15. दलगत मतभेद से परे सभी राजनीतिक दलों को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक दीर्घकालिक रणनीति पर सहमति बनानी होगी।

–संपादक

सिद्धांत

DOCTRINE

त्रैमासिक शोध जर्नल

सदस्यता फार्म

नाम ....

पिता / पति का नाम ....

शैक्षिक योग्यता एवं पद ....

जन्मतिथि ....

पता : विद्यालय / यूनिवर्सिटी / संस्थान ....

....

आवास ....

....

फोन नं0 / मोबाइल नं0 ....

ई—मेल ....

सहयोग राशि (नकद / मनीआर्डर / ड्राफ्ट / चेक) ....

तिथि .... हस्ताक्षर ....

(सदस्यता फार्म की छाया प्रति स्वीकार्य है)